Semester 3rd

Paper – VIII

METHODS OF TEACHING IN ELEMENTARY SCHOOL

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

Unit 1: Methods of teaching (शिक्षण के तरीके)

Unit :– 1.1 Teaching learning environment – the transaction of content from teacher to the learner –

The role of teacher (शिक्षण सीखने का माहौल – शिक्षक से शिक्षार्थी तक सामग्री का लेन–देन –शिक्षक की भूमिका) –

INTRODUCTION (परिचय) :– आपने शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के विभिन्न दृष्टिकोणों के बारे में सीखा है जो सीखने के विभिन्न सिद्धांतों से उभरे हैं। आपने मनोवैज्ञानिक, सामाजिक–सांस्कृतिक और विद्यालय संबंधी कारकों के बारे में भी सीखा है जो शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं।

यह समझने के बाद कि सीखना कैसे होता है, आप यह जानने के लिए उत्सुक हो सकते हैं कि छात्र सीखने में अधिकतम परिणाम कैसे प्राप्त करें। इस उद्देश्य को प्राप्त करने का एक तरीका कक्षा में सीखने का अच्छा माहौल बनाना है। आप जानते हैं कि सीखना केवल कक्षा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह अनौपचारिक परिवेश में भी होता है, जैसे स्कूल, समुदाय और साथियों के बीच। इस इकाई में, हम सीखने के माहौल की अवधारणा और इसके विभिन्न घटकों के बारे में भी चर्चा करते हैं। एक शिक्षक के रूप में, उन तरीकों को समझना आवश्यक है जिनके द्वारा आप अपनी कक्षा में एक अनुकूल अधिगम वातावरण बना सकते हैं।

MEANING OF LEARNING ENVIRONMENT(सीखने के माहौल का अर्थ) :– हम सभी जानते हैं कि सीखना एक सतत प्रक्रिया है, जो अक्सर स्कूल से जुड़ी होती है। लेकिन यह व्यक्तियों और पर्यावरण के बीच की बातचीत का भी परिणाम है जिसमें वे काम करते हैं। इसलिए, यह एक गतिशील प्रक्रिया है, जो पूरे जीवन में होती है, जिस वातावरण में सीखना होता है उसे प्राकृतिक परिस्थितियों, परिस्थितियों और प्रभावों और सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भों के संयोजन के रूप में वर्णित किया जा सकता है जिसमें एक व्यक्ति स्थित होता है। इसलिए, आप कह सकते हैं कि सीखने का वातावरण परिवेश का कुल योग है जिसमें व्यक्ति अनुभवों को समृद्ध करने के लिए बातचीत करते हैं और इस प्रकार सीखने की ओर अग्रसर होते हैं।

हम विभिन्न अधिगम सिद्धांतों के दृष्टिकोण से और अधिगम के विभिन्न परिवेशों से भी अधिगम पर्यावरण के अर्थ के बारे में जानें। यदि आप सीखने के विभिन्न सिद्धांतों का विश्लेषण करते हैं, तो आप पाएंगे कि सामाजिक वातावरण सीखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बंडुरा, एक सामाजिक मनोवैज्ञानिक, ने अपने सोशल लर्निंग थ्योरी में प्रस्तावित किया कि नए व्यवहार को अवलोकन और नकल की प्रक्रिया के माध्यम से सीखा जा सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि अधिगम होता है। व्यक्तिगत विशेषताओं, व्यवहार और पर्यावरणीय कारकों के बीच बातचीत के परिणामस्वरूप। सामाजिक वातावरण के अलावा, भौतिक वातावरण भी सीखने को प्रभावित करता है।

संस्कृति की भूमिका को सीखने का एक महत्वपूर्ण कारक भी माना जाता है। वायगोत्स्की, एक रचनावादी विचारक, का मानना था कि सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण कार्यों पर महारत केवल सामाजिक संबंधों के माध्यम से ही हो सकती है। उसके लिए, सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण सीखने की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि सीखने वाला अर्थ बनाने की प्रक्रिया को मध्यस्थ बनाने के लिए सांस्कृतिक उपकरण (जैसे भाषा) का उपयोग करता है। यह समझा जाता है कि सीखने के परिणाम प्रासंगिक प्रकृति के होते हैं, सीखने के माहौल में भिन्नता सीखने के विभिन्न परिणामों की ओर ले जाती है।

सीखना एक सतत प्रक्रिया है और यह किसी विशेष सेटिंग तक सीमित नहीं है। विभिन्न प्रकार की सेटिंग्स के आधार पर, यूनेस्को (1984) ने निम्नलिखित प्रकार के सीखने को वर्गीकृत कियाः

- औपचारिक शिक्षा – संस्थागत
- गैर–औपचारिक शिक्षण – लचीलेपन के साथ व्यवस्थित
- अनौपचारिक शिक्षा – आकस्मिक और व्यक्तिगत रूप से संगठित नहीं

सीखने के वातावरण का वर्णन करने के लिए अक्सर औपचारिक, गैर–औपचारिक और अनौपचारिक शब्दों का उपयोग किया जाता है। आप जानते हैं कि औपचारिक शिक्षा मुख्यतः विद्यालय में होती है जबकि अनौपचारिक शिक्षा परिवार और समुदाय में होती है। आइए हम औपचारिक, अनौपचारिक और गैर–औपचारिक अधिगम वातावरण की अवधारणाओं के बारे में अधिक समझें।

Types of Learning Environment (सीखने के माहौल के प्रकार)

Formal Learning Environment (औपचारिक सीखने का माहौल) – सीखने का माहौल जो स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों जैसे औपचारिक संगठित संस्थानों में होता है, औपचारिक सीखने के माहौल के रूप में जाना जाता है। औपचारिक शिक्षण संस्थान सीखने के उद्देश्यों, सीखने के समय या सीखने के समर्थन के संदर्भ में अत्यधिक संरचित हैं, प्रमाणीकरण का उद्देश्य जो मान्यता प्राप्त योग्यता की ओर ले जाता है। शिक्षार्थी के दृष्टिकोण से सीखने की प्रक्रिया का इरादा बहुत अधिक है। औपचारिक शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य एक समाज द्वारा संरक्षित और प्रचारित ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण, विश्वास आदि को प्रसारित करना है। एक शिक्षक के रूप में आपके अनुभव से यह स्पष्ट है कि आपको यह पढ़ाना है कि राज्य द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम क्या है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

एक औपचारिक शिक्षण संगठन के रूप में, स्कूल अच्छी तरह से संतुलित व्यक्तित्व के विकास के उद्देश्य से एक बच्चे के विचारों, आदतों और दृष्टिकोणों के निर्माण में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। सामान्य तौर पर, इसका उद्देश्य बच्चों का विकास करना है, जो शारीरिक रूप से मजबूत, मानसिक रूप से सतर्क, भावनात्मक रूप से स्थिर, सांस्कृतिक रूप से स्वस्थ और सामाजिक रूप से कुशल हैं।

एक स्कूल प्रणाली में कई हितधारक होते हैं जिनमें शिक्षार्थी, माता–पिता, शिक्षक, समुदाय और स्कूल प्रशासन शामिल होते हैं। उनमें से शिक्षक और छात्र एक स्कूल प्रणाली में दो प्रमुख हितधारक हैं। एक औपचारिक शिक्षण संगठन के रूप में स्कूल की कार्यप्रणाली को छात्रों और शिक्षकों के बीच निरंतर बातचीत की विशेषता है। एक स्कूल प्रणाली में कई संदर्भ हैं जो छात्र सीखने को प्रभावित करते हैं।

Informal Learning Environment (अनौपचारिक सीखने का माहौल) – सीखने का माहौल जो रोजमर्रा की जिंदगी में होता है (कार्यस्थल पर, परिवारों में, मनोरंजन के समय, स्कूल ब्रेक के दौरान ...) को अनौपचारिक सीखने का माहौल कहा जाता है। अनौपचारिक शिक्षा संरचित नहीं है और इसका उद्देश्य प्रमाणन नहीं है। कुछ मामलों में, अनौपचारिक शिक्षा उद्देश्यों के साथ हो सकती है। आमतौर पर यह अनजाने में होता है

ऐसे कई स्थान हैं जो सीखने के अनौपचारिक वातावरण का निर्माण करते हैं। घर बच्चे के सीखने का पहला अनौपचारिक स्थान होता है। हम सभी जानते हैं कि एक बच्चा अपने परिवार के सदस्यों के साथ बातचीत के माध्यम से बहुत सारे जीवन कौशल, दृष्टिकोण, सामाजिक शिष्टाचार और अपने आस–पास की दुनिया का ज्ञान सीखता है। जैसे माता, पिता, भाई, बहन और अन्य। अनौपचारिक शिक्षा बच्चों को अपने व्यवहार को स्व–केंद्रित होने से सामाजिक रूप से जागरूक होने, परिवार के अन्य सदस्यों की जरूरतों और अधिकारों की देखभाल करने में सक्षम बनाती है। धीरे–धीरे, बच्चे को पड़ोस के समुदाय की सामाजिक प्रक्रियाओं से परिचित कराया जाता है, जिसका परिवार एक हिस्सा है।

इस प्रकार, परिवार, आस–पड़ोस का समुदाय, हमउम्र समूह, बाजार आदि अनौपचारिक सीखने के माहौल का निर्माण करते हैं जिसका बच्चे के सामाजिक–सांस्कृतिक और संज्ञानात्मक विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

Non – formal Learning Environment(गैर–औपचारिक शिक्षण वातावरण) – सीखने का माहौल, औपचारिक शिक्षा के विपरीत, औपचारिक शैक्षिक संरचना के बाहर होता है। गैर–औपचारिक शिक्षा पूर्व–निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने का इरादा रखती है। लेकिन, औपचारिक शिक्षा के विपरीत, गैर–औपचारिक शिक्षा हमेशा एक विशिष्ट लक्ष्य समूह की सीखने की आवश्यकता को पूरा करती है। एक देश में, कई पहलें और कार्यक्रम मिल सकते हैं, जो स्वभाव से गैर–औपचारिक हैं। भारत में, वयस्क शिक्षा कार्यक्रम, बुनियादी शिक्षा कार्यक्रम, साक्षरता कार्यक्रम, स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम, कूल छोड़ने वालों के लिए कार्यक्रम, कृषि विस्तार कार्यक्रम और इस तरह के गैर–औपचारिक शिक्षण कार्यक्रम हैं। गैर–औपचारिक शिक्षण कार्यक्रमों को हमेशा अल्पकालिक और विशेष प्राप्त करने के लिए संकल्पित किया जाता है। शैक्षिक लक्ष्य और उद्देश्य। उदाहरण के लिए, किसी भी प्रकार के साक्षरता कार्यक्रम में, उद्देश्य केवल निरक्षरों के बीच साक्षरता हासिल करना है और कार्यक्रम केवल उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए तैयार है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

गैर–औपचारिक शिक्षण कार्यक्रमों में पाठ्यचर्या के अनुभव आम तौर पर लक्ष्य समूह की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किए जाते हैं। ये व्यापक आधार वाले और सामान्य प्रकृति के बजाय अधिक व्यक्तिगत हैं। उदाहरण के लिए, ग्राम स्तर के स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए बने कार्यक्रमों में गाँव के वातावरण के संदर्भ में स्वास्थ्य देखभाल से संबंधित विशिष्ट जानकारी होती है। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया सामान्यतः शिक्षार्थी–उन्मुख और प्रकृति में लचीली होती है। सीखने के अनुभवों का लेन–देन सामुदायिक संसाधनों के आसपास केंद्रित है। गैर–औपचारिक शिक्षण कार्यक्रमों में गतिविधियाँ ज्यादातर आयोजकों के साथ–साथ शिक्षार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए आयोजित की जाती हैं। औपचारिक शिक्षा की तरह, मध्यावधि समीक्षा और अंतिम समीक्षा द्वारा रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन दोनों करने के उपाय भी किए जाते हैं।

MAINTAINING A LEARNING ENVIRONMENT (सीखने के माहौल को बनाए रखना) –सीखने के माहौल को बनाए रखने के लिए एक शिक्षक को अपने शिक्षार्थियों की सक्रिय रूप से निगरानी करने की आवश्यकता होती है। सक्रिय निगरानी में छात्र के व्यवहार को करीब से देखना शामिल है। अनुचित व्यवहारों के बढ़ने से पहले उन्हें ठीक करना , दुर्व्यवहार से निपटना। लगातार, और छात्र सीखने में भाग लेना। प्रभावी सीखने के माहौल को बनाए रखने में छात्रों की मदद करना शामिल है जब वे फंस जाते हैं, जब उन्हें समर्थन की आवश्यकता होती है, जब उन्हें दिशा की आवश्यकता होती है, जब उन्हें सुधार की आवश्यकता होती है, और जब उन्हें प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है।

जब छात्र अनुपयुक्त व्यवहार करते हैं, तो आपको इसे जारी रखने और अन्य छात्रों को प्रभावित करने से रोकने के लिए इसे तुरंत संभालना चाहिए। हालांकि आप सबसे ज्यादा संभाल सकते हैं। आंखों से संपर्क जैसी तकनीकों का उपयोग करके दुर्व्यवहार, गंभीर दुर्व्यवहार के लिए सीधे हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।

ऐसी स्थिति में, जब शिक्षार्थियों को शैक्षणिक विषयवस्तु के बारे में गलतफहमियाँ हों, तो आपको विषयवस्तु को फिर से पढ़ाने और संचार की स्पष्टता में सुधार करने के तरीकों की तलाश करनी चाहिए। शिक्षण में स्पष्टता तब लाई जा सकती है जब आप सीखने के उद्देश्यों का स्पष्ट रूप से वर्णन करते हैं, असाइनमेंट के लिए सटीक निर्देश देते हैं, और समझने योग्य स्पष्टीकरण के साथ प्रश्नों का उत्तर देते हैं। इस प्रकार, निर्देशों की स्पष्टता और शिक्षार्थी की आवश्यकताओं की समझ सहित कक्षा संचार एक अच्छा सीखने के माहौल को बनाए रखने में महत्वपूर्ण है।

एक अच्छा सीखने का माहौल कक्षा के भीतर दूसरों के योगदान और विविधता के मूल्य को समझने को भी सुनिश्चित करता है। प्रत्येक कक्षा की विशिष्टता और कार्यों की विविधता और जटिलता जिसका सामना शिक्षकों को करना पड़ता है, प्रत्येक स्थिति के लिए विशिष्ट तकनीकों को निर्धारित करना असंभव बना देता है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

Unit :– 1.2 The concept of Micro teaching and Macro teaching and its relevance to regular school teaching learning environment (माइक्रो टीचिंग और मैक्रो टीचिंग की अवधारणा और नियमित स्कूल के लिए इसकी प्रासंगिकता शिक्षण सीखने का माहौल)

माइक्रो टीचिंग (Micro Teaching) :– सूक्ष्म शिक्षण को शिक्षण के संकुचित रूप में देखा वे समझा जाता हैं। सूक्ष्म शिक्षण में छात्रध्यापकों में शिक्षण के कौशल का एक साथ उपयोग न करके उनको एक एक छोटा प्लेन बनाने को कहा जाता हैं एवं एक समय में सिर्फ एक कौशल करवाया जाता है। सूक्ष्म शिक्षण डपबतव ज्मंबीपदह का विकास अमेरिका के स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में (1961) को हुआ था।

सूक्ष्म शिक्षण Micro Teaching में छात्राध्यापकों से पाठ योजना का निर्माण करवाया जाता हैं। वह शिक्षण करते हैं फिर अध्यापकों एवं छात्रों से प्रतिपुष्टि (Feedback) देने को कहा जाता हैं यह प्रक्रिया दुबारा दोहराई जाती हैं जिसे सूक्ष्म शिक्षण चक्र (Cycle of Micro Teaching) कहा जाता हैं। विभिन्न कौशल इस प्रकार हैं– श्यामपट्ट कौशल, पुनर्बलन कौशल,प्रस्तावना कौशल,व्याख्यान कौशल,उद्दीपन परिवर्तन कौशल।

सूक्ष्म शिक्षण की परिभाषा –

1) एलेन महोदय के अनुसार – " सूक्ष्म शिक्षण समस्त शिक्षण को लघु क्रियाओं में बाटना हैं।"

2) शिक्षा विश्वकोश के अनुसार – " सूक्ष्म शिक्षण (Micro Teaching) वास्तविक निर्मित तथा अध्यापन अभ्यास का न्यूनीकृत अनुमाप है जो शिक्षक–प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम विकास व अनुसंधान में प्रयुक्त किया जाता हैं।"

3) पीक व टकर महोदय के अनुसार – " सूक्ष्म शिक्षण विडियो टेप फीडबैक के प्रयोग से प्रमुख कौशलों के विकास को संकुचित रूप से जानने के लिए प्रयोगात्मक विधि की एक प्रणाली हैं।"

4) **बी० एम०शोर महोदय के अनुसार –** " सूक्ष्म शिक्षण कम अवधि, कम छात्रों तथा कम शिक्षण क्रियाओं वाली प्रविधि हैं।"

सूक्ष्म–शिक्षण चक्र – सूक्ष्म–शिक्षण चक्र का समय विभाजन निम्न प्रकार से प्रस्तावित किया जाता है–

- शिक्षण (Teaching) = 6 मिनट
- पृष्ठपोषण (Feed Back) = 6 मिनट
- पुनर्पाठ योजना (Relesson Plan) = 12 मिनट
- पुनः शिक्षण (Re–Teach) = 6 मिनट

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

➢ पुनः पृष्ठपोषण (Re–Feed Back) = 6 मिनट

सूक्ष्म शिक्षण की विशेषता (Characteristics of Micro Teaching)

1– यह कम समय में अधिक गुणवत्ता प्रदान करने की प्रविधि हैं।

2– सूक्ष्म शिक्षण (Micro Teaching) एक व्यक्तिगत शिक्षण हैं।

3– सूक्ष्म शिक्षण में एक समय में एक ही कौशल का विकास करने का लक्ष्य रखा जाता हैं।

4– सूक्ष्म शिक्षण के अंतर्गत छात्रों की संख्या में कटौती करके 5–6 तक रखी जाती हैं।

5– सूक्ष्म शिक्षण में समय की अवधि को कम करके 5 से 10 मिनट तक रखा जाता हैं।

6– इसके अंतर्गत उचित एवं तत्काल प्रतिपुष्टि की व्यवस्था की जाती हैं।

सूक्ष्म शिक्षण की उपयोगिता

1– सूक्ष्म शिक्षण के द्वारा छात्राध्यापकों में आसानी से कौशलों का विकास किया जाता हैं।

2– सूक्ष्म शिक्षण के द्वारा प्रशिक्षण की गुणवत्ता में वृद्धि होती हैं।

3– इस प्रकार से छात्रध्यापक कम समय में अधिक सिख पाते हैं।

4– सूक्ष्म शिक्षण के द्वारा उत्तम शिक्षक का निर्माण किया जाता हैं।

5– इसके द्वारा छात्रों का वस्तुनिष्ट मुल्यांकन किया जाना संभव हैं।

सूक्ष्म शिक्षण में सावधानियां :–

1– छात्राध्यापकों को शिक्षण शुरू करने से पूर्व पाठ योजना का निर्माण कर लेना चाहिए।

2– एक समय में एक ही शिक्षण कौशल का विकास करना चाहिए।

3– जब छात्राध्यापक शिक्षण कर रहे हो तो उनको उचित प्रतिपुष्टि (Feedback) और प्रसंशा करनी चाहिए जिससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हो।

4– इसके द्वारा पाठ्यवस्तु को क्रमबद्ध तरीके के साथ व्यवस्थित करना चाहिए।

5– सूक्ष्म शिक्षण में छात्राध्यापकों को उचित सुझाव ही देने चाहिए अन्यथा उनके मनोबल में कमी आ सकती हैं।

Macro & Teaching (मैक्रो–शिक्षण) :– मैक्रो–टीचिंग का अर्थ व्युत्पत्ति के रूप में समझा जा सकता है। 'मैक्रोस' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'माक्रोस' से हुई है, जिसका अर्थ है लंबा और बड़ा। मैक्रो–टीचिंग

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

तकनीक इंगित करती है कि सामग्री को बड़े दर्शकों तक पहुँचाया जा रहा है, उदाहरण के लिए, 40 छात्रों की एक कक्षा, और लंबी अवधि के लिए, आमतौर पर एक घंटे या उससे अधिक तक। शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने ज्ञान को प्रदर्शित करने के लिए आकलन, आमतौर पर लिखित परीक्षा या प्रोजेक्ट लें। एक व्यवसाय ऑनबोर्डिंग और इंडक्शन प्रोग्राम के लिए मैक्रो लर्निंग का उपयोग संगठन का अवलोकन प्रदान करने और संदर्भ निर्धारित करने के लिए अनुपालन और परिवर्तन की पहल के लिए, एक अवलोकन प्रदान करने और भविष्य की संभावनाओं की एक सामान्य समझ को स्पष्ट करने के लिए कर सकता है। कक्षाओं, कार्यशालाओं और व्याख्यानों की दुनिया मैक्रो–शिक्षण कौशल और निर्देशात्मक वितरण के प्रकार का पर्याय है। मैक्रो–शिक्षण की कुछ विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- मैक्रो–टीचिंग की विभिन्न विशेषताओं में प्रशिक्षकों, प्रशिक्षकों, सलाहकारों, और डोमेन ज्ञान को समय के साथ वितरित किया जाता है और छात्रों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।
- मैक्रो–टीचिंग स्किल्स टीचिंग स्ट्रैटेजीज और मेथड्स को मैप करने में प्रभावी रूप से मदद करते हैं। वे सीखने के परिणामों के संदर्भ में एक शिक्षण रणनीति की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने में मदद करते हैं।
- मैक्रो–टीचिंग स्किल्स छात्रों के सामने आने वाली समस्याओं का पहले से ही अनुमान लगाने और प्रभावी समाधानों के साथ आने में मदद करते हैं।
- मैक्रो–टीचिंग स्किल्स सीखने के परिणामों और शिक्षण विधियों दोनों को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। वे एक अकादमिक वर्ष के लिए पढ़ाए जाने वाले विषय के लिए एक कुशल पाठ्यचर्या योजना तैयार करने में मदद करते हैं और कक्षा (शिक्षण सहायक) में आवश्यक संसाधनों और सामग्रियों की पहचान करते हैं।
- मैक्रो–टीचिंग की उपर्युक्त विशेषताएं शिक्षकों और छात्रों को एक बेहतर सीखने के परिणाम और नए ज्ञान की गहरी समझ हासिल करने में मदद करती हैं, सभी दृष्टिकोणों को विकसित और विस्तारित करते हुए।

एक शिक्षक पाठ योजना और सामग्री वितरण के लिए मैक्रो–शिक्षण के निम्नलिखित चरणों को लागू कर सकता है:

- सीखने के उद्देश्यों को पहले पहचाना जाना चाहिए।
- एक पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए एक यथार्थवादी समयरेखा बनाई जानी चाहिए।
- सीखने के उद्देश्यों के अनुरूप विशिष्ट सीखने की गतिविधियों की योजना बनाई जानी चाहिए।
- एक पाठ को एक व्यस्त तरीके से वितरित करने और सीखने को सुदृढ़ करने के लिए अनुक्रमित किया जाना चाहिए।
- छात्रों के सीखने के परिणामों का आकलन करने के लिए मूल्यांकन परीक्षणों की एक प्रभावी बैटरी की योजना बनाई जानी चाहिए।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

- ये बिंदु आपके मूल प्रश्न को हल कर सकते हैं, मैक्रो शिक्षण क्या है? यह पूरी तरह से पाठ योजना, वितरण और मूल्यांकन परीक्षणों को लागू करके पाठ्यक्रम को पूरा करने की दिशा में एक दीर्घकालिक दृष्टिकोण है।

Unit :– 1.3 Approach and methods of teaching – context, differences and importance (शिक्षण के दृष्टिकोण और तरीके – संदर्भ, अंतर और महत्व) –

Approaches, Methods, Techniques (दृष्टिकोण, तरीके, तकनीक) – हम एक 'दृष्टिकोण' को शिक्षण और सीखने के तरीके के रूप में देखेंगे। भाषा शिक्षण के किसी भी दृष्टिकोण के पीछे एक सैद्धांतिक दृष्टिकोण है कि भाषा क्या है और इसे कैसे सीखा जा सकता है। इसमें व्यावहारिक अनुप्रयोगों के साथ शिक्षण के बारे में सैद्धांतिक सिद्धांतों का एक सेट शामिल है।

एक दृष्टिकोण 'तरीकों' को जन्म देता है, भाषा की वस्तुओं को पढ़ाने का तरीका, उदाहरण के लिए, कक्षा की गतिविधियों या तकनीकों के माध्यम से।

एक विधि यह है कि एक भाषा कैसे सिखाई जाती है। एक विधि तकनीकों के एक समूह से बनी होती है जो आमतौर पर भाषा शिक्षण के एक विशेष दृष्टिकोण को दर्शाती है।

Example (उदाहरण) :– संचारी दृष्टिकोण भाषा शिक्षण के लिए सबसे लोकप्रिय और सबसे वर्तमान दृ ष्टिकोण है। कार्य–आधारित शिक्षण संचारी दृष्टिकोण को पढ़ाने से जुड़ी एक पद्धति है। संचारी दृष्टिकोण सिखाने के साथ अन्य विधियाँ भी जुड़ी हुई हैं। हालाँकि, मामलों को भ्रमित करने के लिए, कुछ तरीकों को 'दृष्टिकोण' भी कहा गया है। नवीनतम तरीके/तकनीक यहां ईएलटी पढ़ाने के सबसे लोकप्रिय तरीकों की सूची दी गई है:

1. Presentation] Practice and Production (प्रस्तुति, अभ्यास और उत्पादन (पीपीपी) :– इस पद्धति में, शिक्षक एक स्थिति (प्रस्तुति चरण) का उपयोग करके सीखने के लिए नई भाषा की वस्तु प्रस्तुत करता है। फिर शिक्षक शिक्षार्थियों को अभ्यास या अन्य नियंत्रित अभ्यास गतिविधियों (अभ्यास चरण) के माध्यम से नई भाषा का अभ्यास करवाता है और फिर वह शिक्षार्थियों से एक ही भाषा को एक संचारी और कम नियंत्रित तरीके में उपयोग करने या बनाने के लिए कहता है।

2.Audiolingual Method (ऑडियोलिंगुअल विधि) – इस पद्धति में, भाषा सीखना पूरी तरह से आदत निर्माण के बारे में है, मुख्य रूप से दोहराए जाने वाले ड्रिलिंग द्वारा। बुरी आदतों को रोकने के लिए त्रुटि सुधार को आवश्यक माना जाता है। ऑडियोलिंगुअल पद्धति अकादमिक हलकों में काफी हद तक बदनाम है, हालांकि कुछ जगहों पर यह अभी भी प्रचलित है।

3. Lexical method (शाब्दिक विधि) – लेक्सिस शब्द का प्रयोग शब्दावली और व्याकरण के क्षेत्रों के शिक्षण दोनों को एक साथ दर्शाने के लिए किया जाता है। शब्दावली को आमतौर पर अलग–अलग शब्दों के रूप में देखा जाता है, जबकि लेक्सिस कुछ हद तक व्यापक अवधारणा है और इसमें शब्द, वाक्यांश,

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

कोलाजेशन, भाग और सूत्र व्याकरणिक अभिव्यक्ति शामिल हैं। ये शब्द, टुकड़े और पैटर्न अब अक्सर लेक्सिकल आइटम कहलाते हैं। निर्देश निश्चित भावों पर केंद्रित है जो अक्सर संवादों में होते हैं।

4.Task–based method (कार्य–आधारित विधि) – कार्य–आधारित अधिगम में, अधिगम को प्रामाणिक कार्यों की एक श्रृंखला के इर्द–गिर्द डिजाइन किया गया है जो शिक्षार्थियों को कक्षा के बाहर 'वास्तविक दुनिया' में भाषा का उपयोग करने का अनुभव देता है। इस पद्धति में, कोई पूर्व–निर्धारित भाषा पाठ्यक्रम नहीं है, और इसका उद्देश्य शिक्षार्थियों के लिए उन कार्यों से सीखना है जिनकी उन्हें सफलतापूर्वक भाग लेने के लिए आवश्यक भाषा है। एक कार्य एक समय सारिणी से एक यात्रा के यात्रा कार्यक्रम पर काम करना या एक ट्रैवल एजेंट से जानकारी का अनुरोध करना हो सकता है।

5.**Principled Eclecticism Method (प्रिंसिपल इक्लेक्टिसिज्म मेथड)** :– इस पद्धति में विभिन्न प्रकार की भाषा सीखने की गतिविधियों का उपयोग, उपरोक्त सभी विभिन्न गतिविधियों और अन्य शिक्षण विधियों का मिश्रण शामिल है। इस पद्धति के समर्थकों (समर्थकों) का कहना है कि कमजोरियों के साथ–साथ अन्य तरीकों में ताकत भी है। इस प्रकार, यह सुनिश्चित करने के लिए तरीकों के मिश्रण का उपयोग करना सबसे अच्छा है कि सीखना यांत्रिक न हो जाए और इसलिए, शिक्षार्थियों को कई तरीकों से लाभ होगा।

6.Communicative Method (संचारी विधि) :– इस पद्धति में, प्रामाणिक, सार्थक संचार पर ध्यान दिया जाता है, संरचना पर नहीं। छात्र भाषा का उपयोग करके कार्यों को पूरा करते हैं। वे भाषा का अध्ययन नहीं करते, जैसा कि अतीत में हुआ था। पाठ्यक्रम कार्यों पर ध्यान केंद्रित करता है (जैसे, अनुमति मांगना, दिशा–निर्देश पूछना, आदि), व्याकरणिक संरचनात्मक विकास (काल, सशर्त, आदि) पर नहीं। सटीकता की तुलना में प्रवाह और संचार अधिक महत्वपूर्ण हैं। कक्षा अधिक छात्र–केंद्रित (या शिक्षार्थी–केंद्रित) हो जाती है। छात्र अन्य छात्रों के साथ अपने कार्यों को पूरा करते हैं, जबकि शिक्षक एक सूत्रधार पर्यवेक्षक की भूमिका अधिक निभाता है।

शिक्षण विधियों का महत्व – शिक्षण विधियाँ व्यापक तकनीकें हैं जिनका उपयोग छात्रों को सीखने के परिणाम प्राप्त करने में मदद करने के लिए किया जाता है, जबकि गतिविधियाँ इन विधियों को लागू करने के विभिन्न तरीके हैं। शिक्षण विधियाँ छात्रों की मदद करती हैं:

- पाठ्यक्रम की सामग्री में महारत हासिल करें।
- विशेष संदर्भों में सामग्री को लागू करना सीखें

प्रशिक्षकों को यह पहचानना चाहिए कि कौन सी शिक्षण विधियाँ किसी विशेष शिक्षण परिणाम का ठीक से समर्थन करेंगी। इसकी प्रभावशीलता इस संरेखण पर निर्भर करती है। सबसे उपयुक्त विकल्प बनाने के लिए, एक प्रशिक्षक को सीखने के परिणामों, छात्र की जरूरतों और सीखने के माहौल पर विचार करना चाहिए।

निम्नलिखित उदाहरण पर विचार करें:

- सीखने के परिणाम: एक जटिल गणित समीकरण को हल करें।
- सीखने का माहौल: एक व्यक्ति, 20 छात्रों के साथ ऊपरी स्तर का गणित पाठ्यक्रम।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

शिक्षण पद्धतिः निर्देशित निर्देश। सबसे पहले, प्रशिक्षक मॉडलिंग और मचान द्वारा सीखने की सुविधा प्रदान करता है। छात्र प्रश्न पूछने और स्पष्टीकरण प्राप्त करने के लिए समय लेते हैं। इसके बाद, छात्र इन कौशलों को एक साथ और फिर स्वतंत्र रूप से लागू करने का अभ्यास करते हैं। प्रशिक्षक समझ की जाँच के लिए रचनात्मक मूल्यांकन का उपयोग करता है।

यह उदाहरण इस संरेखण को प्रदर्शित करता है कि प्रशिक्षक छात्रों से क्या करवाना चाहता है, और इन कार्यों में उनका समर्थन कैसे किया जाता है। यदि प्रशिक्षक एक अलग शिक्षण पद्धति चुनता है, जैसे पारंपरिक व्याख्यान, छात्रों को व्याख्यान की सामग्री को संसाधित करने और सिद्धांतों को एक साथ लागू करने की आवश्यकता होगी। ऐसा करना बहुत कठिन है और इससे कम सफल परिणाम प्राप्त होंगे। उपयुक्त शिक्षण पद्धति का चयन छात्रों को सामग्री के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने और उनके ज्ञान और कौशल को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए जीवन के लिए निर्देश लाता है।

Unit :– 1.4 Teaching in regular elementary schools – Establishing a positive classroom climate to enable teaching and learning, use of TLM and technology, importance of Activity based learning (ABL) and Continuous and comprehensive evaluation (CCE). नियमित प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापन – के लिए एक सकारात्मक कक्षा वातावरण की स्थापना ,शिक्षण और सीखने को सक्षम बनाना, टीएलएम और प्रौद्योगिकी का उपयोग, गतिविधि आधारित महत्व लर्निंग और सतत और व्यापक मूल्यांकन (सीसीई)।

नियमित प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापन – के लिए एक सकारात्मक कक्षा वातावरण की स्थापना :– किसी कक्षा में बच्चे तीव्र गति से सीखने की कोशिश तब करते हैं जब कक्षा का माहौल शांत हो, कुछ विशेष आकर्षित चित्र हो ,रुचि पूर्ण कथन हो कुशल शिक्षा किस प्रकार के वातावरण को तैयार करके अधिगम स्तर में वृद्धि ला सकते हैं।

पुनर्बलन दिया जाना :– बच्चे को दण्ड देने के बजाय उसके प्रत्येक सफल प्रयास पर पुनर्बलन आदि देने से अधिगम तीव्र गति से होता है द्य इसलिए एक कुशल शिक्षण बच्चे को प्रोत्साहित करे तो बच्चे में आत्मबल बढता है तथा सीखने की क्षमता में विकास होता है।

क्रमबद्धता :– शिक्षण सूत्र सदैव सरल से कठिन एवं मूर्त से अमूर्त सीखने के लिए प्रेरित करते हैं इसलिए शिक्षक यह सुनिश्चित कर लेता है किस किस विषय वस्तु को पहले एवं किस विषय वस्तु को बाद में पढ़ाया जाए ऐसा करने से बच्चों को सीखने में स्थाई परिवर्तन होने के अवसर अधिक होते हैं।

अभ्यास :– जब किसी विषय वस्तु का अभ्यास कराते हैं तो वे दीर्घकालीन स्मृति में परिवर्तित हो जाते हैं इसलिए बच्चे अच्छी तरह से किसी प्रकरण को सीखे, इसके लिए अधिक से अधिक अभ्यास की जरूरत होती है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

विभेदीकरण :– कभी–कभी बच्चे उस विषय वस्तु को जान जाते हैं परंतु इतनी क्षमता नहीं होती है कि वे अलग–अलग उदाहरण देकर उनमें विभेद को स्पष्ट कर सकें द्य जैसे हिंदी वर्ण माला स,स, श के उच्चारण करना।

सामान्यीकरण :– बच्चा किसी भी कार्य को सीख लेता है और बिना शिक्षक की सहायता से उसे करने योग्य हो जाता है तो उसे समान्यीकरण कहते हैं द्य जैसे प्रकार की प्रवृत्तियों का प्रयोग क्षेत्रों में किया जा रहा है परंतु इस विधियों का प्रयोग विशेष शिक्षक विशेष बच्चों में बेहतर अधिगम के लिए से अधिक कर रहे और परिणाम भी सार्थक आ रहे हैं।

शिक्षण सहायक सामग्री (Teaching Learning Material) – पाठ को ठीक से समझाने के लिए शिक्षक जिन–जिन सामग्रियों का प्रयोग करता है वह शिक्षण सामग्री (instructional materials) या 'शिक्षण–अधिगम सहायक सामग्री' (टीचिंग–लर्निंग एड्स) कहलाती है। इसमें पाठ्यपुस्तक आदि परम्परागत सामग्रियाँ तो हैं ही, एनिमेशन (animation) आदि नयी सामग्री भी इसमें जुड़ गयी है। इन सामग्रियों के माध्यम से सीखा ज्ञान न केवल छात्रों में उत्साह जागृत करता है वरन् सीखे हुए ज्ञान को लंबे समय तक अपने स्मृति पटल में संजोए रखने में भी सहायक होता है। दूसरी और शिक्षक भी अपने अध्यापन के प्रति उत्साहित रहता है। परिणामस्वरूप कक्षा का वातावरण हमेशा सकारात्मक बना रहता है।

परिभाषा – सहायक सामग्री वह सामग्री है जो कक्षा में या अन्य शिक्षण परिस्थितियों में लिखित या बोली गई पाठ्यसामग्री को समझने में सहायक होती है।

- प्रिन्ट सामग्री :– पाठ्यपुस्तकें, पम्पलेट, हैंडा–आउट,
- अध्ययन–मार्गदर्शिकाएँ, मैनुअल
- श्रव्य सामग्री :– यूएसबी ड्राइव, कैसेट, माइक्रोफोन,
- दृश्य सामग्र :– चार्ट, वास्तविक वस्तुएँ, फोटोग्राफ, ट्रान्सपैरेन्सी
- श्रव्य–दृष्य सामग्री :– स्लाइड, टेप, फिल्में, टेलीविजन, मल्टिमिडिया, यू–ट्यूब
- इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँः– संगणक, ग्राफ दर्शाने वाले कैलकुलेटर, टैबलेट, स्मार्ट फोन

सहायक सामग्री का उपयोग निम्नांकित उद्देश्य प्राप्ति हेतु किया जाता है –

(१) पाठ के प्रति छात्रों में रुचि जागृत करना,

(२) बालकों में तथ्यात्मक सूचनाओं को रोचक ढंग से प्रस्तुत करना,

(३) छात्रा को अधिक क्रियाषील बनाना,

(४) सीखने की गति में सुधार करना,

(५) जटिल विषयों को भी सरस रूप में प्रस्तुत करना,

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

(६) अभिरूचि पर आशानुकूल प्रभाव डालना,

(७) तीव्रबुद्धि एवं मन्दबुद्धि छात्रों को योग्यतानुसार शिक्षा देना,

(८) बालक का ध्यान अध्ययन (पाठ) की ओर केन्द्रित करना,

(९) अमूर्त पदार्थों को मूर्त रूप देना,

(१०) बालकों की निरीक्षण–शक्ति का विकास करना।

Activity based learning (गतिविधि आधारित शिक्षा) :– सीखने की गतिविधि के आधार पर या एबीएल शिक्षण के लिए शैक्षणिक दृष्टिकोण की एक सीमा का वर्णन है। इसकी मुख्य परिसर प्रयोगों और गतिविधियों के बारे में कुछ हाथ कर रही है पर आधारित होना चाहिए कि सीखने की आवश्यकता शामिल हैं। गतिविधि आधारित अधिगम के विचार के बच्चों सक्रिय शिक्षार्थियों के बजाय जानकारी के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता हैं कि आम धारणा में निहित है। बच्चे को अपने स्वयं के द्वारा पता लगाने का अवसर प्रदान किया है और एक इष्टतम सीखने के माहौल प्रदान की जाती है तो सीखने खुशहाल और लंबे समय से स्थायी हो जाता है।

गतिविधि आधारित अधिगम का इतिहास :– एक ब्रिटिश व्यक्ति दाऊद होर्सबूर्घ भारत आया था और अंत में वहाँ बसने का फैसला किया जब गतिविधि आधारित अधिगम द्वितीय विश्व युद्ध के आसपास 1944 में कुछ समय के लिए शुरू कर दिया। उन्होंने कहा कि एक अभिनव विचारक और करिश्माई नेता थे। उन्होंने ऋषि वैली स्कूल में अध्यापन शुरू कर दिया। उन्होंने कहा कि ब्रिटिश काउंसिल में शामिल हो गए और कई वर्षों के लिए चेन्नई और बेंगलूर में काम किया। उसकी स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने कोलार जिले में एक साइट स्थित है और अपने स्कूल, नील बाग खोला। नील बाग होर्सबूर्घ का एक अभिनव विचार पर आधारित है और सुनियोजित अधिगम सामग्री शिक्षण में अपनी रचनात्मक तरीकों के लिए जाना जाता था। उनकी पत्नी डोरीन और उनके बेटे निकोलस के साथ, होर्सबूर्घ संगीत, बढ़ईगीरी, सिलाई, चिनाई, बागवानी, जिसमें शामिल एक विविध पाठ्यक्रम, साथ ही सामान्य स्कूल विषयों, अंग्रेजी, गणित, संस्कृत, और तेलुगू विकसित की है। ये शैक्षणिक सामग्री को व्यवस्थित नमूने और चित्र और हास्य की एक सामयिक स्पर्श के साथ, योजना बनाई गई। बाद में होर्सबूर्घ शिक्षकों और छात्रों के लिए सुलभ था कि नील बॉ में एक भव्य पुस्तकालय बनाया। होर्सबूर्घ की इस पहल को बाद में एबीएल में अग्रणी है और मील के पत्थर में से एक साबित हुई थी। आधुनिक समय में एबीएल बंधुआ मजदूरी से मुक्त कर दिया गया था, जो बच्चों के लिए विशेष स्कूल प्रदान करने के प्रयास के रूप में, शिक्षा की विधि 2003 से, चेन्नई निगम स्कूलों में पीछा किया है।

गतिविधि आधारित अधिगम के लक्षण :– एबीएल पद्धति की प्रमुख विशेषता यह उसकी योग्यता और कौशल के अनुसार अध्ययन करने के लिए एक बच्चे स्वयं सीखने को बढ़ावा के लिए बच्चे के अनुकूल शैक्षिक एड्स का उपयोग करता है और अनुमति देता है। प्रणाली के तहत पाठ्यक्रम छोटी इकाइयों में बांटा गया है , अंग्रेजी , तमिल, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के लिए आकर्षक डिजाइन अध्ययन कार्ड जिसमें स्व अध्ययन सामग्री के प्रत्येक एक समूह। एक बच्चे के कार्ड के एक समूह के पूरा होने पर, वह एक मील का पत्थर पूरा करता है। प्रत्येक मील का पत्थर में गतिविधियों, एक वाक्य फार्म गणित और विज्ञान

करते हैं, या एक अवधारणा को समझने , खेल, गाया जाता है, ड्राइंग, और एक पत्र या एक शब्द को पढ़ाने के लिए गीत शामिल हैं। बच्चे को केवल एक विषय में सभी मील के पत्थर को पूरा करने के बाद एक परीक्षा कार्ड तक ले जाता है। एक बच्चे अनुपस्थित है तो एक दिन , वे बाहर पर याद किया क्या वह बच्चों को अपने दम पर जानने के लिए किया था, जहां पुरानी व्यवस्था के विपरीत छोड़ दिया, जहां से जारी है।

सतत और व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation – CCE) – छात्रों की विद्यालय–आधारित मूल्यांकन की एक प्रणाली है। 2009 में भारत के शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत यह एक अनिवार्य मूल्यांकन प्रक्रिया है।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन बच्चों के समुचित विकास का निरंतर और नियमित आकलन हैं जिसमें विकास के सभी पहलुओं का विभिन्न विधियों व उपकरणों द्वारा व्यापक आकलन किया जाता हैं।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन बच्चों के वृद्धि और विकास के समस्त क्षेत्रों का सतत एवं नियमित आकलन है। इसके द्वारा विभिन्न विधियों एवं उपकरणों के माध्यम से बच्चों का आकलन किया जाता है।

इसे अच्छी तरह समझने के लिए हम सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में मौजूद तीन शब्द सतत, व्यापक और मूल्यांकन को जानते हैं।

मूल्यांकन – मूल्यांकन कक्षा अधिगम प्रक्रिया के साथ–साथ बच्चों के सीखने की गति, अवधारणा, ज्ञान, अभिवृत्ति, कौशल, व्यवहार, अनुभव आदि को जानने के लिए योजनाबद्ध तरीके से साक्ष्यों का संकलन, विश्लेषण, व्याख्या एवं सुझाव देने की प्रक्रिया है।

साक्ष्यों का यह संकलन कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के समय शिक्षकों द्वारा विभिन्न विधियों व उपकरणों के माध्यम से किया जाता है। बच्चों का मूल्यांकन बहुत जरूरी हैं। मूल्यांकन–प्रक्रिया जितनी बेहतर होगी विकास की गति भी उतनी ही बेहतर होगी क्योंकि मूल्यांकन के आधार पर आवश्यक सुधार कर उपलब्धि स्तर को बढ़ाया जा सकता है।

मूल्यांकन व आकलन में अन्तर – आकलन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो छोटे–छोटे उद्देश्यों के लिए किया जाता है। आकलन से निरंतर सुधार किया जाता है। मूल्यांकन विशिष्ट उद्देश्यों के लिए किया जाता हैं। मूल्यांकन द्वारा शिक्षकों, बच्चों व अभिभावकों को फीडबैक प्राप्त होता हैं। यह कक्षा उन्नति का आधार होता है।

सतत मूल्यांकन – सतत का शाब्दिक अर्थ होता है – लगातार। इस प्रकार सतत मूल्यांकन लगातार चलने वाली प्रक्रिया हैं। इसमें बच्चे का आकलन सतत एवं नियमित रूप से किया जाता है जो पूरे वर्ष औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से चलता रहता है। सतत आकलन एवं कक्षा शिक्षण प्रक्रिया दोनों साथ–साथ चलने

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

वाली प्रक्रिया है। इसमें न सिर्फ विषय आधारित बल्कि सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों का भी नियमित रूप से आंकलन किया जाता है।

व्यापक मूल्यांकन – व्यापकता से आशय बच्चे के समस्त कौशलोंध्गुणों के विकास से हैं जिसमे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक विकास भी सम्मिलित हैं जो एक अच्छा नागरिक बनने के लिए आवश्यक होता है। इन गुणों का विकास धीमी गति से होता है तथा वांछित परिवर्तन लाने के लिए पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है। व्यापक आकलन अवलोकन, चर्चा, साक्षात्कार आदि के माध्यम से किया जा सकता है।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का आशय यह नहीं है –

- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन परीक्षा का पर्याय नहीं है और न ही बच्चों का नियमित परीक्षण है।
- इसका आशय बच्चों को ग्रेड या अंक देना फेल– पास का सर्टिफिकेट देना भी नहीं है।
- बच्चों को नाम देना जैसे मंदबुद्धि, कमजोर, होशियार आदि।
- बच्चों को डर के दबाव में अध्ययन के लिए प्रेरित करना।
- बच्चे की प्रगति की तुलना अन्य बच्चे से करना।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की विशेषताएँ/महत्व :– सतत एवं व्यापक मूल्यांकन द्वारा बच्चे के विकास के सभी पहलुओं का पता चलता हैं। इसके द्वारा शिक्षक को सीखने के दौरान छात्रों को होने वाली कठिनाइयों का पता चलता हैं। शिक्षक अनेक गतिविधियों एवं उपकरणों के माध्यम से यह पता करते हैं कि बच्चों ने क्या सीखा एवं उन्हें सीखने में कहाँ मदद की आवश्यकता है। इस प्रकार वे बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को आसान बनाते हैं।

- यह छात्रों के लिए सीखने की प्रक्रिया को आसान बनाता हैं।
- यह छात्रों द्वारा सीखने के क्रम में आने वाली कठिनाइयों का पता लगाने में सहायक हैं।
- इसके द्वारा सीखने के दौरान छात्रों को होने वाली कठिनाइयों को कम किया जाता हैं।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य – सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

- विभिन्न विषयों में निश्चित समय उपरांत बच्चों की प्रगति जानना।
- बच्चों के व्यवहार में हुए परिवर्तनों का पता लगाना।
- प्रत्येक बच्चे को सीखने और समुचित विकास में मदद करना।
- सृजनशीलता को बढ़ावा देना।
- बच्चे की व्यक्तिगत और विशेष जरूरतों का पता लगाना।
- बच्चों को सीखने में कठिनाइयों को दूर करने के लिए अध्यापन की उपयुक्त योजना बनाना।
- बच्चों की रुचि जानना।
- कक्षा में चल रही सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाना।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

- बच्चों में परीक्षा के प्रति व्याप्त भय व दबाव को दूर करना और व स्व–आकलन (Self Assessment) के लिए प्रोत्साहित करना।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के सिद्धांत –सतत एवं व्यापक मूल्यांकन निम्नलिखित आधारभूत सिद्धांत पर आधारित हैं –

- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन तथा सीखने की प्रक्रिया साथ–साथ चलता है। इसमें बच्चे का मूल्यांकन सीखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराने के बाद ही किया जाता है।
- बच्चे की प्रगति की तुलना उसके स्वयं की पिछली प्रगति से की जानी चाहिए न कि अन्य बच्चों की प्रगति से।
- बच्चे के सीखने की गति एवं क्षमता के अनुसार अलग–अलग गतिविधियों का उपयोग किया जाना चाहिए ताकि वे अपनी क्षमता के अनुसार सीख सके।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के क्षेत्र – सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के दो मुख्य क्षेत्र निम्नलिखित हैं –

- संज्ञानात्मक क्षेत्र
- सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र

1. संज्ञानात्मक क्षेत्र – इसमें बच्चों को पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों का मूल्यांकन किया जाता है जो बच्चों के मानसिक विकास में सहायक होते हैं। संज्ञानात्मक क्षेत्र का आकलन दो प्रकार से किया जाता है।

- संरचनात्मक मूल्यांकन (Formative Evaluation)
- योगात्मक मूल्यांकन (Summative Evaluation)

2. सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र – इसके अंतर्गत सह–पाठ्यक्रमगतिविधियों जैसे खेलकूद, योग, साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, सहयोग, अनुशासन, अभिवृत्ति आदि को शामिल किया जाता है।

Unit :– 1.5 Different teaching methodology of subject areas in inclusive schools – teaching in regular schools where children with ASD, SLD, ID are included-Use of UDL to teach in regular elementary class (समावेशी विद्यालयों में विषय क्षेत्रों की विभिन्न शिक्षण पद्धति – में अध्यापन नियमित स्कूल जहां एएसडी, एसएलडी, आईडी वाले बच्चे शामिल हैं। प्राथमिक कक्षा में पढ़ाने के लिए यूडीएल का उपयोग)

UP066 USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

लर्निंग के लिए यूनिवर्सल डिजाइन लागू करना (यूडीएल) – शिक्षार्थियों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए प्रभावी निर्देश प्रदान करने के लिए शिक्षकों को सक्षम करने के लिए, प्रभावी निर्देशों और मूल्यांकन रणनीतियों को समझने की जोरदार अनुशंसा की जाती है। बहरहाल, सभी विविध शिक्षार्थियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक प्रभावी तरीका खोजना एक चुनौती है। सभी शिक्षार्थियों की सफलता सुनिश्चित करने के लिए कक्षा सुधार की तत्काल आवश्यकता है। लर्निंग के लिए यूनिवर्सल डिजाइन (यूडीएल) का ढांचा और सिद्धांत इस जरूरत को पूरा कर सकते हैं क्योंकि योजना नई तकनीकों को लागू करके छात्रों के सीखने में सुधार की मांग करती है।

गुलाब एट अल ने कहा कि ''सीखने का समर्थन और शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम के बीच बातचीत द्वारा सुविधा प्रदान की जाती है''। वास्तव में, यदि एक शिक्षक व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप एक लचीला पाठ्यक्रम तैयार करता है, तो अकादमिक सफलता की संभावना बढ़ जाती है। तदनुसार, यूडीएल दिशानिर्देश लचीले विकल्प प्रदान करते हैं जिन्हें सभी विविध छात्रों का समर्थन करने के लिए पाठ्यक्रम और निर्देश में एकीकृत किया जा सकता है। यूडीएल के लिए रूपरेखा तीन मुख्य सिद्धांतों के आधार पर विकसित की गई थीः प्रतिनिधित्व के कई साधन प्रदान करना, कार्रवाई और अभिव्यक्ति के कई साधन प्रदान करना, और जुड़ाव के कई साधन प्रदान करना द्य जो जानबूझकर शिक्षार्थियों की एक विस्तृत श्रृंखला को लक्षित करते हैं।

जैसा कि विविध शिक्षार्थी आमतौर पर कक्षा में परिवर्तनशीलता लाते हैं, यूडीएल ढांचा यह परिभाषित करने पर केंद्रित है कि उनकी विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सीखने की प्रक्रिया को कैसे समायोजित किया जा सकता है। स्पष्टीकरण के लिए, यूडीएल ढांचा एक आकार–फिट–सभी समाधान के दृष्टिकोण को लागू नहीं करता है क्योंकि यह अब टिकाऊ नहीं है, यह स्वीकार करता है कि प्रत्येक शिक्षार्थी की अनूठी जरूरतें हैं और अलग–अलग सीखती हैं ।

हाल ही में, निर्देशात्मक वितरण पर जोर इस ओर स्थानांतरित हो गया है कि सेवाओं को कैसे वितरित किया जाता है बजाय इसके कि उन्हें कहां वितरित किया जाए। चूंकि यूडीएल शिक्षार्थियों की सभी जरूरतों को पूरा करने वाले समावेशी शिक्षण वातावरण बनाने पर ध्यान केंद्रित करता है, इसलिए यह विशेष शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रभावी दृष्टिकोण बन गया है। यूडीएल के सिद्धांत सभी शिक्षार्थी परिवर्तनशीलता के लिए प्रासंगिक और लागू होते हैं। यूडीएल ढांचे को लागू करके, शिक्षक एक ऐसा पाठ्यक्रम तैयार कर सकते हैं जो विकलांग छात्रों और सामान्य शिक्षा के छात्रों सहित सभी छात्रों का समर्थन करता है।

जैसा कि यूडीएल सभी शिक्षार्थियों के बारे में है, यह विविध आवश्यकताओं को पूरा करने और कक्षा में अंग्रेजी भाषा सीखने वालों, विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों और आत्मकेंद्रित अल्पसंख्यक छात्रों सहित कक्षा में प्रत्येक छात्र को लाभान्वित करने की योजना बनाई गई है। यूडीएल शिक्षण और मूल्यांकन को सुलभ और समावेशी बनाने का प्रयास करता है। प्रतिनिधित्व और अभिव्यक्ति के कई माध्यमों के माध्यम से जो सीखने के विभिन्न तरीकों को समायोजित करने के लिए सामग्री को विभिन्न तरीकों से प्रस्तुत करने की अनुमति देता है और शिक्षार्थियों को अपने ज्ञान को व्यक्तिगत तरीकों से प्रदर्शित करने की अनुमति देता

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

है। प्यावरण में संषोधन पर ध्यान केंद्रित करके, यूडीएल षिक्षार्थियों की विविध आवष्यकताओं के प्रबंधन के लिए एक स्थायी दृश्टिकोण का गठन करता है हैरिसन न केवल इसकी रणनीतियाँ और लक्ष्य विकलांग छात्रों के लिए व्यापक पहुँच की अनुमति देते हैं, बल्कि वे ''सहस्राब्दी'' के एकीकरण की अनुमति देते हैं षिक्षार्थियों'',उच्च छात्र प्रतिधारण को प्रोत्साहित करते हैं, स्नातक की उच्च दरों की गारंटी देते हैं और अधिक इक्विटी और विविधता फोवेट और मोल के लिए सम्मान सीापित करते हैं

सीखने और आत्मकेंद्रित स्पेक्ट्रम विकार वाले छात्रों के लिए सार्वभौमिक डिजाइन – पिछले 15 वर्षों में ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकारों से पीड़ित छात्रों की संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई है। ऑटिज्म से पीड़ित छात्रों की संख्या के अलावा, पब्लिक स्कूलों और विशेष रूप से सामान्य शिक्षा कक्षाओं में शिक्षित होने वाले ऑटिज्म वाले व्यक्तियों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। कम से कम प्रतिबंधात्मक वातावरण में एएसडी वाले छात्र के लिए एक प्रभावी शिक्षा प्रदान करना कैसे संभव है, साथ ही अर्थपूर्ण जुड़ाव और ज्ञान की अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना? सीखने के लिए सार्वभौमिक डिजाइन इस प्रश्न का उत्तर प्रदान करता है। सीखने के लिए सार्वभौमिक डिजाइन एक ढांचा है जिसे कक्षा में सभी शिक्षार्थियों में सीखने को बढ़ावा देने के लिए अनुकूलित और उपयोग किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, जब एक शिक्षक एक पाठ तैयार कर रहा है, तो ऑटिज्म वाले छात्रों को मौखिक के बजाय लिखित प्रारूप के माध्यम से बातचीत में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए वॉयस थ्रेड बनाने पर विचार क्यों न करें। यह छात्र को इस तरह से पाठ में सक्रिय रूप से शामिल होने की अनुमति देता है जो छात्र के लिए सुविधाजनक हो और प्रशिक्षक को छात्र की रुचियों और क्षमताओं के बारे में जागरूक होने की अनुमति देता है।

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार वाले छात्र अक्सर उसी तरह नहीं सीखते हैं जैसे उनके आम तौर पर विकसित साथियों। शिक्षा के लिए एक पारंपरिक दृष्टिकोण अक्सर एएसडी वाले छात्र को सीखने के लिए अपनी वास्तविक क्षमता को अधिकतम करने की अनुमति नहीं देता है। एएसडी की सीखने की क्षमता के साथ एक छात्र को अधिकतम करने के लिए ताकत को भुनाना महत्वपूर्ण है। सीखने के लिए सार्वभौमिक डिजाइन छात्रों की सीखने की क्षमता को अधिकतम करने के लिए शिक्षकों को ढांचा प्रदान करता है।

Unit :– 2 Teaching Social and Environmental Science (सामाजिक और पर्यावरण विज्ञान पढ़ाना)

Unit :– 2.1 Aims, objectives and importance of teaching Social and environmental Science (सामाजिक और पर्यावरण विज्ञान पढ़ाने के उद्देश्य, महत्व)

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

सामाजिक विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य – सामाजिक अध्ययन पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को अपने पर्यावरण का ज्ञान, मानवीय सम्बन्धों को समझने की योग्यता, समाज में घट रही घटनाओं के बीच सम्बन्धों की खोज करने की क्षमता, अभिवृत्तियों तथा मूल्यों विशेषकर संवैधानिक मूल्यों का विकास जो कि व्यक्तियों, राज्य, राष्ट्र, और विश्व के मामलों में बुद्धिमत्तापूर्वक भाग लेने के लिए अपरिहार्य है, प्राप्त करने में सक्षम बनाना है। विवेकशील नागरिक और भावनात्मक एकीकरण के लिए सामाजिक विज्ञान का अध्ययन आवश्यक है।

- समझने के लिए जरूरी बौद्धिक तरीकों, अवधारणाओं, विश्लेषण के तरीकों को सीखना व अपनाना ।
- सामाजिक विज्ञान में शामिल इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र के विषयवस्तुओं का समग्रता में अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों में सामाजिक पर्यावरण की समझ दे।
- सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक पहलूओं को समझना, समस्याओं की पहचान करना एवं समाज की बेहतरी के लिए समाधान की ओर बढ़ पाना।
- बेहतर और न्यायसंगत समाज की कल्पना करने और सामाजिक बदलाव के उचित तरीकों पर विचार करने में मदद करना है।
- संविधान में उल्लेखित मूल्यों के महत्व को समझना, उन्हें स्थापित करना। इन मूल्यों को बनाए रखने के लिए समाज में शान्ति, सद्भावना, सामंजस्य और एकजुटता के लिए प्रयत्न कर पाना।
- बेहतर समाज की प्राप्ति के लिए आदर्श समाज के मानकों पर वास्तविक समाज का आलोचनात्मक विश्लेषण कर पाना।
- बच्चों में सामाजिक मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता पैदा करना। लिंग (जेंडर)–संवेदनशीलता, सामाजिक वर्गो और हर प्रकार की असमानताओं के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।
- विविध मतों, जीवन शैलियों एवं सांस्कृतिक रीति–रिवाजों के सम्मान करने वाले नजरिए का विकास करना।
- हम जिस समाज में रहते हैं, उसकी संरचना, शासन की संरचना–प्रबंधन को समझना, ताकि एक बेहतर समाज के निर्माण में विवेक से निर्णय लेते हुए ,योगदान दे सके।
- आधुनिक और समकालीन भारत एवं विश्व के अन्य क्षेत्रों के उदाहरणों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन व विकास की प्रक्रियाओं को समझना।
- अपनें क्षेत्र, प्रदेश और देश का अध्ययन वैश्विक संदर्भ में करने के लिए बच्चों को प्रेरित करना।
- मानव जाति और अन्य जीवों के निवास के रूप में पृथ्वी की अवधारणा को समझना।
- पर्यावरण और संसाधनों के टिकाऊ व न्यायपूर्ण उपभोग को पर्यावरण के संरक्षण की आवश्यकता के संदंर्भ में समझ पाना।

शिक्षा आयोग, 1966: सामाजिक अध्ययन (सामाजिक विज्ञान) पढ़ाने का उद्देश्य मदद करना है

छात्रों को अपने पर्यावरण का ज्ञान, मानवीय संबंधों की समझ और समुदाय के मामलों में बुद्धिमानी से भागीदारी के लिए कुछ निश्चित दृष्टिकोण और मूल्य महत्वपूर्ण हैं,

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

राज्य, राष्ट्र और विश्व। सामाजिक अध्ययन/सामाजिक विज्ञान का प्रभावी कार्यक्रम आवश्यक है

अच्छी नागरिकता और भावनात्मक एकीकरण के विकास के लिए भारत।

शिक्षण सामाजिक विज्ञान के उद्देश्य के कुछ निश्चित लक्ष्यों या उद्देश्यों को निर्धारित करने के लिए निश्चित रूप से कुछ ठोस आधार या आधार होना चाहिए

सामाजिक विज्ञान का शिक्षण – ऐसे मैदानों और ठिकानों की तलाश हमें आसानी से विभिन्न की ओर ले जा सकती है –

सामाजिक विज्ञान के अध्ययन के माध्यम से निकाले गए मूल्य या लाभ। यह साधारण कारण है कि दोनों

लक्ष्यों और मूल्यों को अन्योन्याश्रित और एक दूसरे के पूरक के रूप में माना जाता है।

1. अच्छी नागरिकता का विकास : सामाजिक विज्ञान विषय का अध्ययन अनिवार्य रूप से होना चाहिए। प्रभावी और कुशल नागरिकों के रूप में बढ़ने और विकसित करने के लिए युवाओं की मदद करने में योगदान दें। उन्हें उनके अधिकारों और विशेषाधिकारों के साथ–साथ कर्तव्यों और के बारे में ठीक से बताया जाना चाहिए। एक लोकतांत्रिक देश के नागरिकों के रूप में जिम्मेदारिया दी जानी चाहिए। अपने समाज की जरूरतों और समस्याओं के बारे में भी जागरूक किया। देश के रूप में के विकास के लिए पर्याप्त देखभाल की जानी चाहिए । वांछित ज्ञान, समझ, कौशल, रुचियां और दृष्टिकोणबच्चों के बीच उन्हें विकासात्मक योजनाओं में मदद करने के लिए सक्षम बनाने के लिए और देश की परियोजनाओं।

2. सामाजिक चरित्र का विकास : सामाजिक विज्ञान का अध्ययन सामाजिकता और सामाजिक के समुचित विकास में मदद करनी चाहिए। बढ़ते बच्चों के बीच चरित्र के लिए आवश्यक सभी चीजें बच्चे को उसके उचित सामाजिक विकास में और उसे एक उपयोगी में बदलना शिक्षण के माध्यम से समाज के सदस्य को ठीक से प्रदान किया जाना चाहिए और सामाजिक विज्ञान की शिक्षा।

3. बौद्धिक एवं मानसिक विकास : सामाजिक विज्ञान के अध्ययन में योगदान देना चाहिए। बच्चों का उचित बौद्धिक और मानसिक विकास। पाठ्यक्रम के साथ–साथ के तरीके सामाजिक विज्ञान शिक्षण को उनके विभिन्न मानसिक संकायों जैसे विकास के लिए ठीक से निर्धारित किया जाना चाहिए। सोच, तर्क, कल्पना, अवलोकन, स्मृति और निर्णय लेना।

4. सही प्रकार के व्यवहार और आचरण का विकास : अच्छे आचरण और सदाचार प्रमुख हैं समय की जरूरतें। हम निश्चित रूप से अपने बच्चों से चरित्र और सिद्धांतों के व्यक्ति के रूप में विकसित होने की आकांक्षा रखते हैं। सामाजिक विज्ञान से संबंधित विषय वस्तु और सीखने के अनुभवों में पर्याप्त क्षमता है। बढ़ते बच्चों को सही प्रकार का व्यवहार और आचरण प्राप्त करने में मदद करना और उसके अनुसार शिक्षण करना सामाजिक विज्ञान के छात्रों को हमेशा सही प्रकार के व्यवहार में छात्रों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रखना चाहिए और आचरण।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

5. अपने परिवेश के साथ समायोजन करने की क्षमता विकसित करना : अपने भौतिक और सामाजिक समायोजन के साथ समायोजन करना पर्यावरण व्यक्तिगत या सामाजिक कल्याण और प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक है। सामाजिक विज्ञान, जैसा कि हम जानते हैं, है पुरुषों और समाज और उनकी अंतःक्रियाओं के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया गया है और इस तरह इसके अध्ययन में पर्याप्त क्षमता है। छात्रों को उनके पर्यावरण के साथ समायोजन करने में मदद करने के लिए। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि अपने परिवेश के साथ समायोजन करने की क्षमता का विकास शिक्षण के उद्देश्यों में से एक के रूप में निर्धारित किया जाना चाहिए हमारे स्कूलों में सामाजिक विज्ञान।

6. सहयोग एवं अन्योन्याश्रय की भावना का विकास : परस्पर सहयोग, प्रेम, विश्वास और अन्योन्याश्रितता हमारे सामाजिक जीवन के मूल स्तंभ हैं। के पथ पर समाज या राष्ट्र चल सकता है। अपने नागरिकों के आपसी विश्वास और सहयोग की ताकत से अच्छी तरह से प्रगति करता है, लेकिन दूसरी ओर इसकी आपसी अविश्वास और मतभेद की भावना बनी रहने पर भविष्य बर्बाद हो सकता है।

7.स्वस्थ आदतों और सही व्यवहार का विकास : हमारे स्कूलों में सामाजिक विज्ञान का शिक्षण इसका उद्देश्य बच्चों में वांछनीय आदतों, रुचियों और दृष्टिकोणों का विकास करना भी है। नतीजतन, यह स्व–अध्ययन, स्वावलंबन, आत्म–नियंत्रण, आत्म–सम्मान, सहानुभूति, धैर्य, सहनशीलता, ईमानदारी, सच्चाई, परिश्रम,सम्मान दूसरों के व्यक्तित्व के लिए, आदि।

उद्देश्यः

1. ज्ञान और समझ के उद्देश्यः

- आवश्यक शर्तों, परिभाषाओं, अवधारणाओं, विषयों, और सामाजिक विषय के समुचित अध्ययन के लिए उपयोगी सामान्यीकरण विज्ञान।
- भौतिक और सामाजिक से संबंधित चीजें और घटनाएं वातावरण।
- पर्यावरण में मौजूद विभिन्न सामाजिक समस्याएं।
- बुनियादी मानवीय जरूरतों को पूरा करने के लिए उपलब्ध संसाधनों का उपयोग भोजन, वस्त्र और आवास से संबंधित।

पर्यावरण का अर्थ – पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है परि तथा आवरण। परि का अर्थ होता है– चारों तरफ तथा आवरण का अर्थ घेरा होता है। अर्थात हम कह सकते हैं कि वे सभी वस्तुएं जिससे हम चारों तरफ से घिरे होते हैं पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण उन सभी परिस्थितियों का मिश्रण है जो जीवो के उसकी प्रजाति तथा उसके विकास एवं उसके जीवन तथा मृत्यु को प्रभावित करते हैं।

पर्यावरण की परिभाषा – हमारे आसपास की वे सभी वस्तुओं में जिनसे हम गिरे हुए होते हैं पर्यावरण कहलाती है।

पर्यावरण के घटक – पर्यावरण की मुख्य रूप से 2 घटक होते हैं –

जैविक घटक तथा अजैविक घटक

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

अजैविक घटक – (Abiotic Components) क्या है? अजैविक घटक के अंतर्गत भौतिक तथा रासायनिक पदार्थ आते हैं जो सजीवों को प्रभावित करते हैं। जैसे :– तापमान, जल, नमी, प्रकाश, मिट्टी, गैस, खनिज तत्व, इत्यादि अजैविक घटक के अंतर्गत आते हैं।

जैविक घटक – (Biotic Components) क्या है? पर्यावरण के जैविक घटक के अंतर्गत सभी जीवधारी आते हैं जो आपस में अजैविक घटकों से अंतः क्रियात्मक संबंध रखते हैं। जैसे :– पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, कीट, सूक्ष्मजीव, मनुष्य इत्यादि सभी पर्यावरण के जैविक घटक हैं।

पर्यावरण शिक्षण का महत्व :–

- पर्यावरण शिक्षण हमें पर्यावरण और मनुष्य की क्रियाओं के बीच के संबंध को दर्शाता है।
- पर्यावरण शिक्षण से हमें यह ज्ञात होता है कि पर्यावरण के घटक हमारे लिए क्यों आवश्यक है।
- पर्यावरण शिक्षण नागरिक चेतना को बढ़ाती है।
- पर्यावरण शिक्षण के द्वारा हम पर्यावरण को संतुलित रख सकते हैं।
- पर्यावरण शिक्षण हमें पर्यावरण की समस्याओं उनकी निदान और पर्यावरण का संरक्षण करना सिखाता है।
- पर्यावरण शिक्षण हमें प्रदूषण एवं उससे उत्पन्न जनित दुष्प्रभावों के बारे में बताता है।

पर्यावरण शिक्षण के उद्देश्य :–

- पर्यावरण के प्रति विद्यार्थी में जिज्ञासा, रुचि, कल्पना एवं स्मरण शक्ति का विकास कराना चाहिए।
- आसपास के पर्यावरण से विद्यार्थियों को परिचित करवाना चाहिए।
- प्राकृतिक विविधता एवं विविधता के कारण को बताना चाहिए।
- विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील बनाना चाहिए।
- मनुष्य के जीवन पर पड़ने वाले पर्यावरणीय प्रभावों को बतानी चाहिए।
- कक्षा के ज्ञान को बालक के बाहरी जीवन से जोड़ा जाना चाहिए।
- पर्यावरण प्रदूषण एवं पर्यावरण संरक्षण के विषय में बच्चों को जानकारी देना चाहिए।
- पर्यावरण शिक्षण के माध्यम से बालकों में विभिन्न प्रकार के कौशलों का विकास करवाना चाहिए। जैसेः अवलोकन करना, रिकॉर्डिंग करना, वस्तुओं का विभेद करना, तुलना करना, वर्गीकरण करना, सर्वेक्षण करना, पोर्टफोलियो का निर्माण करना, इत्यादि।
- बालकों को रटकर सीखने पर नहीं बल्कि स्वयं करके सीखने पर बल दिया जाना चाहिए।

Unit :– 2.2 Curricular transaction of Social and environmental Science at elementary level (प्रारंभिक स्तर पर सामाजिक और पर्यावरण विज्ञान का पाठ्यचर्या संव्यवहार)

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

परिचय :– शिक्षा में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को संस्कृति प्रदान करना शामिल है। सतत विकास के लिए शिक्षा प्रणाली का मूल उद्देश्य 'एक नए आदमी की शिक्षा', 'सतत प्रकार की सोच का आदमी' एक समग्र विश्व दृष्टिकोण के साथ कॉस्मो–प्लैनेटरी चेतना का आदमी है, जिसके पास स्थिरता की संस्कृति है, उच्च सामाजिक–सांस्कृतिक जरूरतों और गहरे नैतिक नैतिक मूल्यों, जो मानव जाति के सामने आने वाले वैश्विक कार्यों को हल करने और स्थायी समाज के गठन को बढ़ावा देने में सक्षम हैं। शिक्षा का उद्देश्य शिक्षार्थियों को स्थानीय और विश्व स्तर पर सतत विकास को साकार करने की दिशा में काम करने की क्षमता और इच्छा के साथ सशक्त बनाना होना चाहिए, जिसमें पर्यावरण विकास (संज्ञानात्मक) के बारे में जागरूकता और ज्ञान शामिल हैय इच्छा, वांछनीय दृष्टिकोण, भावनाओं और आवश्यक मूल्यों (प्रभावी) को विकसित करनाय आवश्यक क्षमता और कौशल (कार्रवाई–उन्मुख) के साथ कार्य करने के लिए भी, जो महत्वपूर्ण सोच, प्रतिबद्धता, रचनात्मक समस्या को सुलझाने के कौशल और भागीदारी निर्णय लेने सहित निर्णय लेने की क्षमता को जन्म दे सकता है।

सतत विकास के लिए शिक्षा :– स्थिरता प्रबंधन के लिए एक सुविचारित लक्ष्य है जो इस धारणा के स्पष्ट परित्याग पर आधारित है कि प्राकृतिक संसाधन असीम हैं (पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग, 1987)। सतत विकास, जो कि एक जटिल अवधारणा है, की उत्पत्ति प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञानों में हुई है जिसे आज दुनिया के सामने आने वाली चुनौतियों के जवाब में अंतर्राष्ट्रीय संवाद के माध्यम से विकसित किया गया है। ब्रुंटलैंड आयोग (1987) के अनुसार, सतत विकास ''विकास है जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है''।

सतत विकास के पीछे एक मूल सिद्धांत यह विचार है कि आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय परिस्थितियां एक प्रमुख भूमिका निभाती हैं। एक उचित पारिस्थितिकी तंत्र के बिना, हमारी अपनी और आने वाली पीढ़ी के लिए एक बेहतर समाज और आर्थिक विकास को बनाए रखना असंभव है। इस प्रकार पर्यावरणीय आयाम को सतत विकास के लिए अंतिम सीमा माना जा सकता है। सामाजिक आयाम पारिस्थितिक तंत्र की सीमाओं को पार किए बिना सभी लोगों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करना है। आर्थिक आयाम सामाजिक और पर्यावरणीय रूप से स्थायी तरीके की सीमा के भीतर लक्ष्य को प्राप्त करने का एक साधन है। इसलिए सतत विकास के लिए शिक्षा (ESD) को केवल पर्यावरण से जुड़ा हुआ नहीं माना जा सकता है। यह सामाजिक और आर्थिक पहलू का भी विकास है।

प्रदूषण, वनों की कटाई, जैव विविधता की हानि, ओजोन छिद्र, ग्लोबल वार्मिंग... ये कुछ पर्यावरणीय समस्याएं हैं जिनका आज विश्व सामना कर रहा है। वे कहां से आए थे? जीवन के लिए आवश्यक सभी बुनियादी संसाधन पर्यावरण से आते हैं। यह पर्यावरण ही है जो उद्योगों को कच्चा माल, लोगों के लिए भोजन, परिवहन के लिए ईंधन आदि प्रदान करता है। पर्यावरण उस कचरे को भी अवशोषित करता है जो विकासात्मक गतिविधि पैदा करती है। अर्थात्, पर्यावरण विकासात्मक गतिविधि के लिए एक स्रोत और सिंक दोनों है। जिस तरह से लोग पर्यावरण के साथ बातचीत करते हैं, उसके स्वास्थ्य और कल्याण को प्रभावित करते हैं। पर्यावरण संसाधनों की अधिकता से पर्यावरण का क्षरण होता है। आज की कई पर्यावरणीय समस्याएं हमारे प्राकृतिक संसाधनों के इस अति प्रयोग औरध्या दुरुपयोग के कारण उत्पन्न हुई हैं। इन सभी समस्याओं का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। पर्यावरणीय समस्याओं के अल्पकालिक और

दीर्घकालिक दोनों प्रभाव हो सकते हैं। उदाहरण के लिए। वनों की कटाई का अल्पकालिक प्रभाव यह हो सकता है कि स्थानीय समुदायों को ईंधन की लकड़ी और चारा खोजने में कठिनाई हो। दीर्घकालिक प्रभाव मिट्टी का कटाव, वाटरशेड का नुकसान आदि हो सकते हैं।

मौजूदा पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने और नई समस्याओं को उत्पन्न होने से रोकने के लिए पर्यावरणीय कल्याण और मानव कल्याण के बीच संबंधों की समझ और सराहना की आवश्यकता होगी। हालाँकि, इनमें से कई लिंकेज पहली बार में स्पष्ट नहीं होते हैं। यहीं पर शिक्षा महत्वपूर्ण है। पर्यावरण और विकास के सरोकारों को लोगों के ध्यान में लाने के लिए, उन्हें दोनों के बीच के संबंधों को समझने में सक्षम बनाने के लिए, उन्हें उचित कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, और आवश्यक कार्रवाई करने के लिए आवश्यक कौशल से लैस करने के लिए, इन सबके लिए शिक्षा आवश्यक है।

जोहान्सबर्ग विश्व शिखर सम्मेलन :– सतत विकास पर जोहान्सबर्ग विश्व शिखर सम्मेलन (WSSD, 2000)। सतत विकास के लिए शिक्षा के दशक (डीईएसडी) का प्रस्ताव रखा, यह संकेत देते हुए कि शिक्षा और शिक्षा सतत विकास के दृष्टिकोण के केंद्र में है। यह वर्ष 2005–2014 को सतत विकास के लिए शिक्षा के लिए संयुक्त राष्ट्र दशक (यूएनडीईएसडी) मानता है। 2009 का हालिया कोपेनहेगन शिखर सम्मेलन भी वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन को कम करके जलवायु परिवर्तन को कम करने का एक प्रयास था। यूएनडीईएसडी के लक्ष्य हैंय सतत विकास के लिए शिक्षा में शिक्षण और सीखने की गुणवत्ता में वृद्धि करने के लिए भ्मे में हितधारकों के बीच नेटवर्किंग, लिंकेज, आदान–प्रदान और बातचीत की सुविधा प्रदान करनाय ईएसडी प्रयासों के माध्यम से देशों को प्रगति करने और सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों (एमडीजी) को प्राप्त करने में सहायता करनाय और शिक्षा सुधार प्रयासों में भ्मे को शामिल करने के लिए देशों को नए अवसर प्रदान करना। न्छक्मै का समग्र लक्ष्य हैः शिक्षा और सीखने के सभी पहलुओं में सतत विकास के सिद्धांतों, मूल्यों और प्रथाओं को एकीकृत करना। यह शिक्षा प्रयास व्यवहार में परिवर्तन को प्रोत्साहित करेगा जो पर्यावरणीय अखंडता, आर्थिक व्यवहार्यता और वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए एक न्यायपूर्ण समाज (यूनेस्को, 2005) के संदर्भ में अधिक स्थायी भविष्य का निर्माण करेगा।

सतत विकास पर जोहान्सबर्ग विश्व शिखर सम्मेलन (WSSD, 2000)। सतत विकास के लिए शिक्षा के दशक (डीईएसडी) का प्रस्ताव रखा, यह संकेत देते हुए कि शिक्षा और शिक्षा सतत विकास के दृष्टिकोण के केंद्र में है। यह वर्ष 2005–2014 को सतत विकास के लिए शिक्षा के लिए संयुक्त राष्ट्र दशक (यूएनडीईएसडी) मानता है। 2009 का हालिया कोपेनहेगन शिखर सम्मेलन भी वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन को कम करके जलवायु परिवर्तन को कम करने का एक प्रयास था। यूएनडीईएसडी के लक्ष्य हैं ESD में हितधारकों के बीच नेटवर्किंग, लिंकेज, आदान–प्रदान और बातचीत की सुविधाय सतत विकास के लिए शिक्षा में शिक्षण और सीखने की गुणवत्ता में वृद्धि को बढ़ावा देनाय ईएसडी प्रयासों के माध्यम से देशों को प्रगति करने और सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों (एमडीजी) को प्राप्त करने में सहायता करनाय और शिक्षा सुधार प्रयासों में भ्मे को शामिल करने के लिए देशों को नए अवसर प्रदान करना। न्छक्मै का समग्र लक्ष्य हैः शिक्षा और सीखने के सभी पहलुओं में सतत विकास के सिद्धांतों, मूल्यों और प्रथाओं को एकीकृत करना। यह शिक्षा प्रयास व्यवहार में परिवर्तन को प्रोत्साहित करेगा जो पर्यावरणीय

अखंडता, आर्थिक व्यवहार्यता और वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए एक न्यायपूर्ण समाज (यूनेस्को, 2005) के संदर्भ में अधिक स्थायी भविष्य का निर्माण करेगा।

यूनेस्को, UNDESD के कार्य प्रबंधक के रूप में अपनी भूमिका में, ESD की व्याख्या इस प्रकार करता हैय ईएसडी जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों को उन मुद्दों के लिए योजना बनाने, उनका सामना करने और समाधान खोजने के लिए तैयार करता है जो हमारे ग्रह की स्थिरता को खतरे में डालते हैं... स्थिरता के इन वैश्विक मुद्दों को समझना और संबोधित करना जो अलग–अलग राष्ट्रों और समुदायों को प्रभावित करते हैं, ये ईएसडी के केंद्र में हैं। मुद्दे सतत विकास के तीन क्षेत्रों – पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था से आते हैं। पानी और अपशिष्ट जैसे पर्यावरणीय मुद्दे हर देश को प्रभावित करते हैं, जैसे कि रोजगार, मानवाधिकार, लैंगिक समानता, शांति और मानव सुरक्षा जैसे सामाजिक मुद्दे। हर देश को आर्थिक मुद्दों जैसे गरीबी में कमी और कॉर्पोरेट जिम्मेदारी और जवाबदेही को भी संबोधित करना होगा। एचआईवी/एड्स, प्रवासन, जलवायु परिवर्तन और शहरीकरण जैसे प्रमुख मुद्दों ने वैश्विक ध्यान आकर्षित किया है जिसमें स्थिरता के एक से अधिक क्षेत्र शामिल हैं। इस तरह के मुद्दे अत्यधिक जटिल हैं और इसके लिए और अगली पीढ़ी के नेताओं और नागरिकों को समाधान खोजने के लिए व्यापक और परिष्कृत शैक्षिक रणनीतियों की आवश्यकता होगी।

ग्रहों की स्थिरता के लिए खतरा पैदा करने वाले जटिल मुद्दों से निपटने के लिए शिक्षित करना ईएसडी की चुनौती है। केवल शिक्षा सुधार से यह पूरा नहीं होगा। इसके लिए समाज के कई क्षेत्रों (यूनेस्को, 2005) से एक व्यापक और गहरा प्रयास करना होगा।

एनसीईआरटी (2000) ने प्रारंभिक स्तर पर ईई को एक अलग विषय के रूप में अनुशंसित किया है। 21 जनवरी 2003 को, यूएनईपी ने दक्षिण एशिया के लिए पर्यावरण रिपोर्ट की स्थिति की शुरुआत की। इसने पाँच प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दों की पहचान की– आजीविका सुरक्षा, पर्यावरणीय आपदाएँ, औद्योगीकरण, शहरीकरण और विविधता हानि। स्थिरता प्राप्त करने के लिए, सतत विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र प्रभाग ने निम्नलिखित क्षेत्रों को सतत विकास के दायरे में आने के रूप में सूचीबद्ध किया है जिन पर अधिक विचार करने की आवश्यकता हैः

ईएसडी को पाठ्यपुस्तकों में एकीकृत किया जाना चाहिएः शिक्षा अपने समकालीन विकास में भविष्य के उद्देश्य से होनी चाहिए,

''पूर्वाभास'' और एक निश्चित तरीके से बनता है और लोगों की भावी पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करता है। इसका मतलब है कि शिक्षा सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन के लिए प्रत्याशित होनी चाहिए, यह वांछनीय स्थायी भविष्य का निर्माण करे। लेकिन शिक्षा प्रणाली के पुराने संगठनात्मक रूपों में ऐसे विचारों को साकार नहीं किया जा सका। हमें नए संगठनात्मक रूपों और शैक्षिक संस्थानों की आवश्यकता है जो मोबाइल, सहक्रियात्मक, रचनात्मक, भविष्योन्मुखी हों – जो शिक्षा के नए उद्देश्यों और नए ऐतिहासिक कार्यों के कार्यान्वयन को प्रदान कर सकें। इसके लिए यह आवश्यक है कि जब भी संभव हो सतत विकास के सिद्धांतों पर समाज के जीवन के सभी क्षेत्रों को शामिल किया जाए। ''शिक्षा सतत विकास को बढ़ावा देने और पर्यावरण और विकास के मुद्दों को संबोधित करने के लिए लोगों की क्षमता में सुधार के लिए महत्वपूर्ण

है ... यह पर्यावरण और नैतिक जागरूकता, मूल्यों और दृष्टिकोण, कौशल और व्यवहार को स्थायी विकास के अनुरूप और प्रभावी सार्वजनिक भागीदारी के लिए महत्वपूर्ण है। निर्णय लेना'' (एजेंडा 21 का अध्याय 36, रियो घोषणा 1992)।

जो आज किंडरगार्टन या प्राथमिक विद्यालय में हैं वे कल के निर्णयकर्ता हैं और वे ही होंगे जो आवश्यक बदलाव करेंगे। ESD के लिए सभी स्तरों पर सामग्री विकसित करने की आवश्यकता है, न केवल शिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए, बल्कि अन्य के लिए भी ईएसडी हितधारक (यानी सरकारी अधिकारी, गैर–सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि, प्रशासक और व्यापारिक नेता)। अधिकांश देशों में, ईएसडी उपकरणों और सामग्रियों के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए एक राष्ट्रीय रणनीति का अभी भी अभाव था। ईएसडी से संबंधित मुद्दों पर शोध की आवश्यकता के बावजूद इस संबंध में बहुत कम किया गया था।

पाठ्यक्रम और शिक्षण कार्यक्रमों में एक स्थायी भविष्य के लिए शिक्षा के उद्देश्यों, अवधारणाओं और सीखने के अनुभवों को एकीकृत करना सुधार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, वास्तव में: ''स्थिरता के लिए शिक्षा का एक मूल आधार यह है कि जिस तरह जीवन में पूर्णता और अन्योन्याश्रितता है इसके सभी रूपों, इसलिए इसे समझने और इसकी निरंतरता सुनिश्चित करने के प्रयासों में एक एकता और पूर्णता होनी चाहिए। यह अंतःविषय जांच और कार्रवाई दोनों की मांग करता है। यह निश्चित रूप से पारंपरिक विषयों के भीतर काम करने का अंत नहीं है। एक अनुशासनात्मक फोकस बड़ी सफलताओं और खोजों के लिए आवश्यक जांच की गहराई की अनुमति देने में अक्सर सहायक, यहां तक कि आवश्यक भी होता है''।

जैक्सन (2001) का कहना है कि स्कूल की पाठ्य पुस्तकों में प्रस्तुत पर्यावरण शिक्षा कई विरोधाभासों को प्रकट करती है और इन्हें स्कूल की पाठ्यपुस्तकों द्वारा प्रस्तुत वर्तमान विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बारे में मान्यताओं पर सवाल उठाए बिना हटाया नहीं जा सकता है। जिस चीज की जरूरत है, वह हमारे वर्तमान विश्व दृष्टिकोण में एक मूलभूत परिवर्तन है, जिसमें 'नए विज्ञान', सिस्टम साइंस या पारिस्थितिक विज्ञान के आकार में काम करने वाले सिद्धांतों का एक अधिक प्रभावी सेट है। अयंगर एस (2007) ने सुझाव दिया कि ईएसडी की ओर शिक्षा को फिर से उन्मुख करना एक ऐसा प्रस्ताव है जो उपयोगी है, लेकिन प्रत्येक देश में और अलग–अलग तरीके से सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। ईएसडी को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना चाहिए या इसे अलग से पढ़ाया जाना चाहिए, इस पर विचार करना होगा। उदाहरण के लिए एक खतरा है कि यदि इसे पाठ्यक्रम में शामिल किया जाता है तो इसका शिक्षण शिक्षक की सनक और सनक पर छोड़ दिया जाएगा, धर्माणी एस (2007) ने सुझाव दिया कि प्राथमिक स्तर पर अंतःविषय दृष्टिकोण को अपनाया जाना चाहिए और इसमें एकीकृत किया जाना चाहिए।

डक (2000) ने भारत जैसे देश के लिए एसडी के लिए कदम प्रस्तावित किए हैं, जिसमें स्कूली शिक्षा, यौन शिक्षा और जनसंख्या विस्फोट की समस्या से निपटने के लिए रोकथाम कार्यक्रम शामिल हैं, शिक्षा सच्चे लोकतांत्रिक, बहुलवादी और धर्मनिरपेक्ष समाज के लिए प्रेरणा प्रदान करती है, ज्ञान का व्यापक प्रसार करती है। जल, थल, वायु और जंगल जैसे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए शिक्षा द्वारा, आधुनिक ज्ञान के प्रसार के लिए आईसीटी का उपयोग इसलिए समीक्षा मौजूदा पाठ्यक्रम में ईएसडी को एकीकृत करने के महत्व का सुझाव देती है। हालांकि कई समितियों और आयोगों ने ईएसडी को एकीकृत

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

करने की आवश्यकता और इन अवधारणाओं को एकीकृत करने के लिए दिशानिर्देशों का भी सुझाव दिया है, लेकिन ऐसा कोई अध्ययन नहीं पाया गया जहां इसे मौजूदा पाठ्यक्रम में एकीकृत करने का प्रयास किया गया हो।

हालांकि कई समितियों और आयोगों ने ईएसडी को एकीकृत करने की आवश्यकता और इन अवधारणाओं को एकीकृत करने के लिए दिशानिर्देशों का भी सुझाव दिया है, लेकिन ऐसा कोई अध्ययन नहीं पाया गया जहां इसे मौजूदा पाठ्यक्रम में एकीकृत करने का प्रयास किया गया हो। इसलिए यह था ईएसडी की अवधारणाओं को एकीकृत करने की योजना बनाई और इसके संचालन के लिए कुछ गतिविधियों का सुझाव दिया।

अध्ययन का उद्देश्यः

1. सातवीं कक्षा के सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में सामग्री क्षेत्रों की पहचान करना जहां ईएसडी घटकों को एकीकृत किया जा सकता है।

2. विभिन्न पूछताछ और जांच का उपयोग करके ईएसडी एकीकृत सामग्री विकसित करना दृष्टिकोण और सीखने के डिजाइन।

शैक्षिक निहितार्थ –

- मौजूदा पाठ्यक्रम में म्ैक के एकीकरण के कई शैक्षिक निहितार्थ हो सकते हैं, उनमें से कुछ हैंः यह छात्रों, शिक्षकों और अन्य सभी हितधारकों के लिए कौशल विकसित करने में मदद कर सकता है।
- उनके पर्यावरण की रक्षा करना और विभिन्न संसाधनों के उपयोग को कम करना।
- यह शिक्षकों को खुद को उन कौशलों से लैस करने में मदद करता है जिन्हें दूसरे को हस्तांतरित किया जा सकता है।
- स्कूली विषय जिन्हें ईएसडी घटकों के साथ एकीकृत किया जा सकता है। यह उन गतिविधियों की योजना बनाने में मदद करता है जो विद्यार्थियों के तत्काल प्रासंगिक हैं

यदि ईएसडी की अवधारणाओं को पाठ्यपुस्तकों में सार्थक रूप से एकीकृत किया जाता है, तो यह व्यक्तियों को जीवन में ऐसी पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियों का सामना करने पर तदनुसार कार्य करने में मदद कर सकता है।

Unit :– 2.3 Different Approaches and techniques of teaching Social and environmental Science (सामाजिक और पर्यावरण विज्ञान पढ़ाने के विभिन्न दृष्टिकोण और तकनीकें)

परिचय :– पिछले एक दशक में सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम सामग्री और पद्धति दोनों में काफी बदल गया है। संस्कृति की मान्यता, विभिन्न जातीय समूहों के अंतर ने सामाजिक अध्ययन की सामग्री और दृष्टिकोण को सीधे प्रभावित किया है। सामाजिक अध्ययन की प्रकृति यह है कि यह एक ऐसा अध्ययन है जहाँ मनुष्य की प्रकृति उसके ध्यान का प्रमुख केंद्र बिंदु है। सामाजिक अध्ययन इसलिए प्रासंगिक ज्ञान, मूल्यों और

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

कौशल के आसपास अपनी सामग्री का आयोजन करता है जो मनुष्य के व्यापक क्षेत्र का निर्माण करता है। इस विषय को हमारे युवाओं को सामाजिक बनाने के लिए अपनाए गए एक प्रमुख अनुशासन के रूप में भी देखा गया है और प्रमुख सामाजिक शिक्षा लक्ष्यों की दिशा में प्रगति को बढ़ावा देने के साधन के रूप में कार्य किया गया है, जिन्हें जोर देने के लिए पहचाना गया है – नागरिक कर्तव्य या नागरिक भागीदारी कौशल का विकास, वांछनीय दृष्टिकोण का अधिग्रहण और मूल्य, अनुशासित जीवन आदि। इसलिए सामाजिक अध्ययन का दायरा उस स्तर पर निर्भर करता है जिसे कोई कवर करना चाहता है। इसके दायरे में यह निर्धारित करना शामिल है कि सामाजिक अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न घटक सामग्री के कौन से पहलू सबसे अधिक मूल्यवान होंगे। इसलिए यह स्पष्ट है कि सामाजिक अध्ययन अपने स्वभाव से ही एक गतिशील अनुशासन है जो व्यापक है और इसकी उम्मीद नहीं की जा सकती है। दायरे में निश्चित रूप से तत्काल और दोनों शामिल हैं

सामग्री और कार्यप्रणाली में दूर का वातावरण। उत्तम और ज्ञान के हस्तांतरण के लिए कुछ निर्देशात्मक रणनीतियों की आवश्यकता होती है सामाजिक अध्ययन शिक्षक को सामाजिक अध्ययन के शिक्षण के अपने दृष्टिकोण में दक्षता हासिल करने की आवश्यकता है। इन दक्षताओं में सामग्री क्षमता शामिल हैय शिक्षार्थी और क्षमता के लिए सामग्री संचारित करने में क्षमता निर्देशात्मक रणनीतियों की विविधता का उपयोग, और निर्देश के मूल्यांकन में क्षमता। शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में निर्देशात्मक संसाधनों के उपयोग के माध्यम से सार्थक सीखने को बढ़ाने के कुछ तरीके और साधन शामिल हैं।

शिक्षण सामाजिक अध्ययन के तरीके :– शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के सीखने को प्रभावित करने के इरादे से दूसरे व्यक्ति के साथ बातचीत करता है। यह शिक्षक और शिक्षार्थियों के बीच की परस्पर क्रिया है। शिक्षण, एक उपयोगी और व्यावहारिक कला के रूप में अंतर्ज्ञान, रचनात्मकता, सुधार और अभिव्यक्ति की मांग करता है, हालांकि एकीकृत सामाजिक अध्ययन से जुड़ी कई शिक्षण विधियां और तकनीकें हैं, शिक्षण का कोई एक तरीका नहीं है जो सभी सीखने की स्थितियों के अनुकूल हो। सामाजिक अध्ययन के एक शिक्षक को शिक्षण विधियों में नवाचारों से अवगत होना चाहिए। प्रभावी होने के लिए, सामाजिक अध्ययन के एक शिक्षक को सूचना का स्रोत होना चाहिए, और एक मार्गदर्शक, सीखने के अवसरों का एक आयोजक और एक व्यक्ति जो निम्नलिखित शिक्षण विधियों का उपयोग करके प्रभावी सीखने के लिए किसी भी वातावरण को प्रोत्साहित कर सकता है, अन्य के अलावा, उपलब्ध सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों के लिए।

सिमुलेशन विधि (simulation method) :– यह वास्तविक दुनिया की स्थिति का एक सरलीकृत मॉडल है। सिमुलेशन का उपयोग आमतौर पर उन अवधारणाओं और सिद्धांतों को पढ़ाने के लिए किया जाता है जो आसानी से देखने योग्य नहीं होते हैं जैसे कि सैद्धांतिक अवधारणाएं। वे हमारे अतीत और वर्तमान समाजों में विचारों, समस्याओं, मुद्दों और वास्तविकताओं को प्रस्तुत करने के गतिशील और जीवंत तरीके हैं। सिमुलेशन लैटिन शब्द ''सिमिलिस'' से आया है जिसका अर्थ है, जैसा कार्य करना, सदृश होना। इसलिए यह अपेक्षा की जाती है कि इस पद्धति के माध्यम से एक ऐसी स्थिति निर्मित की जाएगी जिसमें गतिविधियों को इस तरह प्रस्तुत किया जाएगा जैसे कि वे वास्तविक जीवन हों। सिमुलेशन विधियों के तीन प्रमुख प्रकार हैं।

इनमें ऐतिहासिक सिमुलेशन, सिमुलेशन गतिविधियां और सिमुलेशन गेम शामिल हैं। ऐतिहासिक अनुकरण नाटकीयताएं हैं जिनमें पिछली घटनाओं को फिर से जीवंत किया जाता है और वास्तविक पात्रों को चित्रित किया जाता है। शैक्षिक उद्देश्य के लिए सिमुलेशन गेम या निर्देशात्मक गेम का उपयोग किया जाता है। वे ऐसी गतिविधियाँ हैं जिनमें नियम, प्रतियोगिताएं और खिलाड़ी शामिल होते हैं। खेल का परिणाम संयोग से कम और खिलाड़ियों द्वारा किए गए निर्णय से अधिक निर्धारित होता है। इस प्रकार, सिमुलेशन गेम व्यावसायिक रूप से बेचे जाने वाले बोर्ड गेम हैं जिनमें से ''एकाधिकार'' बहुत आम है। ऐसे अन्य खेल हैं जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक घटनाओं को मॉडल करते हैं, लेकिन ''एकाधिकार संपत्तियों को खरीदने, विकसित करने और किराए पर लेने का एक अनुकरण है। ऐसे अन्य खेल हैं जो आर्थिक संचालन, चुनाव प्रक्रियाओं, ऐतिहासिक लड़ाइयों, लघु शेयर बाजार संचालनों का अनुकरण कर सकते हैं। करियर पसंद आदि। ऐसा प्रतीत होता है कि ये खेल शिक्षार्थियों के दृष्टिकोण से निपटने में प्रभावी हैं।

सिमुलेशन छात्रों के लिए अत्यधिक प्रेरक होते हैं और जब उनका उपयोग किया जाता है तो वे रुचि बढ़ाते हैं। उनका उपयोग शिक्षण कौशल में किया गया है उदाहरण युद्ध की रणनीतियाँ। वे खेल में शामिल समूह (समूहों) को एक सामान्य और साझा अनुभव प्रदान करते हैं जिसका उपयोग सीखने को अधिक सार्थक और प्रभावी बनाने के लिए किया जा सकता है। विषय जो बहुत कठिन या सारगर्भित दिखते हैं जैसे। सिमुलेशन गतिविधियों के माध्यम से प्रदर्शित होने पर नैतिकता, लोकतंत्र, देशभक्ति, अनुयायी, नेतृत्व, संघर्ष पूर्वाग्रह आदि को समझा जा सकता है। सिमुलेशन पद्धति का उपयोग करने वाले शिक्षकों को पता होना चाहिए कि इसमें काफी समय लगता है और छात्र बहुत शोरगुल, अव्यवस्थित होते हैं और कभी–कभी उन्हें नियंत्रित करना बहुत मुश्किल साबित होता है। इसलिए, छात्रों को अनुकरण गतिविधियों के दौरान खुद को कैसे संचालित करना है, इसके लिए तैयार और प्रबुद्ध होना चाहिए। इसके लिए शिक्षक से पर्याप्त तैयारी और पाठ्यक्रम के लिए गतिविधियों के मूल्य और प्रासंगिकता की स्थापना की आवश्यकता होती है।

प्रयोगशाला विधि :– सामाजिक अध्ययन में प्रयोगशाला पद्धति में स्रोत सामग्री, पूरक संदर्भ, यांत्रिक उपकरणों, दृश्य–श्रव्य सहायक सामग्री और कई अन्य जीवन जैसी गतिविधियों को पाठ्यपुस्तक के निर्देशों के पूरक के लिए और प्रस्तुति और महारत की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए शामिल है। शिक्षण की प्रयोगशाला विधि किसी विशेष स्थान या विशेष कक्षा अवधि को नहीं, बल्कि एक गतिविधि को संदर्भित करती है। कार्यकलापएक नियमित कक्षा में, कक्षा के बाहर या विशेष रूप से डिजाइन किए गए कमरे में हो सकता है। इस विधि में ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षक के निर्देशन में छात्र ठोस वस्तुओं, उपकरणों आदि में हेरफेर करते हैं। चूंकि प्राथमिक और माध्यमिक दोनों विद्यालयों में सामाजिक अध्ययन का शिक्षण इकाइयों में किया जाता है, इसलिए प्रयोगशाला पद्धति ज्ञान और कौशल के अनुप्रयोग के अवसर प्रदान करती है। इस पद्धति के प्रभावी उपयोग के लिए आवश्यक सुविधाओं और उपकरणों की कमी के कारण इस पद्धति के लाभों को पूरी तरह से महसूस नहीं किया जा सकता है। इस पद्धति का उपयोग

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

सामाजिक अध्ययन के लगभग सभी विषयों के लिए किया जा सकता है। मुद्दों पर साक्षात्कार और चर्चाओं को वीडियो–टेप पर रिकॉर्ड किया जा सकता है और कक्षा में वापस चलाया जा सकता है।

पूछताछ विधि (Inquiry Method) :– पूछताछ या खोज विधि अलग–अलग सोच को प्रोत्साहित करती है, छात्रों को स्वयं जानकारी खोजने की अनुमति देती है और यह तार्किक रूप से मुद्दों की जांच करने में छात्रों का उत्साह पैदा करती है। पूछताछ पद्धति की प्रक्रिया में एक समस्या की पहचान, संभावित समाधान पर पहुंचने के लिए इन सूचनाओं का विश्लेषण और सामान्यीकरण के लिए समाधान का उपयोग करना शामिल है। छात्रों को देश में ईंधन की कमी, बिजली की कमी, कुछ वस्तुओं की कमी आदि के कारणों का पता लगाने की आवश्यकता हो सकती है। पूछताछ तकनीक का एक बहुत ही वांछनीय पहलू उच्च स्तर की सोच के उपयोग पर इसका जोर है।

परियोजना विधि :– पूछताछ या खोज पद्धति अलग–अलग सोच को प्रोत्साहित करती है, छात्रों को स्वयं जानकारी खोजने की अनुमति देती है और तार्किक रूप से मुद्दों की जांच करने में छात्रों का उत्साह पैदा करती है। पूछताछ पद्धति की प्रक्रिया में एक समस्या की पहचान, संभावित समाधान पर पहुंचने के लिए इन सूचनाओं का विश्लेषण और सामान्यीकरण के लिए समाधान का उपयोग करना शामिल है। छात्रों को देश में ईंधन की कमी, बिजली की कमी, कुछ वस्तुओं की कमी आदि के कारणों का पता लगाने की आवश्यकता हो सकती है। पूछताछ तकनीक का एक बहुत ही वांछनीय पहलू उच्च स्तर की सोच के उपयोग पर इसका जोर है।

एक परियोजना को एक छात्र द्वारा अपने अंतिम उत्पाद के लिए या छात्रों के एक समूह द्वारा एक छात्र की परियोजना की तुलना में बहुत बड़ा उत्पादन करने के लिए सहयोग किया जा सकता है। प्रोजेक्ट विधि में ठोस चीजें करना शामिल है और यह स्व–प्रेरित है प्रोजेक्ट विधि के लिए शिक्षक द्वारा अत्यंत सावधानीपूर्वक योजना बनाने की आवश्यकता होती है, लेकिन इसका उद्देश्य छात्रों को जानकारी के सभी स्रोतों का उपयोग करके बुद्धिमान तरीके से अपनी जानकारी का समन्वय करना है। ''सीखना कैसे सीखना है'' के लिए मौलिक है। सामाजिक अध्ययन के क्षेत्रों के उदाहरण जहां परियोजनाओं को क्रियान्वित किया जा सकता है, उनमें एक समूह कहानी लिखना, व्याख्या करना और नक्शे बनाना, एक घटना के लिए एक एल्बम बनाना जैसे विवाह या स्थापना समारोह शामिल हैं। परियोजना विधि भी हो सकती है। ''आदमी और उसका विश्वास'', ''राष्ट्र के निर्माता'' आदि जैसे विषयों के लिए उपयोग किया जाता है। शिक्षक की भूमिका छात्रों को मार्गदर्शन और प्रेरित करना है जो सामाजिक अध्ययन में अवधारणाओं को स्पष्ट करने में मदद कर सकते हैं। एक परियोजना को हतोत्साहित करना मुश्किल नहीं होना चाहिए। छात्रों और इसे पूरा करने में अधिक समय नहीं लगना चाहिए।

प्रदर्शन विधि – प्रदर्शन कुछ निश्चित घटनाओं को चित्रित करने के लिए डिजाइन की गई नियोजित क्रियाओं की श्रृंखला की पुनरावृत्ति है। छात्रों या शिक्षकों द्वारा प्रदर्शन प्रस्तुत किए जा सकते हैं। प्रदर्शन का उपयोग कुछ सूचनाओं को स्पष्ट करने के लिए होता है। कुछ सजीव दृष्टांत प्रस्तुत करके अध्ययन के लिए एक निश्चित विषय को प्रस्तुत करने के लिए भी प्रदर्शन का उपयोग किया जा सकता है। इसका उपयोग या तो सामाजिक अध्ययन में निर्देश की एक इकाई के लिए शुरुआती बिंदु के रूप में या एक ठोस निष्कर्ष प्रदान करने के लिए किया जा सकता है। प्रदर्शन के कई फायदे हैं। खासकर जब सामाजिक अध्ययन

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

उपकरणों की कमी हो। सांस्कृतिक पैटर्न जैसे किसी निश्चित जनजाति के पहनावे, संगीत, नृत्य आदि जैसे विषयों को प्रदर्शन द्वारा प्रभावी ढंग से पढ़ाया जा सकता है। एक अच्छा सामाजिक अध्ययन शिक्षक सावधानीपूर्वक नियोजित प्रदर्शनों के माध्यम से छात्रों की एक बड़ी संख्या को पढ़ा सकता है, जितना कि वह किसी अन्य विधि से नहीं कर सकता। यह शिक्षण के घंटे और सामग्री के मामले में किफायती है। हालांकि प्रदर्शन एक उपयोगी शिक्षण उपकरण है, इसका अंधाधुंध उपयोग या अन्य शिक्षण तकनीकों को छोड़कर नहीं किया जाना चाहिए।

प्रश्न और उत्तर विधि :– यह शिक्षकों द्वारा उपयोग की जाने वाली एक सामान्य शिक्षण पद्धति है। इस पद्धति में शिक्षक एक प्रश्न पूछता है और फिर प्रश्न का उत्तर देने वाले एक छात्र को पहचानता है। शिक्षक तब छात्र की प्रतिक्रिया पर मौखिक रूप से प्रतिक्रिया करता है। यह क्रम शिक्षक द्वारा प्रश्न पूछने और एक समय में एक छात्र द्वारा प्रश्न का उत्तर देने के साथ जारी रह सकता है। ऐसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है जहां दूसरे विद्यार्थी को पहले दिए गए उत्तर पर प्रतिक्रिया करने के लिए कहा जा सकता है। प्रश्न और उत्तर, इसलिए, एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षक एक प्रश्न पूछता है, एक छात्र प्रतिक्रिया करता है, शिक्षक तब प्रतिक्रिया करता है और एक अन्य प्रश्न पूछता है जिसका उत्तर दूसरे छात्र द्वारा दिया जाता है और इसी तरह। प्रश्न और उत्तर पद्धति का उपयोग पूरे पाठ या पाठ के भाग के दौरान किया जा सकता है। यह विधि छात्रों के ज्ञान की सीमा और गहराई का परीक्षण करने में मदद करती है। विधि पूरे पाठ के दौरान छात्रों और शिक्षकों दोनों को सक्रिय रखती है। इस पद्धति का उपयोग करने वाले सामाजिक अध्ययन के एक शिक्षक को ध्यान देना चाहिए कि इसके लिए पर्याप्त योजना और प्रबंधन की आवश्यकता है। एक सावधानीपूर्वक निर्देशित प्रश्न तकनीक छात्रों के तत्काल पर्यावरण के बारे में उत्तर प्राप्त कर सकती है। इसलिए, मनुष्य और उसका पर्यावरण, मनुष्य और उसकी आर्थिक गतिविधियाँ आदि जैसे विषयों को प्रश्न और उत्तर विधि के माध्यम से प्रभावी ढंग से पढ़ाया जा सकता है। उपयोग किए जाने वाले प्रश्न स्पष्ट, सटीक और असंदिग्ध होने चाहिए।

व्याख्यान विधि :– यह विधि शिक्षकों द्वारा सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली विधा है। यह उम्मीद करता है कि छात्र चुपचाप बैठकर विषय वस्तु के बारे में बात सुनेंगे। इस स्थिति में, छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे नोट्स बनाएं और कभी–कभी शिक्षक चॉकबोर्ड पर नोट्स लिख सकते हैं। अक्सर पाठ एक सारांश और कुछ संक्षिप्त प्रश्नों के साथ समाप्त हो सकता है। एक शिक्षक के पास व्याख्यान विधि का उपयोग करने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा जब विषय सार है। आस्था, कारण, मनुष्य और उसका विश्वास, अलौकिकता, न्याय आदि जैसे विषयों को व्याख्यान विधि के माध्यम से समझाया जा सकता है। इस पद्धति का उपयोग वहां किया जा सकता है जहां आवास और कर्मियों की कमी है। हालांकि यह एक बड़ी आबादी की जरूरतों को पूरा कर सकता है, लेकिन इसमें सीखने को बाल–केंद्रित के बजाय शिक्षक–केंद्रित बनाने का नुकसान है। इस पद्धति को अन्य विधियों और शिक्षण सहायक सामग्री के उपयोग के साथ जोड़े बिना एक पाठ नीरस हो जाता है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

समस्या–समाधान विधि :– यह विधि छात्रों को एक समस्या के बारे में सोचने, समस्या को समझने की कोशिश करने और पहचान की गई समस्या का समाधान खोजने के लिए अंत में जानकारी का मूल्यांकन करने में सक्षम बनाती है। विधि शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के उपयोग की मांग करती है। विधि यह मानती है कि विचार प्रक्रिया में एक व्यवस्थित प्रक्रिया होती है। विधि शिक्षार्थी का ध्यान गतिविधियों पर केंद्रित करती है जिसमें किसी विशिष्ट समस्या का तार्किक उत्तर खोजने के अंतिम लक्ष्य के साथ व्यवस्था, वर्गीकरण, छंटाई और तथ्यों के साथ बातचीत शामिल हो सकती है। ज्यादातर मामलों में, शिक्षकों को हल की जाने वाली समस्या के प्रकार को निर्धारित करने की समस्या का सामना करना पड़ता है। उन्हें इस तथ्य से निर्देशित होना चाहिए कि समस्या समाधान विधि बाल केन्द्रित होनी चाहिए। शिक्षक को इस संबंध में समस्या को प्रासंगिक और छात्रों के अनुभव के लिए आकर्षक बनाना चाहिए।

उसे छात्रों को स्वयं के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और किसी समस्या को हल करने की प्रक्रिया में उपलब्ध जानकारी की गहरी समझ हासिल करने में सक्षम होना चाहिए। समस्या–समाधान के चरण में इस स्थिति में छात्र को उस समस्या को बताने में सक्षम होना चाहिए जो उनके सामने आती है और समस्या को हल करने के संभावित तरीकों का प्रस्ताव करने में सक्षम होना चाहिए। सबसे उचित समाधानों को स्वीकार करने के उद्देश्य से संभावित समाधानों पर चर्चा होती है। स्वीकार्य सुझाव के आवेदन के माध्यम से उत्तर या समाधान निर्धारित किया जाता है। मूल समस्या और समाधान को फिर से कहा गया है। समस्या–समाधान पद्धति के उपयोग में दिलचस्प, मुद्दों और विचार करने योग्य समस्याओं में भोजन, परिवार, वित्तीय, कपड़े, परिवहन, सांस्कृतिक और सीखने की समस्याएं शामिल हैं। इस बात पर जोर देना उचित है कि बच्चे के लिए रुचि का एक स्वाभाविक बिंदु वह तरीका है जो प्रश्नों और समस्याओं को हल करने के लिए उत्पन्न करता है।

नाटकीयता विधि :– यह विद्यार्थियों द्वारा सीखी गई बातों को प्रोत्साहित करने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक है। यह एक स्वाभाविक तरीका है जिसके द्वारा छात्र अपने आसपास के जीवन के बारे में अपनी समझ को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करते हैं। विधि छात्रों को शारीरिक, भावनात्मक और मानसिक रूप से बहुत अधिक भागीदारी और भागीदारी की अनुमति देती है। ऐसी स्थिति में जहां कोई पाठ या विषय शुष्क है, नाटकीयता छात्रों के ध्यान और रुचि को बनाए रखने में प्रभावी रूप से मदद कर सकती है। नाट्यकरण में प्रत्यक्ष और सरल तकनीकें शामिल होती हैं जैसे कि खनन, प्ले लेट और रोल–प्लेइंग जिन्हें ऐसी तकनीकों के लिए आवंटित किया जा सकता है। शिक्षक उन छात्रों को शामिल कर सकता है जो अकादमिक कार्य में कम सक्रिय हैं। यह अवसर उनमें अपनेपन की भावना पैदा करेगा। प्रतिभागियों को यह जानने की अनुमति देने के लिए शिक्षक को पर्याप्त तैयारी करनी चाहिए कि कौन सा भाग खेलना है।

मंचन किए जाने वाले नाटक को प्रभावी और प्रासंगिक बनाने के लिए छात्रों की यथार्थवादी कल्पना पर काफी हद तक निर्भर होना चाहिए। दुर्भाग्य से, यह कल्पना प्रासंगिक होने के लिए कभी–कभी बहुत यथार्थवादी हो सकती है। जबकि विद्यार्थियों द्वारा लिखे गए नाटक उपयोगी होते हैं और अक्सर अभ्यास का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं, वे बहुत समय लेते हैं जो शिक्षक को लगता है कि वे उचित नहीं ठहराते हैं। फिर भी, नाट्यीकरण अन्य बातों के साथ–साथ, दूसरों की राय के सम्मान के लिए एक अवसर

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

प्रदान करता है, सह–अभिनेताओं के भीतर सहयोग का दृष्टिकोण, वांछनीय कौशल, आत्मविश्वास और आत्म–सम्मान का विकास, और छात्रों को खुद को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। .छात्रों को एक परिवार के कार्य, पिता या माता की भूमिका, ईमानदारी, नेतृत्व, अनुगमन आदि का नाटक करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है जो सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम के विषय हैं।

पर्यावरण विज्ञान पढ़ाने के दृष्टिकोण और पद्धति :–

शिक्षण रणनीतियाँ :– ''शिक्षण रणनीति एक पाठ के लिए सामान्यीकृत योजना है, जिसमें संरचना, निर्देश के लक्ष्यों के संदर्भ में वांछित शिक्षार्थी व्यवहार और रणनीति को लागू करने के लिए आवश्यक योजनाबद्ध रणनीति की रूपरेखा शामिल है। पाठ रणनीति पाठ्यक्रम की एक बड़ी विकास योजना का एक हिस्सा है। ''

ई. स्टोन्स और एस. मॉरिस।

शिक्षण के उद्देश्य को पूरा करने के लिए, यह अपेक्षा की जाती है कि शिक्षक ज्ञान को स्थानांतरित करने और मामले को बहुत शक्तिशाली और प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करने के लिए उनके पास उपलब्ध विभिन्न प्रकार के संसाधनों का उपयोग करें।

शिक्षण रणनीति के प्रकार – शिक्षण रणनीति को निम्नलिखित में विभाजित किया जा सकता है –

प्रकार –

1. **निरंकुश शैली** : शिक्षण रणनीतियों की निरंकुश शैली पारंपरिक है। निरंकुश शैली की रणनीति सामग्री केंद्रित है, शिक्षक अधिक सक्रिय रहते हैं और छात्र निष्क्रिय श्रोता होते हैं। मुख्य जोर प्रस्तुति पर है। ये रणनीतियाँ छात्र की क्षमताओं, रुचियों और शिक्षार्थी के व्यक्तित्व पर विचार नहीं करती हैं। इस शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षार्थी के लिए कोई स्वतंत्रता नहीं है। ये शिक्षण प्रक्रिया की अत्यधिक व्यक्तिपरक और पारंपरिक शैली हैं। उदा. व्याख्यान, ट्यूटोरियल आदि।

2. **अनुमेय शैली** : यह मुख्य रूप से बाल केंद्रित है, छात्र काफी हद तक सामग्री निर्धारित करते हैं। प्रभावी उद्देश्यों को मुख्य रूप से अनुमेय शैली की रणनीतियों द्वारा प्राप्त किया जाता है।

ये रणनीतियाँ छात्र और शिक्षक की अंतःक्रिया के लिए परिस्थितियाँ बनाती हैं और दोनों शिक्षण में सक्रिय रहती हैं। शिक्षण का आयोजन छात्र की रुचि, योग्यता और मूल्यों को ध्यान में रखकर किया जाता है। ये रणनीतियाँ विद्यार्थियों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करती हैं। उदा. परियोजना, समूह चर्चा, भूमिका, खेल, विचार–मंथन आदि।

मोटे तौर पर, सभी शिक्षण विधियों को 3 श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :

1. कहने की विधि (Telling Method) : इसमें व्याख्यान, ट्यूटोरियल प्रस्तुति इत्यादि शामिल हैं।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

2. प्रदर्शन विधि (Showing Method) : प्रदर्शन, परियोजना,सर्वेक्षण आदि

3. करने की विधि (Doing Method) :–प्रयोग, रोल प्ले आदि।

OBJECTIVES OF TEACHING METHODS (शिक्षण विधियों के उद्देश्य) :– शिक्षण विधियों के कुछ उद्देश्य इस प्रकार हैं:

- पर्यावरण विज्ञान में शिक्षण प्रक्रियाओं को इसके शिक्षण के उद्देश्यों द्वारा नियंत्रित किया जाना चाहिए। विशिष्ट लक्ष्य, उद्देश्य और इकाई की सामग्री की प्रकृति शिक्षण में उपयोग की जाने वाली विधियों को निर्धारित करती है।
- पर्यावरण विज्ञान शिक्षण के व्यापक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए उपयुक्त विधियों की आवश्यकता है। विधि रचनात्मक सोच, तर्क और आलोचनात्मक निर्णय का प्रशिक्षण देती है।
- ईवीएस के शिक्षण का लक्ष्य छात्रों की गहरी और व्यापक भागीदारी होनी चाहिए। व्याख्यान या प्रश्न उत्तर विधि के अलावा, छात्रों को विभिन्न प्रकार के सीखने के अनुभवों से अवगत कराया जाना चाहिए, जिसमें पुस्तक सीखना, अवलोकन, साक्षात्कार, सर्वेक्षण, व्याख्या, समीक्षा, रिकॉर्डिंग, रिपोर्टिंग और मूल्यांकन शामिल हैं।
- सीखने के अनुभवों को उस प्रकार के विकास और व्यवहार परिवर्तन के अनुरूप तैयार किया जाना चाहिए जो छात्र को एक प्रबुद्ध, गतिशील, उत्पादक और लोकतांत्रिक नागरिक बनाने के लिए लाया जाना चाहिए।

अच्छे शिक्षण के लक्षण (CHARACTERISTICS OF GOOD TEACHING METHOD) :– अच्छे शिक्षण की विभिन्न विशेषताएं हैं। ये नीचे दिए गए हैं:

1. समूह संबंधी अनुभव और गतिविधियां :– छात्रों के ज्ञान, समझ, आदतों, अभिवृत्तियों, कौशलों और व्यवहार को उत्पन्न करने के लिए विशेष रूप से तैयार की गई अच्छी विधि।

2. सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए गुंजाइश :– एक अच्छी पद्धति को बच्चे के व्यक्तित्व की रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए गुंजाइश प्रदान करनी चाहिए।

3. सामग्री में रुचियां :– एक अच्छी विधि से लोगों के मन में रुचियों की एक बड़ी श्रृंखला पैदा होनी चाहिए

4. जोर में बदलाव :– एक अच्छी विधि को सीखने के लिए जोर याद रखना चाहिए।

5. स्वाध्याय में प्रशिक्षण :– एक अच्छी विधि विद्यार्थियों को स्वअध्ययन की तकनीकों और व्यक्तिगत प्रयास से ज्ञान प्राप्त करने के तरीकों में प्रशिक्षित करना चाहिए।

6. अध्ययन में उत्तेजना और जागृति रुचि :– एक अच्छी विधि को आगे के अध्ययन और अन्वेषण की इच्छा को उत्तेजित करना चाहिए। एक अच्छी विधि को पर्यावरण विज्ञान की सामग्रियों और तकनीकों में रुचि जगानी चाहिए।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

दृष्टिकोण के प्रकार :– शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विभिन्न उपागमों का प्रयोग किया जाता है। ये नीचे दिए गए हैं –

1 संकल्पनात्मक उपागम :– इस उपागम में चीजों को उनके तंत्र, अनुप्रयोग आदि के संबंध में बहुत विस्तृत रूप में सीखा जाता है। सीखने के बाद व्यक्ति विस्तार रूप को अमूर्त रूप में कम करने में सक्षम होगा। सीखने के ऐसे तरीके को वैचारिक दृष्टिकोण कहा जाता है।

2 प्रक्रिया दृष्टिकोण :– इस दृष्टिकोण में, नई चीजें सीखने के लिए विभिन्न कौशल का उपयोग किया जाता है। इस्तेमाल किया जाने वाला कौशल उन चीजों पर निर्भर करेगा जिन्हें सीखा जाना है। पदार्थ की बेहतर समझ के लिए सभी कौशल सहायक होने के साथ–साथ उपयोगी भी हैं।

3 एकीकृत दृष्टिकोण :– एकीकृत दृष्टिकोण में वैचारिक दृष्टिकोण और प्रक्रिया दृष्टिकोण दोनों शामिल हैं एकीकृत दृष्टिकोण से बच्चे में बेहतर शिक्षा प्राप्त होगी।

4 गतिविधि दृष्टिकोण :– इस दृष्टिकोण में गतिविधि के माध्यम से नई चीजें सीखी जा सकती हैं। यह सीखने का सबसे अच्छा तरीका है क्योंकि इसमें सभी संज्ञानात्मक, प्रभावी और साइको–मोटर शामिल हैं।

पर्यावरण विज्ञान हैं :

1. व्याख्यान विधि
2. चर्चा पद्धति
3. परियोजना विधि
4. स्रोत विधि
5. पर्यवेक्षित अध्ययन

Unit :– 2.4 Application of technology in teaching in regular elementary school curriculum (नियमित प्रारंभिक विद्यालय पाठ्यक्रम में शिक्षण में प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग) – प्रारंभिक प्राथमिक कक्षा में शिक्षार्थियों को प्रौद्योगिकी के साथ एक शानदार शुरुआत के लिए तैयार करें। प्राथमिक छात्र न केवल प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के लिए उत्सुक हैं, बल्कि आश्चर्यजनक रूप से सक्षम भी हैं। छात्र पहले से कहीं अधिक तकनीक–प्रेमी हैं। वे माता–पिता के फोन, गेमिंग सिस्टम और अपने स्वयं के निजी उपकरणों के माध्यम से कक्षा के बाहर प्रतिदिन प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं। प्रारंभिक शिक्षा कक्षाएँ तैयार, इच्छुक और सीखने में सक्षम युवा दिमाग से भरी हुई हैं, जो नियरपोड को छात्रों के सीखने को नए, चुंबकीय मीडिया अनुभवों तक विस्तारित करने के लिए एक आदर्श संसाधन बनाता है।

प्राथमिक विद्यालय के छात्रों के लिए शिक्षा में प्रौद्योगिकी का उपयोग करना क्यों महत्वपूर्ण है?

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

बच्चे आपको चौंका सकते हैं। मुझे लगता है कि यही कारण है कि पहली कक्षा को पढ़ाने के नौ साल बाद भी मैं अपनी सीट के किनारे पर हूँ। यह इन्फोग्राफिक एवरीडे द्वारा प्रकाशित किया गया है। परिवार दिखाता है कि 12 वर्ष से कम आयु के 57% बच्चों ने शैक्षिक उद्देश्यों के लिए मोबाइल डिवाइस का उपयोग किया है। विचित्र रूप से पर्याप्त है, यह गलत धारणा प्रतीत होती है कि प्रौद्योगिकी प्रारंभिक शिक्षा कक्षाओं के लिए उपयुक्त नहीं है, और यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव रहा है कि यह गलत है। कक्षा में शिक्षण का उपयोग करने के कई लाभ हैं। प्रौद्योगिकी के साथ प्रारंभिक छात्रों को पढ़ाने से उन्हें अपनी गति से सीखने का अवसर मिलता है, उनकी व्यस्तता और भागीदारी बढ़ती है, उपकरणों और सॉफ्टवेयर के संचालन में उनके कौशल का निर्माण करने में मदद मिलती है, सीखने के मजेदार क्षण बनते हैं, और उन्हें भविष्य के करियर के लिए तैयार करते हैं।

प्रारंभिक कक्षा में प्रौद्योगिकी का उपयोग कैसे करें

1. इंटरएक्टिव गतिविधियाँ – एक साधारण क्लिक के साथ, युवा छात्र उन तरीकों से सीखने से जुड़ते हैं जो पेपर पेंसिल और कटिंग और ग्लूइंग से बहुत आगे निकल जाते हैं। आप अभी भी प्रौद्योगिकी के साथ अपने छात्रों के लिए व्यावहारिक और इंटरैक्टिव शिक्षण अनुभव बना सकते हैं। उन्हें डिजिटल ड्राइंग व्हाइटबोर्ड, ड्रैग एंड ड्रॉप गतिविधियों, आभासी वास्तविकता के अनुभवों और बहुत कुछ का उपयोग करने दें।

2. पढ़ने के लिए वीडियो और गतिविधियां – कक्षा में वीडियो की बढ़ती भूमिका इसे कल्पना और सूचनात्मक पाठ के साथ–साथ नवीनतम शैली बनाती है। इससे भी अधिक, युवा शिक्षार्थी दिलचस्प, इंटरएक्टिव वीडियो पर प्रतिक्रिया देते हैं। जब मैं नियरपोड के माध्यम से पढ़ाता हूं तो मेरे छात्रों को केवल बड़ी किताबों और एंकर चार्ट की तुलना में पढ़ने की अधिक अवधारणाएं याद रहती हैं। मेरे पढ़ने के कार्यक्रम ने मुझे अपने छात्रों को पात्रों की अवधारणा सिखाने का काम सौंपा।

3.Teaching phonics (नादविद्या सिखाना) :– प्राथमिक शिक्षक, यदि आपकी कक्षा के प्रत्येक छात्र को समान ध्वन्यात्मक कौशल की आवश्यकता है, तो अपने हाथ उठाएँ। अगर किसी ने हाथ उठाया तो शायद बाथरूम जाने के लिए था। यह मेरे साथ हर समय होता है जब मैं पढ़ा रहा होता हूँ! पहली कक्षा को पढ़ाकर मैंने जो सीखा है वह यह है कि नादविद्या व्यक्तिपरक है। प्रारंभिक शिक्षा कक्षाओं में, नादविद्या पढ़ने, वर्तनी और सांस लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शायद आखिरी नहीं, लेकिन करीब। कई छात्रों को अलग–अलग ध्वन्यात्मक कौशल की आवश्यकता होती है, जिसका अर्थ है कि हमें सभी छात्रों से उनके स्तर पर मिलना चाहिए। यहां उन गतिविधियों की एक छोटी सूची दी गई है, जिन्हें आप अपनी ध्वन्यात्मकता को बढ़ाने के लिए बना सकते हैं।

- चित्रों और शब्दों के साथ अक्षर–ध्वनि पत्राचार के लिए मिलान जोड़े सुविधा का उपयोग करें। विभिन्न वर्तनी पैटर्न।
- शब्दों को लेबल करने के लिए छात्रों के लिए डाटा का उपयोग करें और शब्दांश प्रकारों की पहचान करें (पहचानने में मदद करता है व्यंजन अक्षर बनाम स्वर)।
- ध्वनि पैटर्न का पालन करने वाले शब्दों की वर्तनी के बारे में सोचने और अभ्यास करने के लिए छात्रों के लिए सहयोगी बोर्ड का उपयोग करें।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

4. गणित में मल्टीमीडिया का उपयोग करना :– एक महान गणित पूरक सुंदरता की चीज है। कोई भी पाठ्यक्रम शिक्षकों को वह सब कुछ देने के लिए पर्याप्त नहीं है जिसकी उन्हें आवश्यकता होने पर आवश्यकता होती है। बस यही वह कठिन सच्चाई है जिसका हम सामना करते हैं। हालाँकि, गणित वीडियो, पाठ और गतिविधियों की लाइब्रेरी मेरे गणित निर्देश को सही दिशा में निर्देशित करने में मदद करती है। चुनने के लिए बहुत सारी गणित अवधारणाएँ हैं जो सभी मानकों के अनुरूप हैं, इसलिए मैं अपने छात्रों को सौंपी गई सामग्री पर सवाल नहीं उठाता। शिक्षकों को भागीदारों के साथ उच्च गुणवत्ता वाले वीडियो भी प्रदान करता है।

5. प्रौद्योगिकी के माध्यम से लेखन निर्देश :– लेखन का परिदृश्य पूरी तरह से मौलिक रूप में रूपांतरित हो गया है। मैं एक प्रारंभिक शिक्षा शिक्षक हूं जो पुराने और नए को मिलाने में विश्वास करता है। हां, मैं अभी भी प्राथमिक कागज, पेंसिल और पत्रिकाओं का उपयोग करता हूं, लेकिन मैं अपने पहले ग्रेडर को तकनीक के माध्यम से लिखने का अवसर भी देता हूं। पाठ बनाने से लेखन अधिक संवादात्मक और व्यावहारिक हो जाता है और साथ ही साथ युवा लेखकों को निर्देश देता है। सबसे बुरी बात यह है कि छात्रों को लिखने से नफरत हैय मेरे छात्रों को प्रौद्योगिकी के माध्यम से अपने लेखन को अभिव्यक्त करना अच्छा लगता है। छात्र अपने विचारों को रिकॉर्ड करते हैं, उन्हें ड्रा इट गतिविधि के साथ लिखते हैं, या अपने टाइपिंग कौशल का अभ्यास करते हैं। यह उन युवा लेखकों की मदद करता है जो इसे कागज पर लिखने का विचार नहीं कर सकते। चित्र और वीडियो केवल लेखन संकेत देने से अधिक लेखन विचारों को जगाते हैं। प्राथमिक ग्रेड के लिए कई व्याकरण और लेखन वीडियो और पाठ हैं ताकि लेखन को और अधिक व्यावहारिक और संवादात्मक बनाया जा सके।

Unit :– 2.5 Adaptations in Social and environmental Science for children with ASD, ID –SLD (एएसडी, आईडी और एसएलडी वाले बच्चों के लिए सामाजिक और पर्यावरण विज्ञान में अनुकूलन)

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (एएसडी), बौद्धिक विकलांगता (आईडी) और विशिष्ट सीखने की अक्षमता (एसएलडी) वाले बच्चों के लिए सामाजिक और पर्यावरण विज्ञान पाठ्यक्रम को अपनाने से इन छात्रों के लिए अधिक समावेशी और प्रभावी सीखने का अनुभव मिल सकता है। यहाँ पाठ्यक्रम को अनुकूलित करने के कुछ तरीके दिए गए हैं:

विजुअल एड्स :– चार्ट्स, ग्राफ्स और पिक्चर्स जैसे विजुअल एड्स का उपयोग करने से इन छात्रों को जानकारी को बेहतर ढंग से समझने और बनाए रखने में मदद मिल सकती है। उदाहरण के लिए, जल चक्र का एक दृश्य प्रतिनिधित्व एएसडी वाले छात्र को अवधारणा को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकता है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

हैंड्स–ऑन गतिविधियाँ :– हैंड्स–ऑन गतिविधियाँ ैस्क या प्क वाले छात्रों के लिए एक ठोस, अनुभवात्मक सीखने का अनुभव प्रदान कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, पारिस्थितिक तंत्र का अध्ययन करने के लिए एक टेरारियम बनाने से छात्रों को पारिस्थितिकी तंत्र में विभिन्न प्रजातियों के बीच संबंधों को बेहतर ढंग से समझने में सहायता मिल सकती है।

सामाजिक कौशल प्रशिक्षण :– सामाजिक कौशल प्रशिक्षण को पाठ्यक्रम में शामिल करने से एएसडी वाले छात्रों को सामाजिक अंतःक्रियाओं को बेहतर ढंग से समझने और नेविगेट करने में मदद मिल सकती है। उदाहरण के लिए, रोल–प्लेइंग गतिविधियाँ छात्रों को सुरक्षित और नियंत्रित वातावरण में सामाजिक कौशल का अभ्यास करने में मदद कर सकती हैं।

अनुकूली तकनीक :– सहायक तकनीक जैसे टेक्स्ट–टू–स्पीच सॉफ्टवेयर, वर्ड प्रेडिक्शन सॉफ्टवेयर और वॉयस रिकग्निशन सॉफ्टवेयर एसएलडी या आईडी वाले छात्रों को पाठ्यक्रम तक बेहतर पहुंच बनाने में मदद कर सकते हैं।

कक्षा संरचना में संशोधनः अधिक संरचित, पूर्वानुमेय दिनचर्या को शामिल करने के लिए कक्षा संरचना को संशोधित करने से एएसडी वाले छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में अधिक सहज और व्यस्त महसूस करने में मदद मिल सकती है। उदाहरण के लिए, नियमित विराम शामिल करने या दृश्य कार्यक्रम का उपयोग करने से इन छात्रों को अपने समय और अपेक्षाओं को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने में मदद मिल सकती है।

पाठ्यक्रम में ये अनुकूलन करके, शिक्षक एएसडी, आईडी और एसएलडी वाले छात्रों को सामग्री को बेहतर ढंग से समझने और संलग्न करने में मदद कर सकते हैं, जिससे अधिक सकारात्मक और प्रभावी सीखने का अनुभव हो सकता है।

Unit 3: Teaching Mathematics (गणित पढ़ाना)

Unit :– 3.1 Role and Importance of teaching Mathematics, in day–to–day living- (दैनिक जीवन में गणित शिक्षण की भूमिका और महत्व)

शिक्षा द्वारा ही एक संपन्न समाज की आधारशिला रखी जा सकती है। जिस समाज में शिक्षा व्यवस्था जैसी होगी, उसी प्रकार के समाज का निर्माण होगा। हमें अगर एक सभ्य समाज का निर्माण करना है तो हमें शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। उद्देश्य ऐसे हों जिन्हें व्यवहारिक रूप से प्राप्त किया जा सके और जो व्यक्ति ,समाज और देश की आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकें। हमारे समाज व व्यक्ति लिए गणित एक अत्यंत उपयोगी विषय है जो शिक्षा के उद्देश्यों में अहम भूमिका निभाता है।

गणित अध्ययन के उद्देश्य –

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

सामान्यतः गणित के निम्न उद्देश्य हैं –

1. गणित की उपयोगिता का उद्देश्य :– गणित एक अत्यन्त उपयोगी विषय है। जब से मनुष्य हमारे सभ्य समाज का प्राणी कहलाने लगा , तभी से गणित की उपयोगिता समझी जाने लगी। आज हर क्षेत्र में गणित की आवश्यकता है। कृषि के क्षेत्र में भी बीजों की नाप तौल, समय की नाप, खेतों की नाप, पैदा होने वाली फसलों की गिनती आदि का जानना कृषक को भी लाभदायक सिद्ध होता है।

इसी प्रकार मेडिकल क्षेत्र में दवा का प्रतिशत भी प्रत्येक गोली अथवा शीशियों पर लिखा रहता है जिससे पता चलता है कि दवा में भिन्न भिन्न तत्व किस मात्रा में है और उन्हीं को देखकर डॉक्टर भी यह बताते हैं कि इस बीमारी को दूर करने के लिए कौन सा तत्व लाभदायक होगा।

व्यापार में भी हिसाब किताब के लिए, क्रय विक्रय के लिए, लेन देन ब्याज, बट्टा , शेयर, बैंक, पोस्ट ऑफिस आदि का संचालन बिना गणित के संभव नहीं हो सकता है।

2 **अनुशासनात्मक उपयोगिता का उद्देश्य** :– इस उद्देश्य से तात्पर्य मानसिक अनुशासन से है। छात्रों में ऐसी आदतों का निर्माण होता है जो अनुशासन के लिए अत्यंत आवश्यक है। गणित अध्ययन से छात्रों में मौलिकता, समय पालन और शुद्धता के गुण विकसित होते हैं।

''हमको बालकों के लिए सुव्यवस्थित चरित्र प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी है। प्रत्येक बालक अच्छा बनना चाहता है परन्तु यह तभी संभव है जब उसे अच्छा मार्ग दर्शक प्राप्त हो जाये।''

3.सांस्कृतिक संरक्षण का उद्देश्य :– व्यक्तियों के अनुभव पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते रहते हैं जो हमारी संस्कृति का संरक्षण करते है। गणित उन्हीं सिद्धांतों और प्रक्रियाओं में मदद कर समाज का विकास करता है।

''गणित हमारी संस्कृति का दर्पण है।''

4.मानसिक और बौद्धिक विकास का उद्देश्य :– गणित में ऐसी बहुत सारी जटिल समस्यायें हैं जिन्हें हल करने में दिमाग लगाना पड़ता है। उन्हें हल खोजने के लिए आपको मानसिक कसरत करनी पड़ेगी। इस प्रकार की समस्याओं के समाधान से छात्रों में तर्कशक्ति तथा मस्तिष्क की सृजनात्मकता का विकास होता है। छात्रों में खोज एवं आविष्कारों की जिज्ञासा प्रबल होती है।

5.आनंद प्राप्ति के उद्देश्य :– गणित की किसी जटिल समस्या को सफलतापूर्वक हल करने पर हृदय को प्रसन्नता मिलती है। गणित की जिन समस्या को हल करने में जितना अधिक परिश्रम करना पड़ता है उस का उत्तर प्राप्त होने पर उतनी ही अधिक खुशी का अनुभव होता है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

6.अन्य विषयों से सम्बन्ध का उद्देश्य :– ''विज्ञान उतना ही यथार्थ है जितना कि वह गणित का प्रयोग करता है।''

विज्ञान ही नहीं बल्कि अन्य विषयों में भी गणित के ज्ञान से बहुत सहायता मिलती है। भूगोल में संसार के मानचित्र को एक पन्ने पर बना देना और प्रत्येक दूरियों का वही अनुपात रखना जो वास्तव में है यह गणित का ही कमाल है। इसी तरह अर्थशास्त्र भी वित्तीय संसाधनों, देश के बजट, घाटा लाभ आदि का हिसाब गणित की सहायता से ही पूरा करता है।

गणित अध्ययन का महत्व – गणित आवश्यक, लाभदायक एवं सामाजिक महत्व से पूर्ण विषय है। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार, ''एक बच्चे को तर्क के आधार पर सोचने, कारण जानने, विवेचन करने और अपनी सोच को बदलने के लिए गणित जैसे महत्वपूर्ण विषय का ज्ञान उसी प्रकार देना चाहिए जैसे कि एक वाहन को प्रकट रूप में दिखाकर उसका प्रयोगात्मक ज्ञान दिया जाना है .... क्योंकि यह विषय विवेचन और तर्क का मुख्य आधार है।

गणित ''परिवर्तन का एक माध्यम है इसका उद्देश्य समाज में 4P की स्थापना करना होना चाहिए –

Prosperity, Plenty, Peace and Progress-'' – Dr- B- S- Verma

गणित का उपयोग सभी व्यक्ति प्रत्येक कदम पर करते हैं। इससे आर्थिक प्रगति का स्तर भी बढ़ता है। गणित द्वारा अर्थव्यवस्था को नयी दिशा मिली है। त्रिकोणमिति, आधुनिक बीजगणित, समुच्चय सिद्धांत, यांत्रिकी एवं टोपोलॉजी आदि गणित की शाखाओं के विकास में गणित का सर्वाधिक योगदान है। कर प्रणाली, बीमा, विदेश–व्यापार एवं आर्थिक सुरक्षा आदि अनेक नवीन विचारों को जन्म गणित के सिद्धांतों के आधार पर ही हुआ है।

गणित की सहायता से समीकरण, लेखाचित्रों का अध्ययन,बीजगणित, रेखागणित के समस्याओं का अध्ययन करते हैं। रेखागणित में संख्याओं आदि के संबंधों के धरातलीय एवं आकाशीय पक्षों का अध्ययन किया जाता है। इसके अध्ययन से छात्रों में तर्कपूर्ण ढंग से सोचने की आदत का विकास होता है।

Unit :– 3.2 Different approaches and techniques of teaching Mathematics - (गणित पढ़ाने के विभिन्न तरीके और तकनीकें)

जिस ढंग से शिक्षक शिक्षार्थी को ज्ञान प्रदान करता है उसे शिक्षण विधि कहते हैं। "शिक्षण विधि" पद का प्रयोग बड़े व्यापक अर्थ में होता है। एक ओर तो इसके अंतर्गत अनेक प्रणालियाँ एवं योजनाएँ सम्मिलित की जाती हैं, दूसरी ओर शिक्षण की बहुत सी प्रक्रियाएँ भी सम्मिलित कर ली जाती हैं।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

1. आगमन विधि (Inductive Method) :– इस विधि में प्रत्यक्ष अनुभवों, उदाहरणों तथा प्रयोगों का अध्ययन कर नियम निकाले जाते है तथा ज्ञात तथ्यों के आधार पर उचित सूझ बुझ से निर्णय लिया जाता हैद्य इसमें शिक्षक छात्रों को अध्ययन

(क). प्रत्यक्ष से प्रमाण की ओर,

(ख). स्थूल से सूक्ष्म की ओर, एवं

(ग). विशिष्ट से सामान्य की ओर

आगमन विधि मे प्रयुक्त चरण (Steps of Inductive Method)–

1.सर्वप्रथम हम एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। (Example)

2.उस उदाहरण का निरीक्षण किया जाता है। (Observation)

3.उस उदाहरण के आधार पर एक नियम बनाया जाता है, जिसे सामान्यीकरण कहा जाता है। (Generalization)

4.उस सामान्य नियम का परीक्षण करके उसका सत्यापन किया जाता है।

आगमन विधि के दोष –

1 समय अधिक लगता है।

2 अधिक परिश्रम और सूझ की आवश्यकता रहती है।

3 एक तरह से अपूर्ण विधि है, क्योंकि खोजे गये नियमों या तथ्यों कीजांच के लिए निगमन विधि की जरूरत होती है।

4 बालक यदि किसी अशुद्ध नियम की प्राप्ति कर ले तो उसे सत्य को प्राप्त करनें में अधिक श्रम व समय की जरूरत होती है।

2. निगमन विधि Deductive Method – इस विधि में पहले से स्थापित नियमों व सूत्रों का प्रयोग करके अध्यापक छात्रों को समस्या का समाधान करना सीखाते हैं।

1 नियम से उदाहरण की ओर

2 सामान्य से विशिष्ट की ओर,

3 सूक्ष्म से स्थूल की ओर. एवं

UP066 USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

4 प्रमाण से प्रत्यक्ष की ओर

निगमन विधि के गुण– Properties of Deductive Method - यह एक सरल और सुविधाजनक विधि है,

1 स्मरणशक्ति के विकास में सहायक है।

2 संक्षिप्त और व्यवहारिक विधि है।

3 बालक तेजी से सीखता है।

निगमन विधि के दोष–

1 रटनें की शक्ति पर बल देती है।

2 निजी विश्लेषण क्षमता का प्रयोग न करनें के कारण मानसिक विकास और कल्पना शक्ति का विकास बाधित होता है।

3 रटा हुआ ज्ञान स्थाई नहीं रह पाता है।

4 छोटी कक्षाओं के लिए सर्वथा अनुपयुक्त विधि

3. विश्लेषण विधि (Analytical Method) :– किसी विधान या व्यवस्थाक्रम की सूक्ष्मता से परीक्षण करने की तथा उसके मूल तत्वों को खोजने की क्रिया को 'विश्लेषण' नाम दिया जाता है।

1 यह विधि अज्ञात से ज्ञात की ओर चलती है।

2 इसका प्रयोग रेखागणित में प्रमेय, निर्मेय आदि को सिद्ध करनें में प्रयुक्त होता है. जैसे – पाइथागोरस का प्रयोग– कर्ण का वर्ग = आधार का वर्ग. लम्ब पर बना वर्ग

विश्लेषण विधि के गुण –

1 यह एक मनोवैज्ञानिक विधि है, जो बालको में जिज्ञासा उत्पन्न कर उनमें अध्ययन के प्रति रूचि उत्पन्न करती है।

2 स्वयं समस्या का समाधान करने ,हल खोजनें पर बल देती है।

3 अन्वेषण क्षमता अर्थात खोज करनें की क्षमता का विकास होता है।

4 स्थाई ज्ञान उत्पन्न होता है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

विश्लेषण विधि के दोष –

1 अधिक समय लेनें वाली विधि है।

2 कुशल अध्यापन की जरूरत होती है।

3 अधिक तर्क शक्ति, सूझ शक्ति की जरूरत होती है।

4 छोटी कक्षा के बालकों के लिए अनुपयोगी मानी जाती है।

4. संश्लेषण विधि Synthesis Method – संश्लेषण का अर्थ होता हैदृ अनेक को एक करना, अर्थात इस विधि में कई विधियों का उपयोग करके समस्या का समाधान करनें पर बल दिया जाता है।

संश्लेषण विधि के गुण – ज्ञात से अज्ञात की ओर ले जाती है, अर्थात ज्ञात नियमो का प्रयोग करके अज्ञात परिणाम की प्राप्ति की जाती है।

उदाहरण – एक वृत्त की त्रिज्या 9 सेमी है, वृत का क्षेत्रफल क्या होगा।

1 सरल और सुविधाजनक विधि मानी जाती है।

2 समस्या का समाधान तीव्रता से संभव है।

3 स्मरणशक्ति के विकास में सहयोग करती है।

4 ज्यादातर गणितीय समस्याओं का समाधान इसी विधि के उपयोग से किया जाता है।

संश्लेषण विधि के दोष –

1 रटनें की प्रवृति पर जोर देती है, जिससे अन्वेषण क्षमता के विकास का मौका उपलब्ध नहीं होता है।

2 नवीन ज्ञान, तार्किक क्षमता और चिन्तन रहित विधि है, अर्थात इनके विकास में सहयोग नहीं करती है।

3 अर्जित ज्ञान अस्थाई होता है, अर्थात जब तक सूत्र याद है तभी तक समस्या का हल निकाला जा सकता है.

4 छोटे बालकों में चिन्तन शक्ति का ह्रास करती है।

UP066 USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

5. प्रयोगशाला विधि (Lab / Laboratory Method) – इस विधि के प्रयोग के लिए हमें एक प्रयोगशाला की जरूरत होती है, जिसमें हम समस्याओं को यांत्रिक तरीकों से हल करते हैं। जैसे – पाइथागोरस प्रमेय को प्रयोगशाला में सिद्ध करना।

प्रयोगशाला विधि के गुण –

1.रूचिकर विधि है।

2.स्थाई अधिगम का स्रोत

3.तर्क क्षमता निगमन क्षमता का विकास होता है।

4.रचनात्मकता का विकास होता है।

प्रयोगशाला विधि के दोष –

1.खर्चीली विधि है।

2.कम संख्या वाली कक्षा के लिए ही उपयोग में लाई जा सकती है।

3.छोटे उम्र के बच्चों में रूचि उत्पन्न नहीं कर पाती है।

6. असंधान विधि Heuristic Method – बोधपूर्वक किये गये प्रयत्न से तथ्यों को संकलित करके सूक्ष्मग्राही तथा विवेचक बुद्धि से उसका अवलोकन या विश्लेषण करके नये तथ्य या सिद्धान्तों की खोज करना ही अनुसंधान विधि है।

7. समस्या समाधान विधि Problem Solving Method – किसी समस्या का समाधान या हल प्राप्त करनें के लिए क्रमबद्ध तरीके से किसी सामान्य विधि या तदर्थ (AD HOC) विधि का प्रयोग करना पड़ता है, समस्या समाधान अधिगम के अन्तर्गत (Learning by solving problem) के अन्तर्गत जीवन में आनें वाली नवीन समस्याओं के तरीको का हल निकालना संभव होता है।

8. प्रयोजन विधि Project Method – इस विधि में किसी भी समस्या के समाधान के लिए छात्र स्वयं किसी भी समस्या का समाधान अपनीं स्वाभाविक तर्कशक्ति के द्वारा जानकारी प्राप्त करता है, तथा उससे अपनें व्यवहार मे परिवर्तन करके समस्या का हल खोजता है। इस विधि में समस्या का हल खोजनें के लिए प्रयोजन पूर्ण कार्य किये जातै है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

9. व्याख्यान विधि Lecture Method – यह विधि शिक्षण की सबसे प्रचलित विधि है, इसमें एक कुशल अध्यापक अपने व्याख्यान द्वारा पूरी कक्षा या एक समूह को उनकी समस्या के समाधान की विधि से परिचित कराता है।

10. विचारदृविमर्श विधि Discussion Method – इस विधि में बालक व अध्यापक अपने तर्कों द्वारा अपनीं समस्याओं को एक दूसरे के अनुभव व ज्ञान के आधार पर सुलझानें का प्रयास करते हैं। गणितशास्त्र की तकनीकों को अधिगम (अध्ययन) को अधिक प्रभावी रूप से सार्थक, रोचक और स्थायी बनाने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

मौखिक अथवा दिमागी कार्य :– गणितशास्त्र में दिमागी कार्य का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस कार्य में केवल दिमाग शामिल होता है, इसलिए इसे दिमागी अथवा मानसिक कार्य कहते हैं।

मौखिक कार्य का महत्व :–

- यह न केवल लिखित कार्य की रीढ़ है, अपितु गणितशास्त्र में पूरा कार्य करती है।
- यह मानसिक सचेतता और त्वरित विचारशक्ति विकसित करती है।
- यह एक अच्छी तकनीक इसलिए है क्योंकि यह सचेतता, दिमागी तत्परता, शीघ्र श्रवणता और विचारशक्ति विकसित करती है।
- शुरूआती चरणों में यह प्रभावी हो सकती है।
- यह कक्षा में अनुशासन बनाए रखने के लिए एक प्रभावी माध्यम है।
- विद्यार्थी को नया ज्ञान देने से किया जा सकता है।
- 'उसके पूर्व ज्ञान का आकलन यह विद्यार्थियों की मुश्किलों और संदेहों का पता लगाने में मददगार है।

मौखिक कार्य के दोष :–

- मौखिक विधि से पढ़ी गई सामग्री को लंबे समय तक याद नहीं रखा जा सकता है।
- सभी समस्याएं मौखिक विधि से हल नहीं की जा सकती हैं।

अभ्यास कार्य :– गणित अमल और अभ्यास का विषय है। इसलिए गणितशास्त्र के अध्ययन में अभ्यास कार्य का एक महत्वपूर्ण स्थान है । अभ्यास की मदद से हम गणितीय सवालों को कम समय में सटीकता से हल कर सकते हैं। अभ्यास कार्य मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित होता है जैसे करके सीखने का सिद्धांत और अभ्यास का सिद्धांत।

अभ्यास कार्य का महत्व :–

- इससे छात्रों में विश्वास और उपबल्धि की भावना का विकास होता है।
- अभ्यास कार्य में सीखी गई चीज को अधिक लंबे समय तक याद रखा जा सकता है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

- नए शिक्षार्थियों के लिए अधिगम की यह तकनीक उचित है। झ इससे गणित के अध्ययन में गति और सटीकता दोनों विकसित होती हैं।
- इस तकनीक की मदद से बच्चे की स्मृति का आकलन किया जा सकता है।

अभ्यास कार्य के दोष :–

- अभ्यास की यह तकनीक सभी विषयों के लिए उपयुक्त नहीं है। झ छात्रों के अच्छे से तैयार नहीं होने पर अभ्यास कार्य प्रभावी नहीं होता है।
- अभ्यास कार्य से कक्षा में विविधान पैदा होता है।

अभ्यास कार्य को प्रभावी कैसे बनाएं :–

- अभ्यास कार्य एक रोचक गतिविधि होनी चाहिए और उसे अरुचिकर और उबाऊ नहीं बनना चाहिए ।
- यह संक्षिप्त और समय के अनुसार बंटी होनी चाहिए।
- इस कार्य में छात्रों को पर्याप्त अवसर और उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए ।

गृह कार्य :– गृह कार्य का अर्थ घर में बच्चे के लिए अध्ययन मौहाल तैयार करना है।

गृह कार्य का महत्व :–

- यह कक्षा शिक्षण को पूरा करता है।
- यह बच्चे के आराम के समय का उपयोग करता है अन्यथा बच्चे इसे बात करने और खेलने में व्यर्थ कर देंगे।
- यह नियमितता और कठोर परिश्रम की आदत विकसित करता है। यह माता–पिता और विद्यालय के मध्य घनिष्ठ संबंध बनाता है।
- यह बच्चों में स्व–अध्ययन की आदत विकसित करता है।

गृहकार्य के दोष :–

- कुछ छात्रों में गृहकार्य तनाव पैदा करता है।
- यह कार्य के लिए उपयुक्त स्थिति प्रदान नहीं करता है।

असाइनमेंट :– असाइनमेंट कक्षा शिक्षण का पूरक है। एक असाइनमेंट विद्यार्थियों को सौंपा गया वह कार्य है जिसे शिक्षक की पसंद अनुसार विद्यालय अथवा घर में पूरा किया जा सकता है।

गणित के असाइनमेंट में दो भिन्न प्रकार की समस्याएं शामिल होती हैं :–

UP066 USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

- पुनरावृत्ति समस्याएं :– नए कार्य के आधार पर।
- समीक्षा समस्याएं :– पिछले विषयों के आधार पर।

असाइनमेंट का महत्व :–

- असाइनमेंट बच्चों के गणित के अध्ययन में परेशानियों को करता है।
- यह छात्रों में विश्वास और उपलब्धि की भावना विकसित करता है।
- यह कक्षा शिक्षण को पूरा करता है।
- यह पूर्व ज्ञान और अनुभव के साथ सहसंबंध बनाता है।
- असाइनमेंट का उद्देश्य छात्रों में प्रयोगात्मक कौशल को बढ़ाना है।

असाइनमेंट के दोष :–

- असाइनमेंट कार्य में कमजोर विद्यार्थी पीछे रह जाते हैं। वे दूसरों के कार्यों की नकल करते हैं।
- असाइनमेंट कार्य में सूचना को खोजने और उसको प्राप्त करने में अधिक समय खर्च होता है।
- शिक्षण की यह तकनीक समय खर्चीली है और प्रक्रिया बोझिल है।

लिखित कार्य :– गणित में सभी कार्य मौखिक रूप से नहीं किए जा सकते हैं। इसलिए मौखिक कार्य को लिखित कार्य से अवश्य पूरा करना चाहिए। यह शिक्षक की अपने छात्रों द्वारा किए गए कार्य की मात्रा जानने में मदद करता है।

लिखित कार्य का महत्व :–

- लिखित कार्य गणित में लंबी समस्याओं को हल करने में सहायक
- यह मौखिक रूप से दिए गए ज्ञान का परीक्षण करने में भी सहायता करता है।
- गणित शिक्षण की इस तकनीक में गलतियों को उचित ढंग से हल किया जा सकता है। यह गलतियां होने की संभावना को कम करता है।
- गणित शिक्षण की यह तकनीक छात्र का मानसिक विकास करने में बहुत सहायक है।

लिखित कार्य के दोष :–

- यह गणित शिक्षण की अधिक समय खर्चीली और मेहनतकश तकनीक है।
- शिक्षण की यह तकनीक नए शिक्षार्थियों के लिए उपयुक्त नहीं है। नए शिक्षार्थी अभ्यास कार्य और मौखिक कार्य के माध्यम से प्रभावी रूप से सीख सकते हैं।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

समूह कार्य :– यह गणित शिक्षण की सबसे महत्वपूर्ण तकनीकों में से एक है। इस तकनीक में, किसी बड़ी कक्षा अथवा समूह को छोटे समूह में उसकी योग्यताओं और रुचि के अनुसार बांट दिया जाता है। इसलिए, समूह के छोटे हो जाने से प्रत्येक छात्र पर खा़स ध्यान दिया जा सकता है।

समूह कार्य का महत्व :–

- समूह छात्रों की बौद्धिकता के स्तर और उपलब्धि के आधार पर बनाया जाना चाहिए। अतः समूह एकसमान होना चाहिए। झ शिक्षण की इस तकनीक में जटिल कार्य को भागों और चरणों में बांटा जाता है।
- समूह कार्य चर्चा और व्याख्या के माध्यम से समझ विकसित करने में मदद करता है।
- यह समूह सदस्यों में प्रतिस्पर्धात्मक सहयोग बनाता है।
- एक गणित का शिक्षक गणित के आंकड़ों का संग्रह करने के लिए इस तकनीक का प्रयोग कर सकता है।

समूह कार्य के दोष :–

- समूह में कार्य करने के दौरान निजी अथवा स्वतंत्र सोच की जगह नहीं होती है।
- समूह कार्य में निर्णय आने में समय लगता है।
- समूह कार्य में व्यक्ति के लिए कार्य से बचना और उसे दूसरों के भरोसे छोड़ना बहुत आसान है।

स्व–अध्ययन :– स्व–अध्ययन में, व्यक्ति स्वयं से अध्ययन करता और सीखता है। इसमें छात्र किसी दूसरे व्यक्ति की सहायता के बिना प्रत्येक समस्या को हल करने की कोशिश करता है।

स्व–अध्ययन का महत्व :–

- गणित शिक्षण की इस तकनीक में बच्चा स्वतंत्र रूप से कार्य अथवा अध्ययन करता है।
- यह छात्र में समस्या हल करने के दृष्टिकोण को विकसित करता है।
- यह खाली समय को प्रयोग करने की सबसे अच्छी विधि है।
- यह छात्रों में विषय के प्रति रुचि विकसित करता है।
- स्व–अध्ययन छात्र की दिमागी क्षमता को बढ़ाता है।

स्व–अध्ययन के दोष :–

- यह तकनीक समय खर्चीली है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

- शिक्षक के अभाव में विषय को समझना मुश्किल हो सकता है।
- स्व अध्ययन में यह निश्चित नहीं होता कि आप सही चीज पढ़ रहे हैं अथवा नहीं।

निरीक्षण अध्ययन :– निरीक्षण अध्ययन में छात्र शिक्षक की उपस्थिति और उसकी प्रत्यक्ष निगरानी में सौंपे गए कार्य का अध्ययन करते हैं। यह तकनीक क्रियाविधि और व्यक्तिगत अंतर के सिद्धांत पर आधारित होती है।

निरीक्षण अध्ययन का महत्व :–

- निरीक्षण अध्ययन छात्रों के स्व–अध्ययन के लिए अध्ययन मौहाल तैयार करती है।
- शिक्षक की उपस्थिति मौहाल को अधिक अनुशासित और कठिन कार्य के अनुकूल बनाती है।
- यह छात्रों पर गृह कार्य का बोझ दूर करती है।

निरीक्षण अध्ययन के दोष :–

- गणित अध्ययन की यह तकनीक शिक्षकों पर अधिक बोझ डालती है और शिक्षकों से अधिक समय और ध्यान की अपेक्षा रखती है। झ इस तकनीक में, अधिक मार्गदर्शन छात्रों की स्वच्छंद सोच और कार्य में हस्तक्षेप पैदा कर सकती है।

समीक्षा अथवा दोहराना :– समीक्षा का अर्थ पुनः देखना है। इसका मुख्य उद्देश्य बेहतर स्मरण रखने के लिए पूर्व के अनुभवों को याद करना है। यह किसी याद सामग्री को दोहराने का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। नए अधिगम में समीक्षा को अवश्य शामिल करना चाहिए।

समीक्षा के उद्देश्य :–

- यह विस्तृत जानकारी की अपेक्षा मुख्य बिंदुओं पर ध्यान केन्द्रित करता है।
- यह पुरानी सामग्री में नयी रुचि विकसित करता है।
- यह नए सोच के तत्वों और व्यवस्था को लाता है।
- इसका मुख्य लक्ष्य सिद्धांत पक्का करना होता है।

ब्रेन स्ट्रोमिंग :– यह कार्य के सामान्यीकरण के आधुनिक सिद्धांत पर आधारित है। गणित शिक्षण की इस तकनीक में, शिक्षक सभी छात्रों को एक समस्या देते हैं। छात्र उस समस्या पर स्वतंत्र रूप से सोचते हैं और उसके बाद वे खुलकर समस्या पर अपने दृष्टिकोण और विचारों को रखते हैं। यह जरूरी नहीं होता है कि छात्र के विचार अर्थपूर्ण हैं अथवा नहीं। शिक्षक छात्रों के दृष्टिकोण लिखता है और निष्कर्ष निकालता है।

ब्रेन स्ट्रोमिंग का महत्व :–

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

- ब्रेन स्ट्रोमिंग व्यक्ति अथवा टीम के रूप में हमारी गहन सोच और समस्या हल करने के कौशल को सुधारता है।
- इस तकनीक में छात्र अधिक विचार और दृष्टिकोण रखने के लिए स्वतंत्र होते हैं।
- यह शिक्षण और अधिगम की एक समस्या उन्मुख तकनीक है। झ यह संज्ञानात्मक और प्रभावशाली उद्देश्यों के उच्चतर स्तर को प्राप्त करने में गहन सोच को प्रोत्साहित करता है।

Unit :– 3.3 Teaching math skills in elementary schools ranging from basic premath and number concepts and computation and applications at elementary school levelusing various techniques (प्राथमिक विद्यालयों में बुनियादी प्रीमैथ और संख्या से लेकर गणित कौशल पढ़ाना विभिन्न का उपयोग करते हुए प्राथमिक विद्यालय स्तर पर अवधारणाएँ और संगणना और अनुप्रयोग TECHNIQUES)

छात्रों की भविष्य की शैक्षणिक सफलता के लिए प्राथमिक विद्यालयों में गणित कौशल पढ़ाना महत्वपूर्ण है। प्राथमिक विद्यालय स्तर पर बुनियादी पूर्व–गणित और संख्या अवधारणाओं, संगणना और अनुप्रयोगों को पढ़ाने के लिए यहां कुछ तकनीकें दी गई हैं:

मैनीपुलेटिव्स : काउंटिंग बियर्स, ब्लॉक्स और बेस टेन ब्लॉक्स जैसे मैनिपुलेटिव्स का उपयोग करने से छात्रों को गणितीय अवधारणाओं की एक ठोस समझ बनाने में मदद मिल सकती है। उदाहरण के लिए, छात्र गिनने और जोड़ने का अभ्यास करने के लिए काउंटिंग बियर का उपयोग कर सकते हैं।

विजुअल एड्स : चार्ट्स, ग्राफ्स और पिक्चर्स जैसे विजुअल एड्स छात्रों को गणितीय अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, संख्या रेखा का उपयोग करने से छात्रों को जोड़ और घटाव की अवधारणा को समझने में मदद मिल सकती है।

प्रायोगिक गतिविधियाँ : हाथों से की जाने वाली गतिविधियाँ, जैसे वस्तुओं को मापना या आकृतियाँ बनाना, छात्रों को गणितीय अवधारणाओं को मूर्त रूप में समझने में मदद कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, छात्र वस्तुओं को मापने और माप की इकाइयों के बारे में जानने के लिए शासकों का उपयोग कर सकते हैं।

खेल और अनुकरण : गणित के खेल और अनुकरण गणित सीखने को मजेदार और आकर्षक बना सकते हैं। उदाहरण के लिए, छात्र ऐसे खेल खेल सकते हैं जो बुनियादी अंकगणितीय संक्रियाओं जैसे जोड़, घटाव, गुणा और भाग का अभ्यास करने में उनकी मदद करते हैं।

वास्तविक जीवन के अनुप्रयोग : गणितीय अवधारणाओं के वास्तविक जीवन के अनुप्रयोगों को प्रदर्शित करने से छात्रों को अपने दैनिक जीवन में गणित की प्रासंगिकता और महत्व को समझने में मदद मिल सकती है। उदाहरण के लिए, छात्र यह सीख सकते हैं कि किसी स्टोर पर वस्तुओं की लागत या उनके द्वारा स्कूल की यात्रा की दूरी की गणना कैसे करें।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

प्रौद्योगिकी : ऑनलाइन गणित के खेल, सिमुलेशन और अनुकूली शिक्षण सॉफ्टवेयर जैसी प्रौद्योगिकी को शामिल करने से छात्रों को अपनी गति से सीखने और उनकी प्रगति पर तत्काल प्रतिक्रिया प्राप्त करने में मदद मिल सकती है।

इन विभिन्न तकनीकों का उपयोग करके, शिक्षक छात्रों को गणितीय कौशल की एक मजबूत नींव और गणित के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाने में मदद कर सकते हैं।

Unit :– 3.4 Application of technology in teaching math in regular elementary schools (नियमित प्रारंभिक विद्यालयों में गणित पढ़ाने में प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग)

प्राथमिक विद्यालयों में गणित पढ़ाने में प्रौद्योगिकी का उपयोग छात्रों, शिक्षकों और समग्र शिक्षण वातावरण को कई लाभ प्रदान कर सकता है। गणित शिक्षा में प्रौद्योगिकी को लागू करने के कुछ तरीकों में शामिल हैं:

इंटरएक्टिव व्हाइटबोर्ड : शिक्षक गणितीय समस्याओं को प्रदर्शित करने और हल करने के लिए इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड का उपयोग कर सकते हैं, जिससे छात्रों को गणितीय अवधारणाओं को अधिक आसानी से देखने और समझने में मदद मिलती है। इंटरएक्टिव व्हाइटबोर्ड डिजिटल उपकरण हैं जो शिक्षकों को गणित की समस्याओं और मॉडलों को बड़ी स्क्रीन पर प्रदर्शित करने की अनुमति देते हैं। शिक्षक लेखनी या अपनी उंगलियों का उपयोग करके बोर्ड पर सामग्री के साथ बातचीत कर सकते हैं। इंटरएक्टिव व्हाइटबोर्ड छात्रों को गणितीय अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद करने के लिए शिक्षकों को वीडियो और एनिमेशन जैसी मल्टीमीडिया सामग्री शामिल करने में सक्षम बनाता है।

ऑनलाइन गणित के खेल और सिमुलेशन : ये उपकरण छात्रों को इंटरैक्टिव और मजेदार गतिविधियों में शामिल करते हैं जो उन्हें अपने गणित कौशल विकसित करने में मदद करते हैं।

अनुकूली शिक्षण सॉफ्टवेयर : यह सॉफ्टवेयर छात्रों को उनके प्रदर्शन के आधार पर गणितीय समस्याओं की कठिनाई के स्तर को समायोजित करके उनकी गति से सीखने में मदद कर सकता है।

डिजिटल पाठ्यपुस्तकें और संसाधन : डिजिटल पाठ्यपुस्तकें और अन्य संसाधन छात्रों को सूचना और संसाधनों की संपत्ति तक पहुंच प्रदान करते हैं जो उन्हें गणितीय अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकते हैं।

मोबाइल ऐप : छात्रों के लिए कई तरह के गणित–केंद्रित मोबाइल ऐप उपलब्ध हैं, जिनमें बुनियादी अंकगणित के खेल से लेकर अधिक उन्नत बीजगणित और कैलकुलस सिमुलेशन शामिल हैं।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

गणित सॉफ्टवेयरः मैथलेटिक्स, मैटिफिक और ड्रीमबॉक्स जैसे मैथ सॉफ्टवेयर, छात्रों के लिए व्यक्तिगत और इंटरैक्टिव गणित पाठ प्रदान करते हैं। वे छात्रों को गणित की समस्याओं का अपनी गति से अभ्यास करने और तत्काल प्रतिक्रिया प्राप्त करने की अनुमति देते हैं। गणित सॉफ्टवेयर भी छात्रों की प्रगति को ट्रैक करता है और शिक्षकों को डेटा प्रदान करता है, जिससे उन्हें छात्रों की ताकत और कमजोरियों की पहचान करने में मदद मिलती है।

ऑनलाइन गणित खेलः ऑनलाइन गणित के खेल छात्रों को गणित सीखने का एक मजेदार और आकर्षक तरीका प्रदान करते हैं। वे छात्रों को गेमिफाइड सेटिंग में गणित की अवधारणाओं का अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। कूलमैथ, मैथ प्लेग्राउंड और हुड्डा मैथ जैसी वेबसाइटें सभी उम्र के छात्रों के लिए मैथ गेम्स की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करती हैं।

टैबलेट और मोबाइल डिवाइसः टैबलेट और मोबाइल डिवाइस, जैसे iPad और Chromebook, गणित पढ़ाने के लिए कक्षाओं में तेजी से उपयोग किए जा रहे हैं। वे छात्रों को गणित ऐप्स, गेम और इंटरैक्टिव पाठ्यपुस्तकों तक पहुंच प्रदान करते हैं। टैबलेट और मोबाइल डिवाइस भी छात्रों को गणित परियोजनाओं में सहयोग करने और अपने साथियों और शिक्षकों के साथ अपना काम साझा करने में सक्षम बनाते हैं।

आभासी और संवर्धित वास्तविकताः आभासी और संवर्धित वास्तविकता (वीआर और एआर) इमर्सिव प्रौद्योगिकियां हैं जो छात्रों को 3डी सीखने का अनुभव प्रदान करती हैं। वीआर और एआर का उपयोग जटिल गणित अवधारणाओं, जैसे कि ज्यामिति और त्रिकोणमिति को पढ़ाने के लिए किया जा सकता है, छात्रों को एक आभासी वातावरण में गणितीय मॉडल के साथ कल्पना करने और बातचीत करने की अनुमति देकर।

अपने शिक्षण में प्रौद्योगिकी को शामिल करके, शिक्षक छात्रों को गणितीय अवधारणाओं की अधिक सहज समझ विकसित करने में मदद कर सकते हैं और उन्हें इंटरैक्टिव सीखने के अनुभवों में शामिल कर सकते हैं जो उन्हें जानकारी को अधिक प्रभावी ढंग से सीखने और बनाए रखने में मदद कर सकते हैं।

Unit :– 3.5 Application of math concepts at elementary level for students with ASD,ID ad SLD-(एएसडी, आईडी और एसएलडी वाले छात्रों के लिए प्रारंभिक स्तर पर गणित की अवधारणाओं का अनुप्रयोग।)

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (एएसडी), बौद्धिक अक्षमता (आईडी), या विशिष्ट सीखने की अक्षमता (एसएलडी) वाले छात्रों को गणित की अवधारणाओं को पढ़ाना कुछ चुनौतियाँ पेश कर सकता है, लेकिन सही दृष्टिकोण के साथ, ये छात्र गणितीय अवधारणाओं को सफलतापूर्वक समझ और लागू कर सकते हैं। इन छात्रों के लिए प्राथमिक स्तर पर गणित की अवधारणाओं को लागू करने के लिए यहां कुछ रणनीतियां दी गई हैं:

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

विजुअल एड्स :– चार्ट्स, ग्राफ्स और पिक्चर्स जैसे विजुअल एड्स का उपयोग करने से इन छात्रों को गणितीय अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिल सकती है। उदाहरण के लिए, भिन्नों का एक दृश्य निरूपण आईडी वाले छात्र को अवधारणा को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकता है।

हैंड्स–ऑन गतिविधियाँ :– हैंड्स–ऑन गतिविधियाँ, जैसे कि वस्तुओं को मापना या ब्लॉकों के साथ संरचनाओं का निर्माण करना, SLD या ID वाले छात्रों को गणितीय अवधारणाओं को मूर्त रूप में समझने में मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए, छात्र ज्यामिति और स्थानिक तर्क का अभ्यास करने के लिए पैटर्न ब्लॉक का उपयोग कर सकते हैं।

सामाजिक कौशल प्रशिक्षण :– गणित पाठ्यक्रम में सामाजिक कौशल प्रशिक्षण को शामिल करने से एएसडी वाले छात्रों को गणितीय अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझने और उनमें भाग लेने में मदद मिल सकती है जिसमें सहयोग या संचार शामिल है, जैसे कि समूह परियोजनाएं।

अनुकूली तकनीक :– सहायक तकनीक जैसे टेक्स्ट–टू–स्पीच सॉफ्टवेयर, वर्ड प्रेडिक्शन सॉफ्टवेयर और वॉयस रिकग्निशन सॉफ्टवेयर एसएलडी या आईडी वाले छात्रों को पाठ्यक्रम तक बेहतर पहुंच बनाने में मदद कर सकते हैं।

कक्षा संरचना में संशोधन :– अधिक संरचित, पूर्वानुमेय दिनचर्या को शामिल करने के लिए कक्षा संरचना को संशोधित करने से एएसडी वाले छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में अधिक सहज और व्यस्त महसूस करने में मदद मिल सकती है। उदाहरण के लिए, नियमित विराम शामिल करने या दृश्य कार्यक्रम का उपयोग करने से इन छात्रों को अपने समय और अपेक्षाओं को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने में मदद मिल सकती है।

इन रणनीतियों का उपयोग करके, शिक्षक एएसडी, आईडी और एसएलडी वाले छात्रों को गणितीय अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझने और लागू करने में मदद कर सकते हैं, जिससे अधिक सकारात्मक और प्रभावी सीखने का अनुभव हो सकता है।

Unit :– 4 Teaching English (अंग्रेजी पढ़ाना)

Unit :– 4.1 Need and importance of including the teaching learning of English in school curriculum-(स्कूली पाठ्यक्रम में अंग्रेजी शिक्षण अधिगम को शामिल करने की आवश्यकता और महत्व।)

अंग्रेजी एक महत्वपूर्ण भाषा है जो संचार, शिक्षा और वाणिज्य के लिए विश्व स्तर पर व्यापक रूप से उपयोग की जाती है। इस प्रकार, अंग्रेजी का शिक्षण और सीखना छात्रों के व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के लिए आवश्यक है। यहां कुछ कारण बताए गए हैं कि स्कूली पाठ्यक्रम में अंग्रेजी पढ़ाना और सीखना क्यों महत्वपूर्ण है:

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

संचार :– अंग्रेजी को वैश्विक भाषा के रूप में व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है और तेजी से वैश्वीकरण की दुनिया में प्रभावी संचार के लिए आवश्यक है। इस प्रकार, विभिन्न संस्कृतियों और पृष्ठभूमि के लोगों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने के लिए छात्रों को अंग्रेजी में कुशल होने की आवश्यकता है।

अंतर्राष्ट्रीय भाषाः अंग्रेजी एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा है जो दुनिया के विभिन्न हिस्सों के लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है। अंग्रेजी सीखकर छात्र दूसरे देशों के लोगों के साथ संवाद कर सकते हैं, विभिन्न संस्कृतियों को समझ सकते हैं और अंतरराष्ट्रीय संबंध बना सकते हैं।

कैरियर के अवसरः आज की वैश्वीकृत दुनिया में, करियर के कई अवसरों के लिए अंग्रेजी में दक्षता की आवश्यकता होती है। अंग्रेजी सीखकर छात्र व्यवसाय, आतिथ्य, मीडिया और प्रौद्योगिकी जैसे विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों के द्वार खोल सकते हैं।

जानकारी हासिल करोः इंटरनेट पर बड़ी मात्रा में जानकारी अंग्रेजी में उपलब्ध है। अंग्रेजी सीखकर, छात्र इस जानकारी तक पहुंच सकते हैं और अपने शोध और अध्ययन के लिए इसका उपयोग कर सकते हैं। वे अंग्रेजी का उपयोग करके विभिन्न देशों के लोगों के साथ संवाद और सहयोग भी कर सकते हैं।

बेहतर संचार कौशलः अंग्रेजी सीखने से छात्रों के संचार कौशल में सुधार हो सकता है, जिससे वे खुद को बेहतर ढंग से अभिव्यक्त कर सकते हैं और व्यक्तिगत और पेशेवर दोनों स्थितियों में प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं। अंग्रेजी भाषा प्रवीणता उनके लेखन, पढ़ने और सुनने के कौशल में भी सुधार कर सकती है।

शैक्षणिक उन्नतिः अंग्रेजी दुनिया भर के कई विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में शिक्षा की भाषा है। अंग्रेजी सीखकर, छात्र प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में अपनी पढ़ाई जारी रख सकते हैं और शैक्षणिक संसाधनों तक पहुंच बना सकते हैं जो उनकी मूल भाषा में उपलब्ध नहीं हैं।

कैरियर में उन्नति :– अंग्रेजी दक्षता अक्सर कई नौकरियों के लिए एक आवश्यकता होती है, विशेष रूप से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में। अंग्रेजी जानने से नौकरी के अवसर बढ़ सकते हैं और करियर में उन्नति में सुधार हो सकता है।

सूचना तक पहुंच :– अंग्रेजी इंटरनेट की प्रमुख भाषा है और व्यापक रूप से शैक्षणिक और व्यावसायिक सेटिंग्स में उपयोग की जाती है। जो छात्र अंग्रेजी में कुशल हैं, उनके पास जानकारी तक अधिक पहुंच है और वे वैश्विक संवाद और सहयोग में अधिक आसानी से भाग ले सकते हैं।

सांस्कृतिक समझ :– अंग्रेजी कई देशों की प्राथमिक भाषा है, और भाषा को समझने से छात्रों को इन देशों की संस्कृतियों और दृष्टिकोणों के बारे में जानकारी मिल सकती है। यह अधिक अंतर–सांस्कृतिक समझ और सहानुभूति को बढ़ावा दे सकता है।

संज्ञानात्मक विकास :– दूसरी भाषा सीखने से संज्ञानात्मक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, जिसमें समस्या को सुलझाने के कौशल में सुधार, रचनात्मकता में वृद्धि और स्मृति और एकाग्रता में सुधार शामिल है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

कुल मिलाकर, अंग्रेजी का शिक्षण और सीखना एक पूर्ण शिक्षा का एक अनिवार्य घटक है। यह छात्रों को प्रभावी ढंग से संवाद करने, अपने करियर में सफल होने और तेजी से वैश्वीकरण की दुनिया में भाग लेने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान प्रदान करता है।

Unit :– 4.2 Teaching English in the elementary classes based on the prescribed curriculum (प्रारंभिक कक्षाओं में निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर अंग्रेजी पढ़ाना)

प्राथमिक कक्षाओं में निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर अंग्रेजी पढ़ाना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन सही दृष्टिकोण और रणनीतियों के साथ, यह अत्यधिक फायदेमंद भी हो सकता है। निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर प्रारंभिक कक्षा में अंग्रेजी पढ़ाने के कुछ तरीके यहां दिए गए हैं:

ऊँची आवाज में पढ़नाः छात्रों को ऊँची आवाज में पढ़ी जाने वाली कहानियों को सुनने और चर्चाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें। यह सुनने और समझने के कौशल को विकसित करने और पढ़ने के प्रति प्रेम को बढ़ावा देने में मदद करेगा।

शब्दावली विकास :– छात्रों को नए शब्दावली शब्दों को संदर्भ में सिखाएं और छात्रों को वाक्यों और लेखन में शब्दों का उपयोग करने का अवसर प्रदान करें।

व्याकरण निर्देश :– लेखन गतिविधियों में व्याकरण निर्देश शामिल करें और छात्रों को व्याकरण की अवधारणाओं का अभ्यास करने और उन्हें लागू करने के अवसर प्रदान करें।

लेखन गतिविधियाँ :– छात्रों को विभिन्न विधाओं में लिखने के लिए प्रोत्साहित करें, जैसे कि कहानियाँ, कविताएँ और रिपोर्टें, और छात्रों को उनके लेखन कौशल में सुधार करने में मदद करने के लिए प्रतिक्रिया और सहायता प्रदान करें।

सहकारी शिक्षण :– छात्रों को एक साथ काम करने और एक दूसरे को सीखने में मदद करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए सामूहिक कार्य और सहकर्मी संपादन जैसी सहकारी शिक्षण रणनीतियों का उपयोग करें।

प्रौद्योगिकी एकीकरण :– छात्रों को अंग्रेजी सीखने के नए और आकर्षक तरीके प्रदान करने के लिए कक्षा में प्रौद्योगिकी को शामिल करें। उदाहरण के लिए, शब्दावली, व्याकरण और लेखन कौशल को सुदृढ़ करने के लिए गेम, वीडियो और इंटरैक्टिव गतिविधियों जैसे ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग करें।

सांस्कृतिक जागरूकता :– पाठ्यक्रम में विभिन्न संस्कृतियों और दृष्टिकोणों से संबंधित विषयों को शामिल करके सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ावा देना। इससे छात्रों को अपने आसपास की दुनिया की विविधता को समझने और उसकी सराहना करने में मदद मिलेगी।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

इन रणनीतियों के संयोजन का उपयोग करके, शिक्षक छात्रों को मजबूत अंग्रेजी भाषा कौशल और सीखने का प्यार बनाने में मदद कर सकते हैं। कुंजी प्रत्येक छात्र की जरूरतों और रुचियों के लिए रचनात्मक, आकर्षक और उत्तरदायी होना है।

Unit :– 4.3 Approaches and techniques of teaching English, use of appropriate TLM- (अंग्रेजी पढ़ाने के दृष्टिकोण और तकनीक, उपयुक्त टीएलएम का उपयोग।)

उपयुक्त शिक्षण और सीखने की सामग्री (टीएलएम) और प्रभावी शिक्षण दृष्टिकोण और तकनीकों के उपयोग के माध्यम से शिक्षण अंग्रेजी को और अधिक प्रभावी और आकर्षक बनाया जा सकता है। यहां कुछ तरीके और तकनीकें दी गई हैं जिनका उपयोग अंग्रेजी पढ़ाने में किया जा सकता है:

कार्य–आधारित भाषा शिक्षण (TBLT) :– यह दृष्टिकोण छात्रों को लक्ष्य भाषा का उपयोग करके वास्तविक जीवन के कार्यों को पूरा करने पर केंद्रित करता है। उदाहरण के लिए, छात्र जोड़े या छोटे समूहों में यात्रा की योजना बनाने या प्रेरक पत्र लिखने के लिए काम कर सकते हैं।

कम्यूनिकेटिव लैंग्वेज टीचिंग (सीएलटी) :– यह दृष्टिकोण प्रामाणिक, संचारी गतिविधियों के उपयोग पर जोर देता है जो छात्रों को वास्तविक जीवन के उद्देश्यों के लिए लक्ष्य भाषा का उपयोग करने में अपना आत्मविश्वास बनाने में मदद करता है।

सहकारी शिक्षण :– सहयोगी शिक्षण रणनीतियाँ जैसे समूह कार्य और सहकर्मी संपादन छात्रों को एक साथ काम करने, टीमवर्क कौशल बनाने और उनकी भाषा सीखने में एक दूसरे का समर्थन करने में मदद करते हैं।

सामग्री–आधारित भाषा निर्देश (सीबीआई) :– यह दृष्टिकोण छात्रों को भाषा कौशल विकसित करने में मदद करने के लिए विषय सामग्री का उपयोग करता है। उदाहरण के लिए, छात्र अंग्रेजी में विज्ञान या सामाजिक अध्ययन विषयों के बारे में सीख सकते हैं।

प्रौद्योगिकी एकीकरण :– कक्षा में प्रौद्योगिकी को शामिल करने से छात्रों को अंग्रेजी सीखने के नए और आकर्षक तरीके मिल सकते हैं, जैसे कि ऑनलाइन गेम, वीडियो और इंटरैक्टिव गतिविधियों के माध्यम से।

बहु–संवेदी निर्देश :– यह दृष्टिकोण भाषा सीखने को सुदृढ़ करने के लिए दृश्य, श्रवण और गतिज (हैंड्स–ऑन) गतिविधियों के संयोजन का उपयोग करता है। उदाहरण के लिए, छात्र एक नई शब्दावली शब्द का प्रतिनिधित्व करने के लिए चित्र बना सकते हैं या संवादात्मक कौशल का अभ्यास करने के लिए संवाद का अभिनय कर सकते हैं।

ग्राफिक आयोजक :– ग्राफिक आयोजक, जैसे माइंड मैप या अवधारणा मानचित्र, छात्रों को भाषा अवधारणाओं के बीच व्यवस्थित करने और संबंध बनाने में मदद कर सकते हैं।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

प्रामाणिक सामग्री :– प्रामाणिक सामग्री जैसे अखबारों, पत्रिकाओं, या अंग्रेजी में वेबसाइटों का उपयोग करने से छात्रों को अपने पढ़ने और समझने के कौशल विकसित करने और लक्ष्य भाषा से अधिक परिचित होने में मदद मिल सकती है।

इन दृष्टिकोणों और तकनीकों के संयोजन का उपयोग करके और उपयुक्त टीएलएम को शामिल करके, शिक्षक अपने छात्रों के लिए आकर्षक और प्रभावी अंग्रेजी भाषा सीखने का अनुभव बना सकते हैं।

Unit :– 4.4 Use of technology in teaching English at elementary level (प्रारंभिक स्तर पर अंग्रेजी पढ़ाने में प्रौद्योगिकी का उपयोग)

प्रारंभिक स्तर पर अंग्रेजी के शिक्षण को बढ़ाने में प्रौद्योगिकी का उपयोग महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यहां कुछ ऐसे तरीके दिए गए हैं, जिनसे अंग्रेजी पढ़ाने में तकनीक का इस्तेमाल किया जा सकता है:

इंटरएक्टिव लर्निंग गेम्स :– इंटरएक्टिव गेम्स का इस्तेमाल शब्दावली, व्याकरण और लेखन कौशल को मजबूत करने के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, छात्र खेल खेल सकते हैं जो उन्हें वर्तनी, विराम चिह्न और वाक्य संरचना का अभ्यास करने में मदद करते हैं।

ऑनलाइन संसाधन :– ऐसे कई ऑनलाइन संसाधन उपलब्ध हैं जो छात्रों को उनके अंग्रेजी कौशल का अभ्यास करने के अवसर प्रदान करते हैं, जैसे पढ़ने, लिखने और सुनने के अभ्यास के लिए वेबसाइटें।

डिजिटल स्टोरीटेलिंग :– छात्र अपने अंग्रेजी भाषा कौशल को शामिल करने वाली डिजिटल कहानियां बनाने के लिए तकनीक का उपयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, वे अपने लेखन को साझा करने या प्रस्तुतियाँ देने के लिए वीडियो, पॉडकास्ट या स्लाइडशो बना सकते हैं।

आभासी क्षेत्र यात्राएं :– प्रौद्योगिकी का उपयोग करके आभासी क्षेत्र यात्राएं की जा सकती हैं, जिससे छात्रों को अंग्रेजी बोलने वाले देशों का पता लगाने और विभिन्न संस्कृतियों के बारे में जानने का मौका मिलता है।

ऑनलाइन चर्चा मंच :– छात्रों को सहयोगी लेखन और बोलने की गतिविधियों में संलग्न करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए ऑनलाइन चर्चा मंचों का उपयोग किया जा सकता है।

स्वचालित प्रतिक्रिया :– छात्रों को उनके लेखन और बोलने के कौशल पर स्वचालित प्रतिक्रिया प्रदान करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा सकता है, जिससे उन्हें सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने और समय के साथ उनकी प्रगति को ट्रैक करने में मदद मिलती है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

वर्चुअल इंग्लिश – स्पीकिंग पार्टनर्सः छात्र दुनिया भर के अंग्रेजी–बोलने वाले भागीदारों के साथ जुड़ने के लिए तकनीक का उपयोग कर सकते हैं, जिससे उन्हें अपने बोलने के कौशल का अभ्यास करने और भाषा का उपयोग करने में अपना आत्मविश्वास बढ़ाने का अवसर मिलता है।

अंग्रेजी भाषा पाठ्यक्रम में प्रौद्योगिकी को शामिल करके, शिक्षक छात्रों को आकर्षक और इंटरैक्टिव सीखने के अनुभव प्रदान कर सकते हैं जो उन्हें अपनी भाषा कौशल बनाने और सीखने के प्यार को बढ़ावा देने में मदद करेगा।

Unit :– 4.5 Teaching English in inclusive class – adaptations for children with ASD, ID –SLD (समावेशी कक्षा में अंग्रेजी पढ़ाना – एएसडी, आईडी और एसएलडी वाले बच्चों के लिए अनुकूलन)

एक समावेशी कक्षा में अंग्रेजी पढ़ाना, जहां ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (एएसडी), बौद्धिक अक्षमता (आईडी) और विशिष्ट सीखने की अक्षमता (एसएलडी) सहित विभिन्न आवश्यकताओं वाले छात्र एक चुनौती हो सकते हैं। हालाँकि, शिक्षण और सीखने के माहौल में अनुकूलन करके, शिक्षक सभी छात्रों के लिए अधिक समावेशी और प्रभावी सीखने का अनुभव बना सकते हैं। यहां कुछ कार्यनीतियां दी गई हैं जिनका उपयोग अंग्रेजी सीखने में एएसडी, आईडी और एसएलडी वाले बच्चों की सहायता के लिए किया जा सकता हैः

विजुअल एड्स :– ग्राफिक ऑर्गनाइजर्स, चार्ट्स और डायग्राम्स जैसे विजुअल एड्स का उपयोग करने से एएसडी और आईडी वाले छात्रों को सिखाई जा रही भाषा अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिल सकती है।

बहु–संवेदी निर्देश :– सीखने की प्रक्रिया में कई इंद्रियों को शामिल करना, जैसे हाथों की गतिविधियों, दृश्य सहायक सामग्री और श्रवण सहायता का उपयोग करना, एसएलडी वाले छात्रों को भाषा अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकता है।

संरचित दिनचया :– भाषा सीखने के लिए एक संरचित दिनचर्या प्रदान करना, जिसमें बदलाव के लिए दिनचर्या का लगातार उपयोग शामिल है, एएसडी वाले छात्रों को सीखने के माहौल में अधिक सहज और आत्मविश्वास महसूस करने में मदद कर सकता है।

दोहराव और अभ्यास :– छात्रों को बार–बार और अलग–अलग तरीकों से भाषा की अवधारणाओं का अभ्यास करने की अनुमति देने से उनकी समझ को मजबूत करने और भाषा का उपयोग करने में उनका आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद मिल सकती है।

प्रौद्योगिकी का उपयोग :– भाषा सीखने की प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी को शामिल करना, जैसे इंटरएक्टिव गेम्स और मल्टीमीडिया संसाधनों के माध्यम से, छात्रों को अपने भाषा कौशल को मजेदार और आकर्षक तरीके से अभ्यास करने के अतिरिक्त अवसर प्रदान कर सकता है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

सहयोगात्मक शिक्षा :– छात्रों को जोड़े या छोटे समूहों में एक साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित करने से उनके सामाजिक और भाषा कौशल का निर्माण करने में मदद मिल सकती है और साथियों के समर्थन और प्रोत्साहन के अवसर मिल सकते हैं।

विभेदित निर्देश :– व्यक्तिगत छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए अलग–अलग निर्देश यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकते हैं कि एएसडी, आईडी और एसएलडी वाले सभी छात्रों को भाग लेने और सीखने के समान अवसर हैं।

अंग्रेजी के शिक्षण में इन रणनीतियों और अनुकूलन को शामिल करके, शिक्षक सभी छात्रों के लिए उनकी क्षमता के स्तर या सीखने की जरूरतों की परवाह किए बिना एक अधिक समावेशी और प्रभावी सीखने का अनुभव बनाने में मदद कर सकते हैं।

Unit :– 5 Teaching of Regional Language (क्षेत्रीय भाषा का शिक्षण)

Unit :– 5.1- Role and importance of teaching regional language in daily life-(दैनिक जीवन में क्षेत्रीय भाषा शिक्षण की भूमिका और महत्व।)

दैनिक जीवन में क्षेत्रीय भाषाओं का शिक्षण कई कारणों से महत्वपूर्ण है:

सांस्कृतिक संरक्षण :– क्षेत्रीय भाषाएँ किसी क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बच्चों को उनकी क्षेत्रीय भाषा सिखाने से वे अपने समुदाय के अनूठे रीति–रिवाजों, परंपराओं और मूल्यों के बारे में सीखते हैं।

भाषा संस्कृति के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान, मूल्यों, विश्वासों और परंपराओं को प्रसारित करने का माध्यम है। यहाँ कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे भाषा संस्कृति को संरक्षित करने में मदद कर सकती है:

मौखिक परंपराएं: मिथकों, किंवदंतियों और लोककथाओं सहित मौखिक परंपराओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक भाषा के माध्यम से पारित किया जाता है। जिस भाषा में इन कहानियों को कहा जाता है, उसे संरक्षित करके हम इन परंपराओं को जीवित रख सकते हैं और उन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचा सकते हैं।

साहित्य: साहित्य, जिसमें कविता, उपन्यास और नाटक शामिल हैं, कई संस्कृतियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जिस भाषा में ये रचनाएँ लिखी गई हैं, उसे संरक्षित करके हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि वे आने वाली पीढ़ियों के लिए सुलभ हों। यह स्थानीय साहित्य और लेखकों की सराहना को बढ़ावा देने में भी मदद करता है।

सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ: संगीत, नृत्य और कला सहित सांस्कृतिक परंपराओं को व्यक्त करने के लिए भाषा एक आवश्यक उपकरण है। जिस भाषा में इन भावों को बनाया और प्रदर्शित किया जाता है, उसे संरक्षित

UP066 USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

करके हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि वे हमारी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बने रहें। यह स्थानीय कलात्मक परंपराओं के संरक्षण को बढ़ावा देने और स्थानीय कलाकारों का समर्थन करने में भी मदद करता है।

पहचानः भाषा हमारी पहचान का एक अनिवार्य हिस्सा है। अपनी मूल भाषा को संरक्षित करके हम अपनी जड़ों और विरासत से जुड़ाव बनाए रख सकते हैं। यह हमें हमारी संस्कृति और उसमें हमारे स्थान को समझने में मदद करता है। यह स्थानीय रीति–रिवाजों और प्रथाओं के संरक्षण को भी बढ़ावा देता है।

समुदायः भाषा समुदायों के लिए एक एकीकृत कारक हो सकती है। किसी विशेष समुदाय द्वारा बोली जाने वाली भाषा को संरक्षित करके, हम अपनेपन और सामुदायिक सामंजस्य की भावना को बढ़ावा दे सकते हैं। यह संस्कृतियों और भाषाओं की विविधता के लिए मान्यता और सम्मान को बढ़ावा देने में भी मदद करता है।

बेहतर संचार :– एक क्षेत्रीय भाषा बोलने से किसी विशेष क्षेत्र में लोगों के बीच संचार को बेहतर बनाने में मदद मिलती है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहां यह अक्सर संचार का प्राथमिक माध्यम होता है।

स्थानीय समुदायों के बीच संचार को बढ़ावा देने में क्षेत्रीय भाषाएँ एक आवश्यक भूमिका निभाती हैं। यहाँ कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे क्षेत्रीय भाषाएँ संचार को बढ़ावा देने में मदद कर सकती हैंः

स्थानीय संदर्भ को समझनाः क्षेत्रीय भाषाएँ व्यक्तियों को स्थानीय संदर्भ को समझने और अपने समुदाय के लोगों के साथ अधिक प्रभावी ढंग से संवाद करने में मदद करती हैं। यह विभिन्न पीढ़ियों के बीच की खाई को पाटने में मदद करता है और आपसी समझ को बढ़ावा देता है।

संबंध बनानाः स्थानीय भाषा बोलकर व्यक्ति अपने पड़ोसियों, दोस्तों और परिवार के सदस्यों के साथ मजबूत संबंध बना सकते हैं। यह अपनेपन की भावना को बढ़ावा देने में मदद करता है और सामुदायिक सामंजस्य को बढ़ावा देता है।

सहायक व्यवसायः स्थानीय व्यवसायों के लिए क्षेत्रीय भाषाएँ आवश्यक हो सकती हैं, क्योंकि यह उन्हें अपने ग्राहकों और आपूर्तिकर्ताओं के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने में सक्षम बनाती हैं। स्थानीय भाषा बोलकर, व्यक्ति स्थानीय व्यवसायों का समर्थन कर सकते हैं और अपने क्षेत्र के आर्थिक विकास में योगदान कर सकते हैं।

सांस्कृतिक आदान–प्रदान बढ़ानाः क्षेत्रीय भाषाएँ विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान की सुविधा प्रदान कर सकती हैं। स्थानीय भाषा बोलने से लोग अन्य संस्कृतियों के रीति–रिवाजों, परंपराओं और मूल्यों के बारे में अधिक जान सकते हैं। यह जीवन के विभिन्न तरीकों की विविधता और समझ को बढ़ावा देता है।

सामाजिक समावेश को बढ़ावा देनाः स्थानीय भाषा बोलकर व्यक्ति सामाजिक समावेश को बढ़ावा दे सकते हैं और अल्पसंख्यक समुदायों के हाशिए पर जाने को कम कर सकते हैं। यह व्यक्तियों को विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के साथ अधिक प्रभावी ढंग से संवाद करने और आपसी सम्मान और समझ को बढ़ावा देने में सक्षम बनाता है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

स्थानीय मुद्दों की बेहतर समझ :– एक क्षेत्रीय भाषा जानने से लोगों को स्थानीय मुद्दों और उनके समुदाय के सामने आने वाली चुनौतियों को समझने में मदद मिल सकती है, जिससे अधिक सूचित निर्णय लेने और समस्या को सुलझाने में मदद मिल सकती है।

पारंपरिक ज्ञानः स्थानीय रीति–रिवाजों, औषधीय पौधों और खेती के तरीकों के ज्ञान सहित पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करने के लिए अक्सर क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग किया जाता है। स्थानीय भाषा बोलकर, व्यक्ति इन पारंपरिक प्रथाओं के बारे में सीख सकते हैं और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि ये भविष्य की पीढ़ियों को हस्तांतरित हो जाएं।

स्थानीय इतिहासः क्षेत्रीय भाषाएँ स्थानीय इतिहास और पिछली पीढ़ियों की कहानियों को संरक्षित करने में मदद करती हैं। स्थानीय भाषा बोलकर, व्यक्ति इस जानकारी तक पहुँच सकते हैं और अपने स्थानीय समुदाय के इतिहास और परंपराओं की गहरी समझ प्राप्त कर सकते हैं।

पर्यावरण ज्ञानः स्थानीय वनस्पतियों और जीवों और पर्यावरण प्रथाओं का वर्णन करने के लिए अक्सर क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग किया जाता है। स्थानीय भाषा बोलकर, व्यक्ति स्थानीय पर्यावरण के बारे में सीख सकते हैं और पीढ़ियों से चली आ रही स्थायी प्रथाओं के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

सांस्कृतिक विरासतः क्षेत्रीय भाषाएं सांस्कृतिक विरासत का एक अनिवार्य हिस्सा हैं। भाषा को संरक्षित करके, व्यक्ति यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि स्थानीय परंपराएं और प्रथाएं भविष्य की पीढ़ियों तक पहुंचें। यह समुदाय के भीतर पहचान और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देने में मदद करता है।

स्थानीय विशेषज्ञताः क्षेत्रीय भाषाओं में अक्सर मछली पकड़ने, कृषि और हस्तशिल्प सहित स्थानीय विशेषज्ञता से संबंधित विशिष्ट शब्दावली होती है। स्थानीय भाषा बोलकर, व्यक्ति स्थानीय विशेषज्ञों के साथ अधिक प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं और उनके ज्ञान और अनुभव से सीख सकते हैं।

रोजगार के बेहतर अवसर :– कुछ क्षेत्रों में, स्थानीय भाषा बोलने से रोजगार के अवसरों में सुधार हो सकता है, विशेषकर पर्यटन जैसे उद्योगों में, जहां स्थानीय समुदायों के साथ बातचीत करना आवश्यक है।

अनुवाद और व्याख्याः यदि आप एक क्षेत्रीय भाषा में धाराप्रवाह हैं, तो आप अनुवादक या दुभाषिया के रूप में काम कर सकते हैं। यह उन व्यवसायों और संगठनों के लिए विशेष रूप से उपयोगी हो सकता है जो उन क्षेत्रों में काम करते हैं जहां आमतौर पर भाषा बोली जाती है।

ग्राहक सेवाः कई व्यवसायों को ग्राहक सेवा प्रतिनिधियों की आवश्यकता होती है जो ग्राहकों के साथ उनकी मूल भाषा में प्रभावी ढंग से संवाद कर सकें। यदि आप एक क्षेत्रीय भाषा बोलते हैं, तो आप उस क्षेत्र में काम करने वाली कंपनियों के लिए ग्राहक सेवा में काम पाने में सक्षम हो सकते हैं।

शिक्षणः यदि आप एक क्षेत्रीय भाषा में धाराप्रवाह हैं, तो आप एक भाषा शिक्षक के रूप में या तो स्कूल में या एक निजी ट्यूटर के रूप में काम पाने में सक्षम हो सकते हैं। यह एक पुरस्कृत करियर हो सकता है जो आपको अपनी भाषा और संस्कृति को दूसरों के साथ साझा करने की अनुमति देता है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

पत्रकारिता और मीडियाः ऐसे क्षेत्रों में जहां आमतौर पर एक क्षेत्रीय भाषा बोली जाती है, वहाँ पत्रकारों और मीडिया पेशेवरों की आवश्यकता हो सकती है जो उस भाषा में प्रभावी ढंग से संवाद कर सकें। यदि आपके पास मजबूत संचार कौशल और भाषा का ज्ञान है, तो आप इस क्षेत्र में काम पाने में सक्षम हो सकते हैं।

सरकारी नौकरियांः ऐसी सरकारी नौकरियां हो सकती हैं जिनके लिए किसी क्षेत्रीय भाषा के ज्ञान की आवश्यकता होती है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहां वह भाषा आमतौर पर बोली जाती है। उदाहरण के लिए, आप किसी ऐसी सरकारी एजेंसी में काम पाने में सक्षम हो सकते हैं जो किसी विशेष क्षेत्र की सेवा करती है।

उन्नत संज्ञानात्मक विकास :– अध्ययनों से पता चला है कि दूसरी भाषा सीखने से संज्ञानात्मक विकास में वृद्धि हो सकती है और समस्या सुलझाने के कौशल में सुधार हो सकता है।

द्विभाषावाद और संज्ञानात्मक लचीलापनः शोध से पता चला है कि क्षेत्रीय भाषा बोलने वालों सहित द्विभाषी व्यक्तियों में मोनोलिंगुअल व्यक्तियों की तुलना में बेहतर संज्ञानात्मक लचीलापन होता है। इसका मतलब है कि वे विभिन्न कार्यों के बीच स्विच करने और रचनात्मक रूप से सोचने में सक्षम हैं।

शब्दावली विकासः एक क्षेत्रीय भाषा सीखने से शब्दावली के विकास में मदद मिल सकती है, क्योंकि यह व्यक्तियों को नए शब्दों और अवधारणाओं से परिचित कराती है। यह प्रारंभिक बचपन के दौरान विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो सकता है जब मस्तिष्क तेजी से विकसित हो रहा होता है।

सांस्कृतिक समझः एक क्षेत्रीय भाषा सीखना भी व्यक्तियों को उस भाषा से जुड़ी संस्कृति की गहरी समझ प्रदान कर सकता है। यह व्यक्तियों को सहानुभूति और अधिक खुले विचारों वाला दृष्टिकोण विकसित करने में मदद कर सकता है, जो संज्ञानात्मक विकास में सहायता कर सकता है।

बेहतर स्मृतिः एक क्षेत्रीय भाषा सीखने से भी स्मृति कौशल में सुधार हो सकता है, क्योंकि व्यक्तियों को उस भाषा से जुड़े नए शब्दों और अवधारणाओं को याद रखना चाहिए।

अंत में, सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, संचार और समझ में सुधार, रोजगार के अवसर पैदा करने और संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देने के लिए दैनिक जीवन में क्षेत्रीय भाषाओं को पढ़ाना महत्वपूर्ण है।

Unit :– 5.2 Approaches and techniques of teaching regional Language based on the prescribed curriculum of elementary classes-(प्रारंभिक कक्षाओं के निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर क्षेत्रीय भाषा शिक्षण के दृष्टिकोण और तकनीक।)

प्राथमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम के भाग के रूप में क्षेत्रीय भाषा को पढ़ाने के लिए कई दृष्टिकोण और तकनीकें इस्तेमाल की जा सकती हैंः

निमज्जन विधि :– इसमें आसपास के छात्रों को लक्ष्य भाषा के साथ शामिल किया जाता है, जैसे कि शिक्षकों द्वारा कक्षा में विशेष रूप से भाषा का उपयोग करना, या लक्षित भाषा में ऑडियो या वीडियो सामग्री प्रदान करना।

टोटल फिजिकल रिस्पांस (TPR) :– यह पद्धति भाषा सीखने को सुदृढ़ करने के लिए शारीरिक गति और क्रिया पर जोर देती है। उदाहरण के लिए, छात्र लक्ष्य भाषा में बातचीत कर सकते हैं, या भाषा में दिए गए आदेशों के जवाब में शारीरिक हलचल कर सकते हैं।

कार्य–आधारित भाषा शिक्षण (टीबीएलटी) :– यह दृष्टिकोण छात्रों को वास्तविक जीवन के उन कार्यों को पूरा करने पर केंद्रित करता है जिनके लिए उन्हें भाषा का उपयोग करने की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, छात्र रोल–प्ले गतिविधि में संलग्न हो सकते हैं, या एक समूह परियोजना में भाग ले सकते हैं जहाँ उन्हें दूसरों के साथ संवाद करने और सहयोग करने के लिए भाषा का उपयोग करना चाहिए।

कहानी सुनाना :– इस तकनीक में छात्रों को भाषा सीखने में मदद करने के लिए कहानियों, दंतकथाओं और अन्य वर्णनात्मक रूपों का उपयोग करना शामिल है। कहानियों के पात्रों, कथानक और विषयों से जुड़कर छात्र नई शब्दावली, व्याकरण संरचना और सांस्कृतिक ज्ञान सीख सकते हैं।

मल्टीमीडिया और प्रौद्योगिकी :– प्रौद्योगिकी और मल्टीमीडिया संसाधनों जैसे वीडियो, ऑडियो रिकॉर्डिंग, इंटरएक्टिव गेम्स और मोबाइल एप्लिकेशन का उपयोग छात्रों को भाषा सीखने के लिए एक आकर्षक और इंटरैक्टिव तरीका प्रदान कर सकता है।

उपयोग किए गए दृष्टिकोण या तकनीक के बावजूद, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि छात्रों के पास लक्षित भाषा में बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने का अभ्यास करने के भरपूर अवसर हों। इसके अतिरिक्त, सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी होना और छात्रों को उनके द्वारा सीखी जाने वाली भाषा से जुड़ी संस्कृति और इतिहास की बारीक समझ प्रदान करना महत्वपूर्ण है।

Unit :– 5.3 Study skills and reference skills (अध्ययन कौशल और संदर्भ कौशल)

अध्ययन कौशल छात्रों द्वारा प्रभावी ढंग से जानकारी को सीखने और बनाए रखने में मदद करने के लिए उपयोग की जाने वाली तकनीकों और विधियों को संदर्भित करता है। कुछ प्रमुख अध्ययन कौशलों में शामिल हैं:

समय प्रबंधन :– प्रभावी समय प्रबंधन आपको अपने अकादमिक और व्यक्तिगत जीवन को संतुलित करने में मदद करता है और यह सुनिश्चित करता है कि आपके पास अध्ययन के लिए पर्याप्त समय है।

सक्रिय शिक्षण :– नोट्स लेकर, प्रश्न पूछकर और कक्षा की चर्चाओं में भाग लेकर सामग्री के साथ जुड़ना आपको जानकारी को बेहतर बनाए रखने में मदद कर सकता है।

नोट लेना :– स्पष्ट, संक्षिप्त और व्यवस्थित नोट्स लेने से आपको सामग्री की समीक्षा करने और परीक्षा की तैयारी करने में मदद मिल सकती है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

याद रखने की तकनीक :– दोहराव, जुड़ाव और विजुअलाइजेशन जैसी तकनीकें जानकारी को अधिक प्रभावी ढंग से याद रखने में आपकी मदद कर सकती हैं।

पढ़ना समझ :– आप जो पढ़ते हैं उसे समझना और जानकारी को याद करने में सक्षम होना अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

दूसरी ओर संदर्भ कौशल, विभिन्न स्रोतों से जानकारी का पता लगाने, मूल्यांकन करने और उपयोग करने की क्षमता को संदर्भित करता है। कुछ प्रमुख संदर्भ कौशल में शामिल हैं:

सूचना साक्षरता :– विभिन्न प्रकार के सूचना स्रोतों को समझना, जैसे किताबें, जर्नल लेख और वेबसाइटें, और उनकी विश्वसनीयता और प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना जानना।

खोज रणनीतियाँ: – खोज इंजन, पुस्तकालय डेटाबेस और अन्य संसाधनों का उपयोग करके प्रभावी ढंग से और कुशलता से जानकारी खोजने में सक्षम होना।

सूत्रों का हवाला देना :– एमएलए या एपीए जैसी विशिष्ट उद्धरण शैली का उपयोग करके स्रोतों को ठीक से उद्धृत करने का तरीका जानना।

स्रोतों पर नजर रखना :– लेखकों, शीर्षकों और प्रकाशन तिथियों सहित आपके द्वारा उपयोग किए जाने वाले स्रोतों पर नजर रखना, आपको साहित्यिक चोरी से बचने में मदद कर सकता है और यह सुनिश्चित कर सकता है कि आप क्रेडिट वहीं दें जहाँ यह देय है।

मजबूत अध्ययन और संदर्भ कौशल विकसित करके, आप एक प्रभावी शिक्षार्थी बन सकते हैं और शैक्षणिक सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

Unit :– 5.4 Language games in teaching language especially with vocabulary and grammar, appropriate use of TLM and technology (शिक्षण भाषा में भाषा के खेल विशेष रूप से शब्दावली और व्याकरण के साथ, टीएलएम और प्रौद्योगिकी का उचित उपयोग)

भाषा के खेल भाषा कक्षा में शब्दावली और व्याकरण पढ़ाने का एक प्रभावी और आकर्षक तरीका हो सकते हैं। वे छात्रों को अपने भाषा कौशल का अभ्यास करने और उन्हें सुदृढ़ करने के लिए एक मजेदार और इंटरैक्टिव तरीका प्रदान करते हैं। कई अलग–अलग प्रकार के भाषा खेल हैं जिनका उपयोग शब्दावली और व्याकरण सिखाने के लिए किया जा सकता है, जैसे:

शब्द साहचर्य खेल :– छात्रों को एक शब्द दिया जाता है और संबंधित शब्दों के साथ या तो लक्ष्य भाषा में या अपनी भाषा में आना होता है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

शब्द अनुमान लगाने का खेल :– छात्र बारी–बारी से बिना कहे किसी शब्द का वर्णन करते हैं, और अन्य छात्र विवरण के आधार पर शब्द का अनुमान लगाने का प्रयास करते हैं।

वाक्य निर्माण खेल :– छात्रों को शब्द या वाक्यांश दिए जाते हैं और उनके साथ व्याकरणिक रूप से सही वाक्य बनाने होते हैं।

व्याकरण क्विज :– छात्र व्याकरण के नियमों और संरचनाओं के बारे में अपने ज्ञान का परीक्षण करने के लिए क्विज ले सकते हैं।

प्रौद्योगिकी और टीएलएम (प्रौद्योगिकी–उन्नत भाषा सीखने की सामग्री) का उपयोग भाषा के खेल को कई तरीकों से बढ़ा सकता है। उदाहरण के लिए, छात्र शब्दावली का अभ्यास करने के लिए डिजिटल फ्लैशकार्ड या इंटरैक्टिव क्विज का उपयोग कर सकते हैं। वे इंटरएक्टिव लैंग्वेज गेम खेलने और अपने भाषा कौशल को मजबूत करने के लिए लैंग्वेज लर्निंग ऐप्स का भी उपयोग कर सकते हैं।

भाषा कक्षा में प्रौद्योगिकी और टीएलएम का उचित उपयोग करना महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे भाषा सीखने में सहायता के लिए इन उपकरणों का उपयोग कर रहे हैं और लक्ष्य भाषा में सार्थक बातचीत और संचार के प्रतिस्थापन के रूप में उन पर निर्भर नहीं हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों को अपने भाषा शिक्षण में प्रौद्योगिकी को शामिल करते समय छात्रों के डिजिटल साक्षरता स्तर और प्रौद्योगिकी तक पहुंच जैसे कारकों पर भी विचार करना चाहिए।

Unit :– 5.5 Facilitating learning regional Language for children with ASD, SLD and ID (एएसडी, एसएलडी और आईडी वाले बच्चों के लिए क्षेत्रीय भाषा सीखने की सुविधा)

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (एएसडी), स्पेसिफिक लैंग्वेज इम्पेयरमेंट (एसएलआई) और बौद्धिक अक्षमता (आईडी) से पीड़ित बच्चों को क्षेत्रीय भाषा सिखाने के लिए आम तौर पर विकासशील बच्चों को पढ़ाने की तुलना में एक अलग दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। यहाँ कुछ रणनीतियाँ हैं जिनका आप उपयोग कर सकते हैं:

दृश्य साधनों का उपयोग करें :– इन अक्षमताओं वाले बच्चों को अक्सर मौखिक जानकारी को संसाधित करने और बनाए रखने में कठिनाई होती है। फ्लैशकार्ड, चित्र या वीडियो जैसे विजुअल एड्स का उपयोग भाषा सीखने को अधिक ठोस और यादगार बनाने में मदद कर सकता है।

दोहराव :– जब भाषा अधिग्रहण की बात आती है तो दोहराव महत्वपूर्ण होता है। बच्चों को शब्दों और वाक्यांशों को कई बार दोहराने के लिए प्रोत्साहित करें जब तक कि वे उन्हें बिना सहायता के कहने में सक्षम न हों।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW

इशारों और हाव–भाव का प्रयोग करें :– इन अक्षमताओं वाले बच्चों को भाषा को समझने और समझने में कठिनाई हो सकती है। इशारों और शरीर की भाषा का उपयोग करने से जो कहा जा रहा है उसे स्पष्ट करने और भाषा को और अधिक ठोस बनाने में मदद मिल सकती है।

संगीत और खेल को शामिल करें :– संगीत और खेल को भाषा सीखने में शामिल करने से यह बच्चे के लिए अधिक आकर्षक और आनंददायक हो सकता है। शब्दावली और व्याकरण को सुदृढ़ करने के लिए गीत, तुकबंदी और खेल का उपयोग किया जा सकता है।

संरचना प्रदान करें :– इन विकलांग बच्चों को अक्सर नई भाषा सीखते समय एक संरचित दिनचर्या होने से लाभ होता है। भाषा सीखने के लिए एक निर्धारित दिनचर्या स्थापित करने से बच्चे को अधिक आत्मविश्वास और सुरक्षित महसूस करने में मदद मिल सकती है।

व्यक्तिगत जरूरतों के अनुकूल :– इन अक्षमताओं वाला प्रत्येक बच्चा अद्वितीय है और सीखने के लिए एक अलग दृष्टिकोण की आवश्यकता हो सकती है। प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत जरूरतों का आकलन करना और उसके अनुसार शिक्षण रणनीतियों को अपनाना महत्वपूर्ण है।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चा अपनी शिक्षा के लिए एक व्यापक और समन्वित दृ ष्टिकोण प्राप्त कर रहा है, अन्य पेशेवरों, जैसे भाषण चिकित्सक या मनोवैज्ञानिकों के साथ मिलकर काम करना भी महत्वपूर्ण है।

UP066-USHA CHARITABLE TRUST LUCKNOW